चकमक

फरवरी-मार्च, 2005 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00





नीतेश खण्डेलवाल, चौथी, देहरादून, उत्तरांचल



तान्या सक्सेना, पहली, भोपाल, म.प्र.

चकमक

वर्ष - 20 अंक -7

फरवरी-मार्च, 2005

क्या-क्या है इस अंक में

विशेष लेख

कहानी

प्रयोग

हर बार की तरह

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा और जनविज्ञान के क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात...

दोस्तो,

फरवरी-मार्च का संयुक्त अंक तुम्हारे हाथों में है। कैसा लगा?
काफी कोशिशों के बावजूद चकमक समय पर नहीं निकल पा रही थी। इस संयुक्त अंक के बाद हमारी कोशिश रहेगी कि हर महीने, चकमक पहले हफ्ते तक तुम्हारे हाथों में पहुँच पाए। इन दिनों तुम परीक्षा की तैयारियों में व्यस्त होगे। शायद इसीलिए ही तुम्हारी रचनाएँ भी कुछ कम आ रही हैं। उम्मीद है तुम परीक्षा के बाद रचनाएँ भेजना शुरू करोगे।

इस बार हम तुम्हारी मुलाकात एक महानगर दिल्ली से करा रहे हैं। अगले कुछ अंकों में भी तुम्हें दिल्ली के बारे में पढ़ने को मिलेगा। अगर तुम या तुम्हारे बड़ों के पास दिल्ली के बारे में कोई मज़ेदार



- पाकेश, पहली, रतनपुर, म.प्र.

जानकारी हो तो जरूर लिखना। इन साठ पन्नों में तुम्हें विविध चीज़ें मिलेंगी। छुईमुई के बारे में कुछ मज़ेदार प्रयोग हैं। जरूर करके देखना। हाँ, अपने अवलोकन भी हमें भेजना। इसके अलावा, प्रयोगशाला में कुछ ऐसी गतिविधियाँ हैं जिनके परिणाम तुम्हें आश्चर्यचकित करेंगे।

पुस्तक अंश में इस बार *समरहिल* नामक किताब के अंश पढ़ोगे। यह किताब दरअसल एक अनूठे स्कूल की कहानी है। इस स्कूल में कोई भी निर्णय बच्चों की भागेदारी के बिना नहीं लिया जाता था। तुम ऐसे स्कूल के बारे में क्या सोचते हो?

उम्मीद है तुम अपनी राय देकर चकमक को बेहतर बनाने में मदद करोगे।

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 20 - अंक-7 फरवरी-मार्च 2005

सम्पादन	वितरण
विनोद रायना	कमल सिंह
अंजलि नरोना	अनिल लोखण्डे
शशि सबलोक	मनोज निगम
टुलटुल विश्वास	**सहयोग**
सुशील शुक्ल	कविता सुरेश
विज्ञान परामर्श	राकेश खत्री
सुशील जोशी	शिवनारायण गौर

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य

ई-7/एचआईजी-453,

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल-462 016 (म.प्र.)

फोन - 2463380

eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ - यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

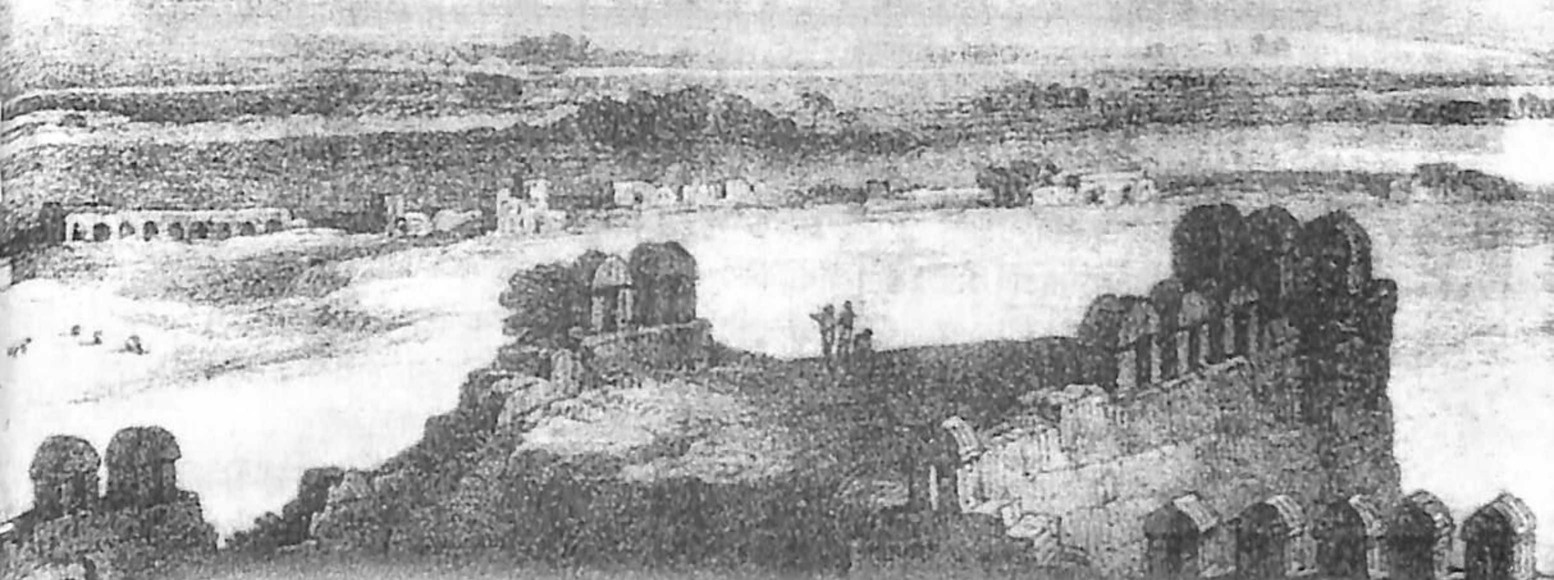
एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

किस्से दिल्ली के...

कुछ अंक पहले चकमक ने तुम्हें भोपाल घुमाया था। इस बार तुम्हें दिल्ली से मिलवाते हैं। दिल्ली को जानने-पढ़ने बैठे तो इतनी मज़ेदार चीज़ें सामने आईं कि एक और किताब तैयार हो जाए। दिल्ली तो ठहरा शहरों का शहर! कई पहलू, कई रंग! ये सब मिलकर दिल्ली बनाते हैं। इतनी बड़ी दिल्ली को एक अंक में समेटना मुश्किल होता। तो इस अंक से शुरू करते हैं। समेटेंगे अगले कुछ अंकों में।



दिल्ली कई मायनों में एक ही शहर नहीं है। लोग मानते भी हैं कि दिल्ली कई शहरों का सिलसिला है। कोई कहता है सात शहर हैं! तो कोई इसे दस या तेरह शहरों का शहर बताता है। बहरहाल इतना तो तय है कि दिल्ली कई बार उजड़ी और बसी। पुराने शहर के मलबे से नया शहर बना। आज दो मुख्य शहर नज़र आते हैं। एक शाहजहाँनाबाद, जिसे मुगल शासक शाहजहाँ द्वारा आबाद किया गया था। शाहजहाँनाबाद में कई पुराने शहर बसे हैं। इसे आज पुरानी दिल्ली कहते हैं। दूसरा शहर है नई दिल्ली! इसे अँग्रेज़ों ने बसाया था। आज तो दिल्ली बहुत फैल गई है। डेढ़ हज़ार वर्ग किलोमीटर का इलाका है। लगभग डेढ़ करोड़ लोग रहते हैं। हज़ारों मोहल्ले हैं। हर मोहल्ले का अपना रंग, अपना ढंग!

दिल्ली अपने देश की राजधानी है। शायद इसलिए देश का हर रंग यहाँ दिखाई देता है। अगर आप दिल्ली के अंतर्राज्यीय बस अड्डे पर जाएँ और वहाँ बसों के ड्राईवर व कंडेक्टर की बातें सुनें तो लगेगा कि दिल्ली हरियाणा वालों की है। नई दिल्ली के चितरंजन पार्क में टहलते हुए दिल्ली बंगालियों की लगेगी। यही दिल्ली आर. के. पुरम जैसे इलाकों में दक्षिण-भारतीय रंग से रंगी लगती है। पुरानी दिल्ली यानी चाँदनी चौक, दरियागंज, अजमेरी गेट पर उत्तरप्रदेश के हलवाइयों और नवाबों की छाप दिखती है। यहाँ दिल्ली अभी भी अपने पुराने रंग में दिखाई देती है।

इस बार हम तुम्हें इतिहास के झरोखे से अलग-अलग लोगों द्वारा लिखे गए किस्सों के कुछ अंश दे रहे हैं। तुम अगर दिल्ली के बारे में कोई मज़ेदार किस्सा जानते हो तो हमें ज़रूर लिखना।

कुतुब की बावड़ी में छलाँग...

यह किस्सा है जान पर खेलकर कुतुब की बावड़ी में छलाँग लगाने का। छलाँग भी पचपन फीट की ऊँचाई से। थॉमस बेकन ने 1831 में ऐसी ही रोंगटे खड़े करने वाली एक छलाँग देखी।

कुतुब में इन मकबरों के प्रवेशद्वार पर एक पुरानी सराय है। उसकी दालान में एक गहरी बावड़ी है। कोई 55 फीट गहरी। ऊँची इमारतों से घिरी। इन इमारतों के रहवासी ज़रा से इनाम के लिए सबसे ऊँची दीवार से इस बावड़ी में छलांग लगाते हैं। रोंगटे खड़ी करने वाली छलाँग। 55 फीट की। दर्शक उसी इमारत के बिलकुल सामने वाली गैलरी में खड़े रहते हैं। पानी से करीब 20 फीट ऊपर। ऊपर देखने पर एक नंगे बदन वाला आदमी दिखा। गुम्बद की गोलाइयों पर रेंगता-सा। उतनी ही आसानी से जैसे कोई मक्खी रेंग सकती है। ताज सरीखी गुम्बद पर पहुँचते ही उसने खुद को उस पर खींच लिया। कुछ सेकण्ड तक एक पैर पर खड़े होकर संतुलन बिठाया। दोनों ओर बाहें पसारीं। फिर गुम्बद से नीचे उतरते हुए एक झटके से वह बीच हवा में कूद गया। नीचे गिरता हुआ। पानी के पास और पास आता। अपने हाथ-पाँवों को पूरी ताकत से हवा में फेंकता। नीचे आता। दर्शकों के पास। फिर नीचे की ओर। नीचे। और नीचे। ऐसे डरावने हाव भाव से... जैसे बहुत तकलीफ में हो। पानी के कुछ फीट ऊपर तक यही हाल रहा। अचानक उसके हाथ-पाँव तन गए। और पैरों से पानी को चीरता हुआ तीर की माफिक वह पानी में गायब हो गया।

छलांग इतनी खतरनाक थी कि मेरी साँस रुक सी गई। ऐन छलाँग के क्षण किसी वजह से श्रीमति सेकविल दूसरी ओर देखने लगीं। मैंने इतनी घबराहट से उस नज़ारे की ओर उनका ध्यान खींचने की कोशिश की कि उनकी बाँह पर मेरी उँगली का निशान कई दिनों तक बना रहा।

पानी के नीचे कुछ सेकण्ड रहने के बाद वह बाहर निकला। बेहद शांत। फिर तैरकर किनारे पर आया। जैसे स्वर्ग-नर्क का उस पर कोई नियंत्रण ही न हो। कहते हैं कि छलाँग लगाने वाले ऐसे कई सारे गोताखोर इन दर्शकों से पाए इनामों से अच्छा-खासा जीवन चलाते हैं। और यह असम्भव भी नहीं लगता। क्योंकि अगर हम किसी बात के लिए राजी खुशी पैसा देते हैं तो यकीनन वह सुन्दर चीज़ के लिए नहीं होता, वह किसी भयानक और अचरज भरी चीज़ के लिए ही होता है।



संगीत का जादू

हिन्दुस्तान की खूबी...है इसका मधुर संगीत। इसकी आग दिलों और रुहों को जलाए रखती है। संगीत दूर पास सभी जगहों से कलाकारों को खींचता है। वे उसे सीखने दौड़ते हैं। लेकिन वह इतना मुश्किल और नाजुक है कि हिन्दुस्तानी संगीत की एक धुन बजा पाने के लिए एक विदेशी के लिए यहाँ 30-40 साल तक रहना भी पर्याप्त नहीं है। ...हिन्दुस्तानी धुनें एक खूबसूरत हिरन को इस कदर सम्मोहित कर देती हैं कि वह सीने में बिंधने वाले तीर के डर के बगैर उस ओर खिंचा चला जाता है। अरब तो नशे से अपने ऊँटों को काबू में करते हैं लेकिन भारत के लोग तो संगीत से ही हिरन का होश-हवास छीन लेते हैं। *(सन् 1318)*

गालिब और दिल्ली कालेज...

गालिब को कौन नहीं जानता। उनके शेर, कविताएँ, ग़ज़लें तुमने सुनी होंगी। एक मस्तमौला, फक्कड़ और आरामतलब शख्स। उनकी अधिकांश ज़िन्दगी दिल्ली में बीती। दिल्ली उन्हें बेहद पसंद भी थी। उनके इसी मिज़ाज पर एक किस्सा बहुत मशहूर है-

1842 में नए नियम-कायदों के साथ दिल्ली कॉलेज का पुनर्गठन किया गया। भारत सरकार के सचिव श्री थॉमसन इंटरव्यू लेने दिल्ली आए। अरबी के एक शिक्षक को 100 रु. महीने की पगार पर रख लिया गया था। अब थॉमसन फारसी के लिए भी ऐसी ही भर्ती करना चाहते थे। इसके लिए गालिब, मोमिन खान और मौलवी इमाम बख्श के नाम सुझाए गए थे। सबसे पहले गालिब को इंटरव्यू के लिए बुलाया गया। वे अपनी पालकी में आए। ... थॉमसन को इसकी खबर भेजी गई। उन्होंने उन्हें तत्काल बुला भेजा। लेकिन गालिब पालकी से उतरकर वहीं खड़े रहे। उनका ख्याल था कि खुद सचिव महोदय बाहर आकर अदब से उनका स्वागत करेंगे। जैसा कि और जगहों पर गालिब के साथ होता था। काफी वक्त बीत गया। जब थॉमसन को पता चला, तो वे बाहर आए और बोले, किसी गवर्नर के दरबार में शिरकत के लिए तो शाही स्वागत ठीक है लेकिन इस मामले में नहीं जब आप नौकरी के लिए आए हैं। गालिब ने जवाब दिया, मैंने सरकारी नौकर बनने का इरादा इस उम्मीद से किया था कि इससे मेरे सम्मान में इज़ाफा होगा, न कि उसमें कटौती होगी। लेकिन मैं नियमों से बँधा हूँ सचिव महोदय बोले। तो फिर मुझे माफ कीजिए। गालिब बोले और लौट गए।

चाँदनी चौक

दिल्ली के मशहूर चाँदनी चौक पर डब्ल्यू.एस. केन का 1898 में लिखा एक किस्सा...

चाँदनी चौक दिल्ली का सबसे मुख्य राजमार्ग। पूरे भारत में इतनी आकर्षक गली न होगी। लगभग 1मील लम्बी और 75 फीट चौड़ी। गली के बीच जाती एक पुरानी नाली। जो अब फुटपाथ की तरह इस्तेमाल होने लगी है। नीम और पीपल के पेड़ों से ढँकी रहती है। दोनों ओर दुकानें और व्यापारियों के बढ़िया घरों से अटी। इन व्यापारियों के दलाल दिल्ली का कलंक हैं। हरेक अजनबी पर ये मक्खियों के झुण्ड की तरह टूट पड़ते हैं। अपने सामान को एक नज़र देखने की ज़बरदस्ती करते हैं। अपने माल की तारीफ और पड़ोसी के लिए भद्दे से भद्दा निन्दा-पुराण एक ही साँस में। ये कीड़े आपको सुबह के पहले ही जगा देते हैं। नाश्ते के वक्त आसपास मंडराते रहते हैं। होटल के दरवाज़ों और बरामदे पर चक्कर काटते रहते हैं। आपकी गाड़ी की सीढ़ियों पर सवारी करते हैं, बीच से कट लेते हैं, और अंततः जब आप फारिग होते हैं और लगता है कि उनसे निजात मिली तो अचानक आप पर पिल पड़ते हैं। शहर छोड़ते वक्त स्टेशन पर एक बार फिर आपको घेर लेते हैं।

किस्सा-ए-कोहीनूर

यह किस्सा 1870 का है। एक रत्न बेचने वाले पेस्टनजी की कहानी। कैसे वह लोगों को फाँसकर अपना कारोबार करते थे।

पेस्टनजी ने बताया कि उनके पास एक चमकदार रत्न है। जिसकी कीमत एक लाख से कुछ ज़्यादा है। उसने खासतौर पर एक नीलम की अँगूठी लेने की सिफारिश की। शायद वह उसे बेचना चाहता था। क्योंकि यह अपने मालिक का भाग्य उदय करती है। कुछ फुटकर हीरों को बेचने की खातिर भी उसने ऐसे ही फँसाऊ तर्क दिए। लेकिन जब उससे कहा गया कि इस पर पैसे लगाना फायदे का सौदा न होगा और वैसे भी एक बूढ़े आदमी के लिए ये किस काम के। उसे तो यह उपहार में मिले तो भी न ले। हाँ कोहिनूर मिले तो और बात होती। इस पर पेस्टनजी पूरी गम्भीरता से बीच में बोल पड़े। साहेब, कोहीनूर तो कभी न लीजिए। अरे बड़ी बुरी किस्मत लाता है यह। अब देखो साहेब! बादशाह नादिरशाह दिल्ली से कोहीनूर फारस ले गया। तो उसकी सेना हार गई। गद्दी तक चली गई जनाब। सब बुरा ही बुरा होता गया। जब तक कि यह बड़ा, बुरा हीरा राजा रणजीत सिंग के पास न पहुँच गया। अब सौभाग्य रणजीत सिंग का साथ छोड़ गया। इंग्लैण्ड ने उसका राज पाट छीन लिया। उसका कोहीनूर भी ले गए। उसे इंग्लैण्ड भेज दिया गया। वहाँ युद्ध हो गया। कोहीनूर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। चाहे कितने ही कैरट कम हो जाएँ। दुर्भाग्य कम नहीं होता। रानी ने उसे एक बार पहना। राजकुमार अल्बर्ट खत्म हो गए। उसके बाद इंग्लैण्ड कभी भी वो पहले जैसा देश न रहा। बरबाद और बरबाद होता गया।

लेकिन अगर तुम्हारे पास यह हो तो तुम उसे बेच सकते हो। और इस पैसे पर पूरा जीवन गुज़ार सकते हो।

न,न साहेब। न, मेरे आका। आवाज़, हावभाव में पूरी गम्भीरता और चिन्ता भरकर वह बोला। अगर वे पेस्टनजी को कोहीनूर देते तो बंदा उसे समन्दर में फेंक देता।

जाति प्रथा...

दिल्ली में जाति को लेकर बहुत ऊँच-नीच है। एक बेहद गर्म दिन की बात है। एक ब्राह्मण पोस्ट मास्टर मुझसे बोले ... पानी पीकर जाइएगा! मैंने यह सोचकर हाँ कर दी कि इंकार से उसे ठेस न पहुँचे। मैं वहीं एक ऊँचे चबूतरे पर बैठ गया। काफी देर तक पानी न आया। इंतज़ार करते-करते थक गया। मैंने पोस्ट मास्टर से कहा भी कि मैं अब निकलता हूँ। पर वह अनसुना करता रहा। हर बार बस अभी आया, बस आया ही समझो कहता रहा। काफी देर बाद पानी का गिलास लिए एक आदमी हड़बड़ाया-सा आया। तब मुझे बताया गया कि आस-पड़ोस से किसी ईसाई को ढूँढ निकालने के लिए एक आदमी को दौड़ाया गया था। कोई भी ऊँची जात का हिन्दू एक फिरंगी को पानी पिलाने को तैयार न था!

एक शर्मीले पौधे से मुलाकात

कुछ पौधे ऐसे होते हैं जिनकी पत्तियाँ दिन में तो खुली होती हैं, मगर रात में बन्द हो जाती हैं। खास तौर से फली वाले पौधों में ऐसा व्यवहार देखने को मिलता है। लेकिन एक पौधा ऐसा भी है जिसकी पत्तियाँ तुम दिन में भी बंद कर सकते हो। हालाँकि थोड़ी देर बाद फिर खुल जाती हैं। क्या तुम इस पौधे का नाम बता सकते हो? इसे लजावनी, लाजवन्ती, छुईमुई या शर्मीली, कई नामों से जाना जाता है।



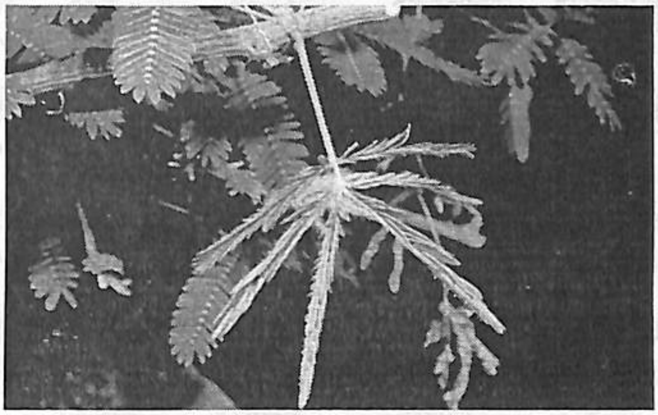
छूने से पहले

अगर तुम्हारे आसपास छुईमुई का पौधा है तो ज़रा इन बातों पर गौर करो। क्या उसकी पत्तियाँ सिर्फ छूने से बन्द होती हैं या कुछ और भी चीजों का असर इन पर होता है? या यूँ कहें कि क्या तुम इन्हें बगैर छुए भी बंद कर सकते हो? छूने से छुईमुई की सिर्फ पत्तियाँ मुड़ती हैं या किसी और हिस्से पर भी फर्क पड़ता है?

शुरूआत पहले सवाल से करते हैं। इसके लिए छुईमुई का एक पौधा तलाश लो। इस पौधे के साथ हम कुछ खेल करेंगे। अपनी पेंसिल-कापी साथ रख लेना, कोई बात समझ न आए तो उसे लिख लेना। इन प्रयोगों को करते वक्त अगर किसी बड़े को साथ ले लोगे तो बेहतर होगा।

शायद तुमने कभी गौर किया हो कि जब भी छुईमुई पर कोई कीड़ा या इल्ली बैठती है तब भी इसकी पत्तियाँ बन्द हो जाती हैं। और तो और हवा के एक झोंके से भी ये पत्तियाँ बन्द हो जाती है। एक फूँक मारकर देख लो। क्या हुआ? अब छुईमुई की पत्तियों के अगले सिरे (छोटी-छोटी पत्तियों) के पास जलती तीली ले जाकर देखो। क्या हुआ? क्या पत्तियों पर कुछ असर पड़ा। क्या यह असर सभी पत्तियों पर एक साथ हुआ?

अच्छा तुमने कभी छुईमुई के पौधे को रात में देखा है? हाँ पत्तियाँ जब भी बन्द होती हैं तो आपस में बन्द होती है। एक दूसरे से सटी भी होती हैं। पर डंठल सीधे तने होते हैं। छूने पर वह भी नीचे झुक जाते हैं।



छूने के बाद

अगले तरीके का असर देखने के लिये तैयार हो जाओ। इसके लिए तुम्हें रेडियो या टेप इस्तेमाल करना होगा। तुम्हें काफी ज़ोर की आवाज़ पैदा करना है। आवाज़ पैदा करने के लिये कोई और तरीका भी इस्तेमाल कर सकते हैं। बस आवाज ज़रा तेज़ होनी चाहिए। हमारे कुछ साथियों ने इसे स्पीकर की मदद से किया था। क्या तेज़ आवाज़ भी छुईमुई पर कुछ असर डालती है? जलती तीली और फिर इस तेज़ आवाज़ से छुईमुई पर पड़ने वाले प्रभावों में क्या फर्क है?

हमें उम्मीद है तुम ये गतिविधियाँ जरूर करोगे। और हाँ अपने अवलोकन हमें लिख भेजना।

- जावेद सिद्दीकी



इस कॉलम से संबंधित कई पत्र हमें मिले। लेकिन एक तो लगभग सभी प्रशंसात्मक पत्र थे। दूसरे, एकाध को छोड़कर बाकी सभी बड़ों द्वारा लिखे गए थे। हमें उम्मीद है आगे से हमारे नन्हें पाठक भी हमें पत्र लिखेंगे।

सबसे सरल माध्यम...

चकमक बाल अभिव्यक्ति का सबसे सरल माध्यम है। चकमक में प्रकाशित बाल रचनाएँ, लेख निश्चित ही अनुकरणीय हैं। जो बाल मन के मनोमस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती हैं। चकमक के माह जनवरी 2005 में प्रकाशित सुनामी लहर से संबंधित जानकारी काफी रोचक तथा तथ्यपरक लगी। वहीं बच्चों के बीच खेले जाने वाले खेल सर्वाधिक उपयोगी हैं। रस्किन बाँड की दिल्ली यात्रा का ज़िक्र रोचक जानकारी से संबंधित था। चकमक में युवाओं की रचनाओं तथा लेखों को प्रकाशित करने का कॉलम भी शुरू किया जाए तो बेहतर होगा।

• रोहित शुक्ला, साँगाखेड़ा खुर्द, होशंगाबाद, म.प्र.

कुछ भीतरी पन्ने रंगीन हों...

अपने नए कलेवर और रंगरूप के साथ चकमक का जनवरी 05 का अंक मिला। सभी बदलावों के लिए हार्दिक बधाई। सबसे पहले *पाठक लिखते हैं* और *जब बच्चे थे मम्मी-पापा* के लिए। मैं एकलव्य के प्रकाशनों स्रोत, संदर्भ, चकमक और अब क्यों और कैसे का गत पाँच-छह वर्षों से पाठक हूँ। संदर्भ को छोड़कर आप अन्य पत्रिकाओं में पाठकों की राय नहीं छापते हैं। और इसलिए कई बार हार्दिक इच्छा होने पर भी पत्र लिखने का मन नहीं करता।

पाठक प्रतिक्रिया छापने के कई फायदे हैं। एक तो यह कि प्रकाशित सामग्री पर अन्य पाठकों की राय जानने को मिलती है। पाठकों की राय को अहमियत दी गई है, इस बात की संतुष्टि मिलती है। रचनाओं की समीक्षा हो जाती है। अगर कोई, पिछला अंक पढ़ने से रह जाता है तो इसी कॉलम के माध्यम से पिछले अंक की अच्छी सामग्री की जानकारी मिलती है।

अलेक्सान्द्र रस्किन की किताब *पापा जब बच्चे थे* बच्चों के बीच कितनी लोकप्रिय हुई। अगर हमारे सुधि पाठक अपने बचपन के संस्मरण बच्चों के बीच बाँटेंगे तो निसंदेह यह कॉलम चकमक के नन्हें पाठकों के लिए बेहद रोचक होगा। पुस्तक अंश में भीष्म साहनी के दोनों संस्मरणों *हुआ यूँ कि*... ने खूब गुदगुदाया। *पहला अध्यापक, अध्यापक के नाम पत्र, तोतोचान* और *पापा जब बच्चे थे* जैसी किताबों के अंश भी आगामी अंकों में देने का प्रयास कीजिएगा।

कहानियों में विविध रंग लाने की आवश्यकता है। अन्यथा लेखक पत्रिकाओं के हिसाब से ही कहानियाँ लिखना शुरू कर देते हैं। *मेरा पन्ना* चकमक का अनूठा प्रयास है। अपनी छपी हुई रचनाएँ बच्चे बीसियों बार पढ़ते हैं। मैं लिख सकता हूँ और मेरा लिखा छप सकता है, का भाव उनमें आत्मविश्वास भरता है। और अपनी अभिव्यक्ति की विशिष्टिता का बोध कराता है। चकमक के कुछ भीतरी पन्ने रंगीन करने का प्रयास कीजिए।

• हेमराज भट्ट बालसखा, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड



हुर्रा.. मेरा पन्ना में मेरी कहानी छपी है। अब छह महीने तक मुझे चकमक मुफ्त में मिलेगी।

एक बार...

एक किसान अपने गधे के साथ पड़ोस के गाँव जा रहा था। किसान के पास कोई सामान नहीं था। इसलिए उसने गधे को आगे-आगे चलने को खुला छोड़ दिया था। गधा बहुत खुश था और खुशी में वह एक खाई की ओर चल दिया। जब किसान की उस पर नज़र पड़ी तो वह पीछे से दौड़ा और खाई में गिरते गधे की पूँछ पकड़ ली। किसान ने पूरी ताकत लगाकर गधे को खाई में गिरने से रोकना चाहा पर उसका बोझ उससे नहीं सँभला। तबं खुद को गिरने से बचाने के लिए उसे गधे की पूँछ छोड़नी पड़ी। नीचे खाई गहरी थी। नीचे गिरकर गधे का कचूमर निकल गया।

- राहुल कनाड़े,
पाँचवीं, सरस्वती शिशु मंदिर, हरदा, म.प्र.



अक्षितारा (पता नहीं लिखा)

पहेलियाँ

A

अन्त कटे तो कौआ बनता,
प्रथम कटे तो हाथी।
कलम से मेरा नाता गहरा,
शिक्षा का मैं साथी।

B

प्रथम दो अक्षर कटे तो,
बन जाती मोटरकार।
अंतिम दो अक्षर कटने पर,
तस्वीर बने दमदार।

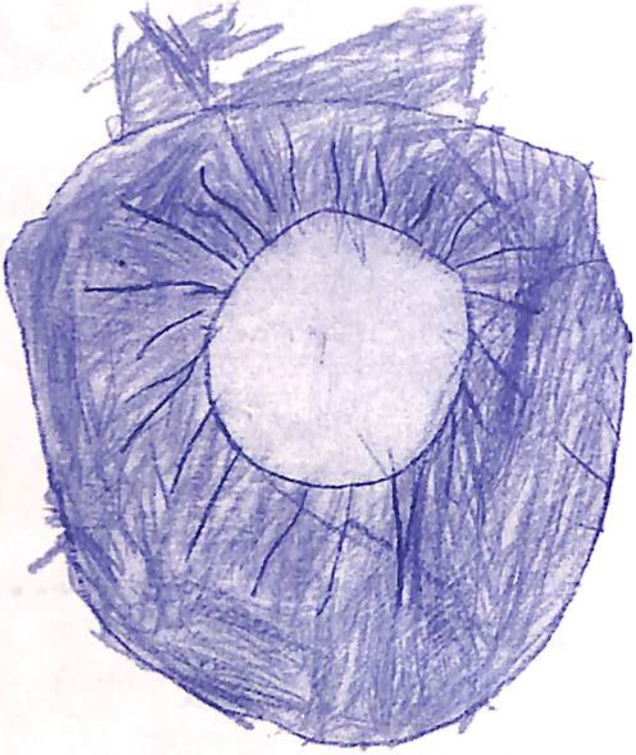
C

कड़ी धूप हो शीत या वर्षा,
मेहनत करता रहता कौन?
जग उसके बल पर जीवित है,
सबके पेट को भरता कौन?

D

पूरे बदन का झेलूँ भार,
संख्या सम की जैसे चार।
बैठोगे फिर बिस्तर पर,
पड़ जाऊँ यदि मैं बीमार।

- प्रदीप पंकज, उदयगंज, लखनऊ, उ.प्र.



शिवम, पहली, भारतीय विद्या भवन स्कूल, भोपाल

ज़रा हँस दो...

तीन लड़के होते हैं। एक का नाम होता है दिमाग, दूसरे का भाग और तीसरे का गधा। एक दिन भाग, भाग जाता है। तो गधा पुलिस थाने जाता है। वह पुलिस से बताता है कि भाग, भाग गया। पुलिस वाला बोलता है कौन भाग गया। वह फिर बोलता है भाग, भाग गया, भाग गया। पुलिस वाला बोलता है, तेरा दिमाग कहाँ है। गधा बोलता है वह बाहर साइकिल चला रहा है।

- अभिनव, चौथी, भोपाल, म.प्र.

मेरा क्या कसूर

अभी-अभी की बात है। मैं कक्षा 9 में पढ़ती थी। मेरे गाँव में सिर्फ 8वीं तक स्कूल है। मैं रोज़ समय पर स्कूल पहुँच जाती थी। मुझे रोज़ बस से जाना पड़ता था। मेरी बस 11 बजे आती थी। और मेरे स्कूल का समय 12.30 था। मैं रोज़ 11.30 पर स्कूल में पहुँच जाती थी और रोज़ पहली डेक्स पर बैठती थी।

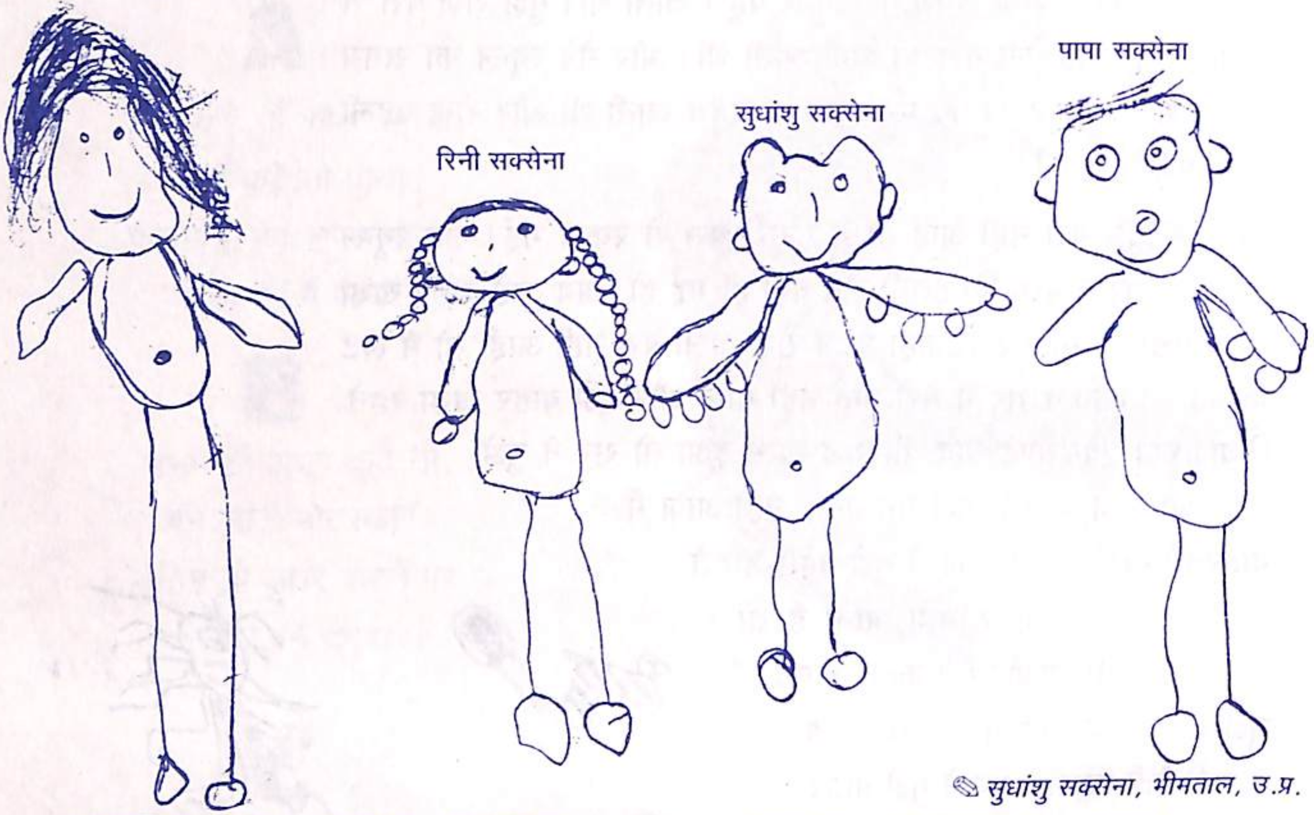
एक दिन बस नहीं आई तो मैं दूसरी बस से स्कूल गई। जब स्कूल पहुँची तो सर ने पूछा कि इतनी लेट क्यों हो गई हो। अब तुम्हें बाहर खड़ा रहना पड़ेगा। मैंने सर से कहा आज रोज़ वाली बस नहीं आई, तो मैं लेट हो गई हूँ। लेकिन सर ने मेरी बात नहीं मानी और मुझे बाहर खड़ा रहने दिया। जब एक घण्टे बाद पीरियड खत्म हुआ तो सर ने मुझे अंदर आने को बोल दिया। मैंने कहा, नहीं आज मैं बाहर ही खड़ी रहूँगी। सर ने मुझे बहुत डाँटते हुए कहा- अगर अंदर नहीं आना है तो अपने घर चली जाओ। मैंने कहा, आपने मुझे अंदर क्यों नहीं आने दिया। अब मैं यही बैठी रहूँगी। सर ने मुझे बाहर घुटना टेक बनने को कहा तो मैंने मना कर दिया। सर ने कहा, कल तुम अपने घर से किसी को लेकर आना। मैंने मना कर दिया। मैं नहीं लाऊँगी। तो उन्होंने कहा आज के बाद तुम कभी मत बोलना। मैंने कहा ठीक है। मैं अब कभी आपसे नहीं बोलूँगी। तो उन्होंने मुझे एक रूल मार दिया तो मुझे बहुत ज़ोर से रोना आ गया। मैं दिनभर स्कूल में रोती रही और शाम को 5 बजे घर आ गई।

- नीरू जैन, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.



आकाश खिंदरी, छह वर्ष, अहमदाबाद

हमारा परिवार

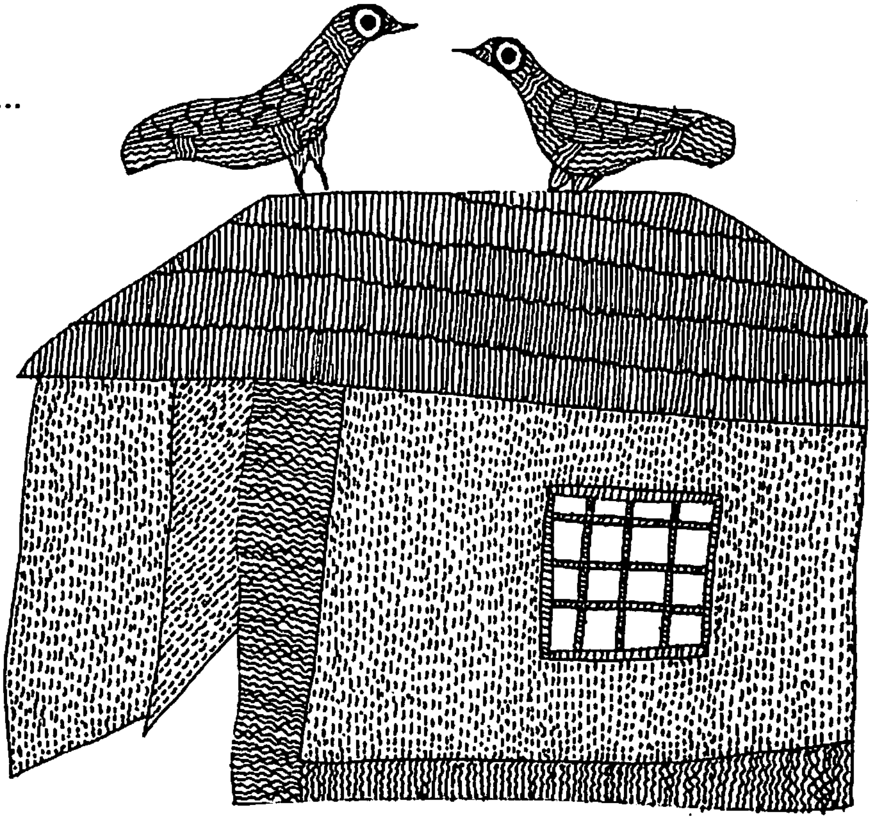


सुधांशु सक्सेना, भीमताल, उ.प्र.

परीक्षा आई

परीक्षा आई, परीक्षा आई
घर में सबने रट लगाई
मम्मी कहे करो पढ़ाई
लेकिन भैया करे लड़ाई
दादाजी कहते कम ही खाना
रात को पढ़ना, सो न जाना
बच्चो मन लगाकर करो पढ़ाई
परीक्षा आई, परीक्षा आई!

- सुनील ज्ञानानी, सातवीं



मोची के जूते



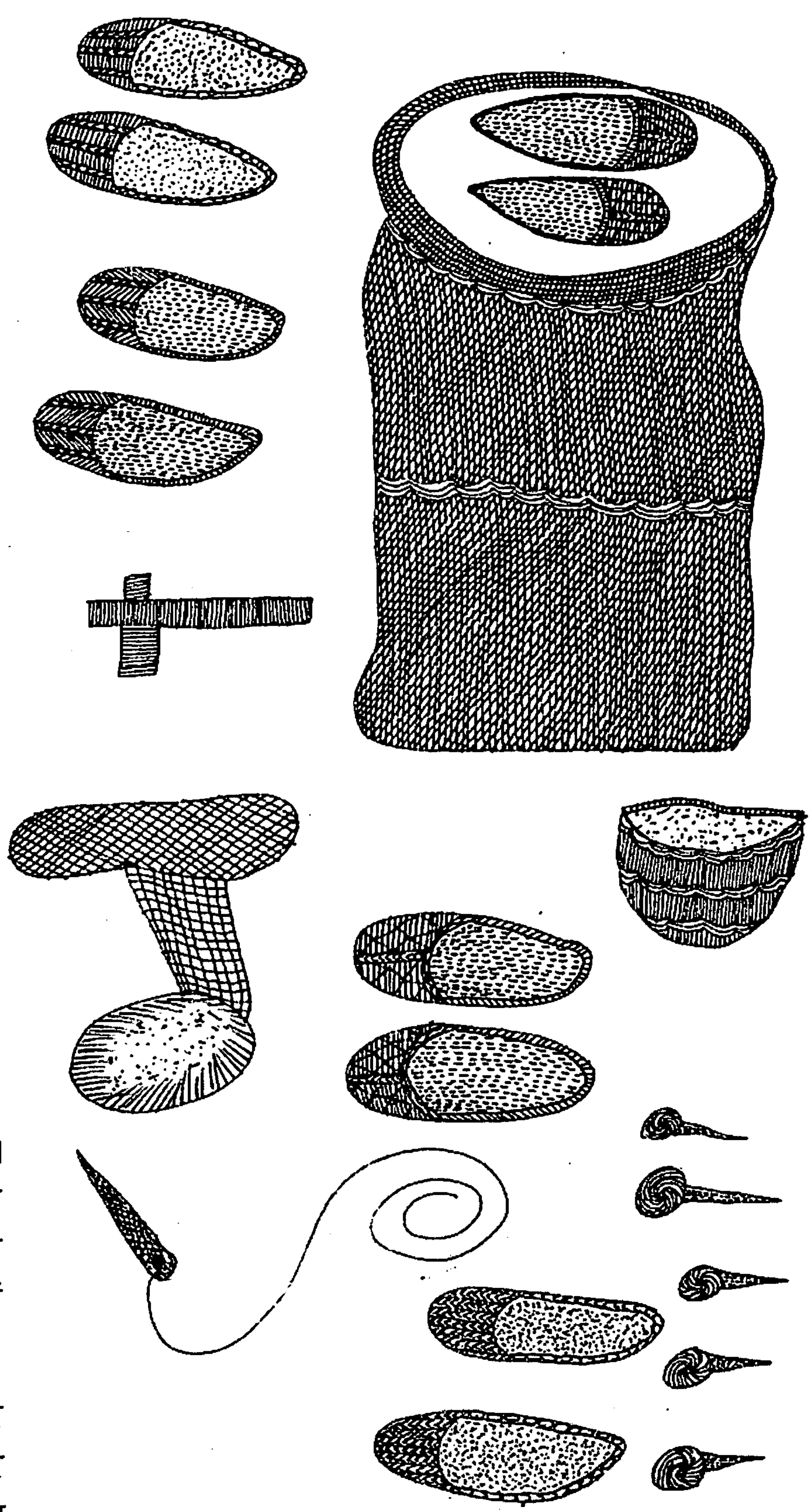
एक बार की बात है। एक शहर में एक मोची बहुत बढ़िया जूते बनाता था। पर सारा दिन मेहनत करने के बावजूद वह दिन पर दिन और गरीब होता जा रहा था। यहाँ तक कि उसके पास एक जोड़ जूतों के अलावा और कुछ नहीं बचा था।

उस शाम उसने आखिरी जोड़ जूतों के लिए चमड़ा काटकर तैयार किया और बड़े करीने से एक बोरे पर सजाकर सो गया। उसने सोचा "मैं कल जल्दी उठूँगा और सुबह ही जूते बेच दूँगा।"

जब वह सबेरे उठा तो उसने देखा कि चमड़े के टुकड़ों का नामोनिशान ही नहीं था। और उनकी जगह एक जोड़ी सुंदर जूते रखे हुए थे। जूते इतने सफाई से सिले हुए थे कि कहीं एक भी टाँका नहीं दिखता था।

मोची हैरान था। सोचने लगा, "आखिर ये जूते आए कहाँ से?" फिर वह उन्हें बेचने निकला। थोड़ी देर में ही एक रईस वहाँ से गुज़रा। उन जूतों की कारीगरी और सुंदरता देखकर बहुत खुश हुआ। उसने मोची से वे जूते उसके दाम से कहीं अधिक पैसे देकर खरीद लिए।

पहले दिन की ही तरह मोची ने फिर चमड़ा काटा। उसे उसी बोरे पर सजाया और सो गया। सुबह जब वह उठा तो देखा कि कटे चमड़े की



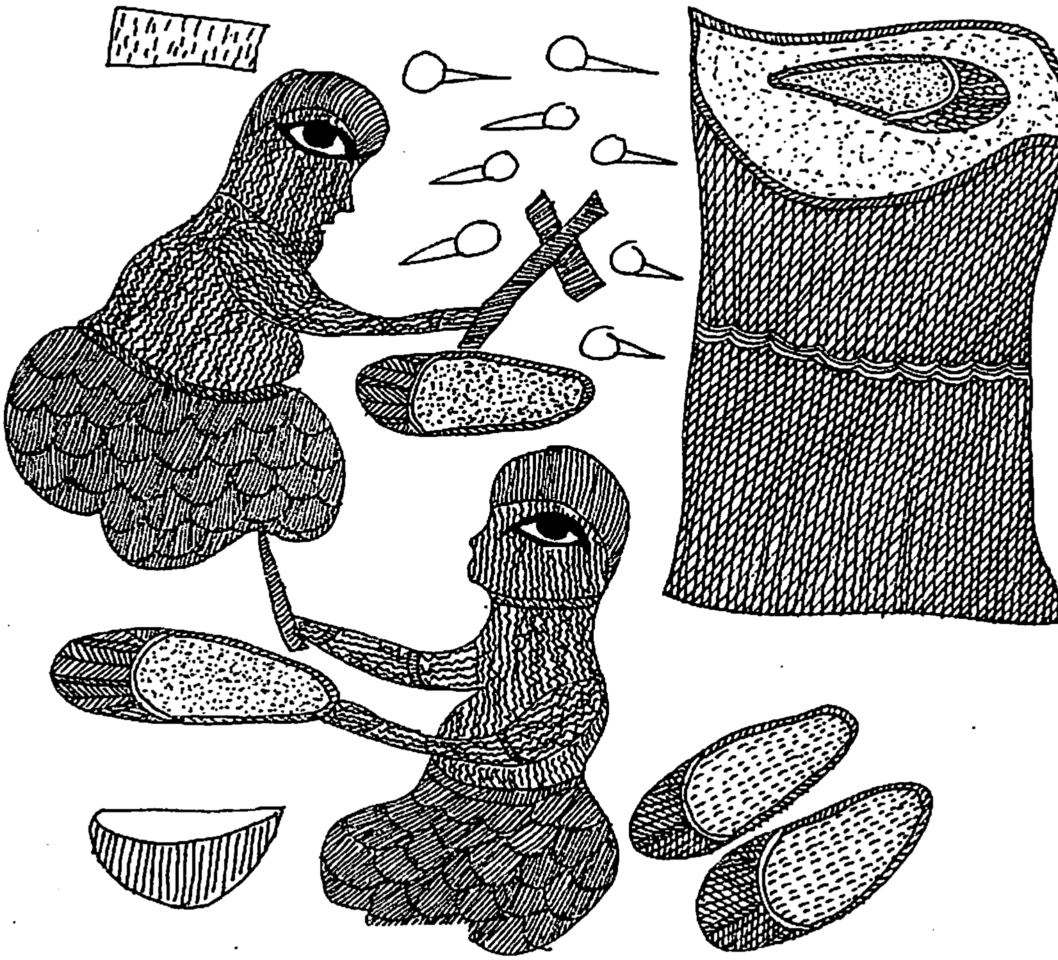
जगह दो जोड़ जूते रखे हैं। उतने ही सुंदर। सुई, सुतली, हथौड़े, कीलें सब ऐसे पड़े थे जैसे कोई अभी-अभी काम करके गया हो। पर वहाँ कौन आया होगा? मोची समझ नहीं पा रहा था। पर वह था बहुत खुश। इस बार भी उसके दोनों जोड़ जूते उम्मीद से कहीं अधिक कीमत पर बिके। उसने इस बार चार जोड़ जूतों के लायक चमड़ा खरीदा।

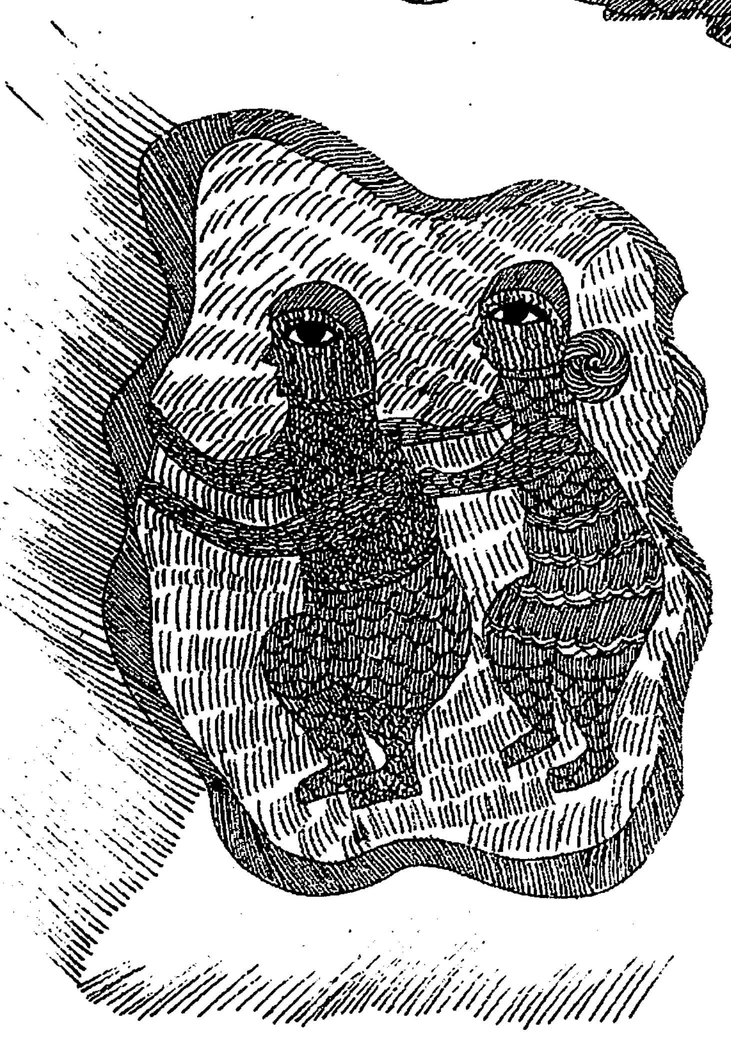
यह सिलसिला चलता रहा। हर रात को वह चमड़ा काटकर रखता। और हर सुबह उसे बढ़िया सिले सिलाए जूते मिल जाते। रोज़ उसके पास ग्राहक आते और अच्छी कीमत पर जूते खरीद ले जाते। वह और ज़्यादा चमड़ा खरीदता। फिर और ज़्यादा जूते बेचता।

वह अब काफी रईस हो गया था। एक सर्द शाम उसने रोज़ की तरह चमड़ा काटा। उसने अपनी पत्नी से कहा, "क्यों न हम आज रात जगकर देखें, आखिर कौन हमारी इतनी मदद कर रहा है।" "हाँ सचमुच! मैं भी जानना चाहूँगी" पत्नी बोली। उन्होंने मेज़ पर एक मोमबत्ती जलाई। और एक कोने में पर्दे के पीछे छिप गए। बहुत रात हो चली थी। मोची और उसकी बीबी साँस थामे इंतज़ार कर रहे थे।

ठीक बारह बजे दो बहुत सुंदर बौने उछलते-कूदते कमरे में दाखिल

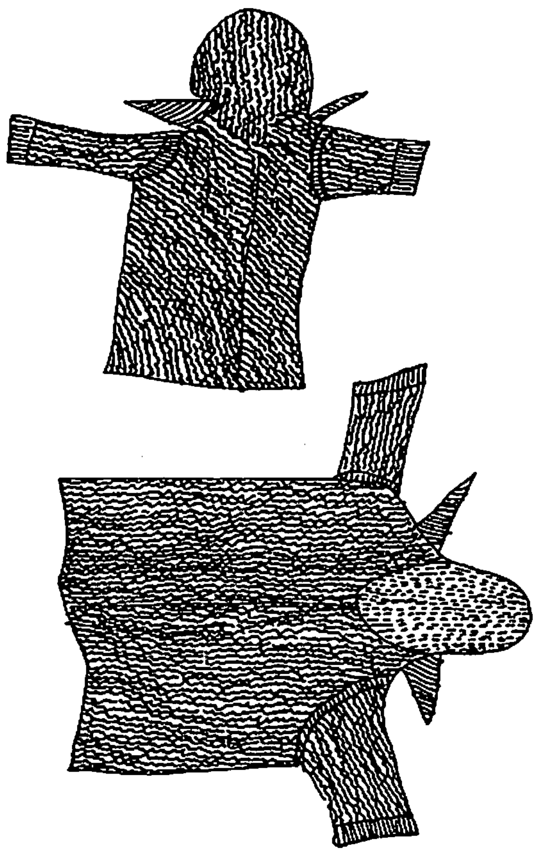






हुए। उनके शरीर पर एक भी कपड़ा नहीं था। वे सर्दी से काँप रहे थे। पर आते ही काम में जुट गए। और जूते बनाने लगे। वे इतनी फुर्ती से काम कर रहे थे कि देखते ही देखते जूता बनकर तैयार हो रहा था। इतनी जल्दी छेदते, सिलते, ठोंकते-पीटते कि मोची और उसकी बीबी को विश्वास ही नहीं हो रहा था। जैसे ही सारा काम खत्म हुआ बौने जैसे आए थे वैसे ही फुदकते हुए बाहर चले गए।

अगले दिन मोची की बीबी ने कहा, "ये लोग हमारे लिए कितना कर रहे हैं। हमें किसी न किसी तरह इनका धन्यवाद देना चाहिए। बेचारे बिल्कुल नंगे घूमते हैं। ठण्ड से अकड़ रहे हैं। इनके लिए मैं कुछ कपड़े बना देती हूँ। और मोजे भी बुन दूँगी। तुम उनके लिए एक-एक जोड़ा जूता क्यों नहीं बनाते हो?" मोची ने खुश होकर हामी भरी।



उस शाम जब सब कुछ तैयार हो चुका था तो उन्होंने चमड़े की जगह सारे तोहफे फैलाकर रख दिए। फिर उसी तरह पर्दों के पीछे बैठकर बौनों का इंतज़ार करने लगे। ठीक बारह बजे बौने आए। और काम करने के लिए पालथी मारकर बैठे। पर वहाँ तो चमड़ा था ही नहीं। उन्होंने सारा कमरा छान मारा। फिर भी चमड़ा नहीं मिला। तब उनकी नज़र मेज़ पर पड़े कपड़ों पर पड़ी। दो नन्हीं कमीज़ें, दो छोटे-छोटे पायजामे, दो गोटेदार टोपियाँ, चार गर्म ऊनी मोज़े और ... अरे यह क्या! चार सुंदर जूते भी। पहले तो वे चकराए, अरे ये सब चीज़ें यहाँ क्यों? पर जब वे समझ गए कि ये सब चीज़ें उनके लिए हैं तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उन्होंनेजल्दी-जल्दी कपड़े उठाए और फटाफट पहनने लगे।



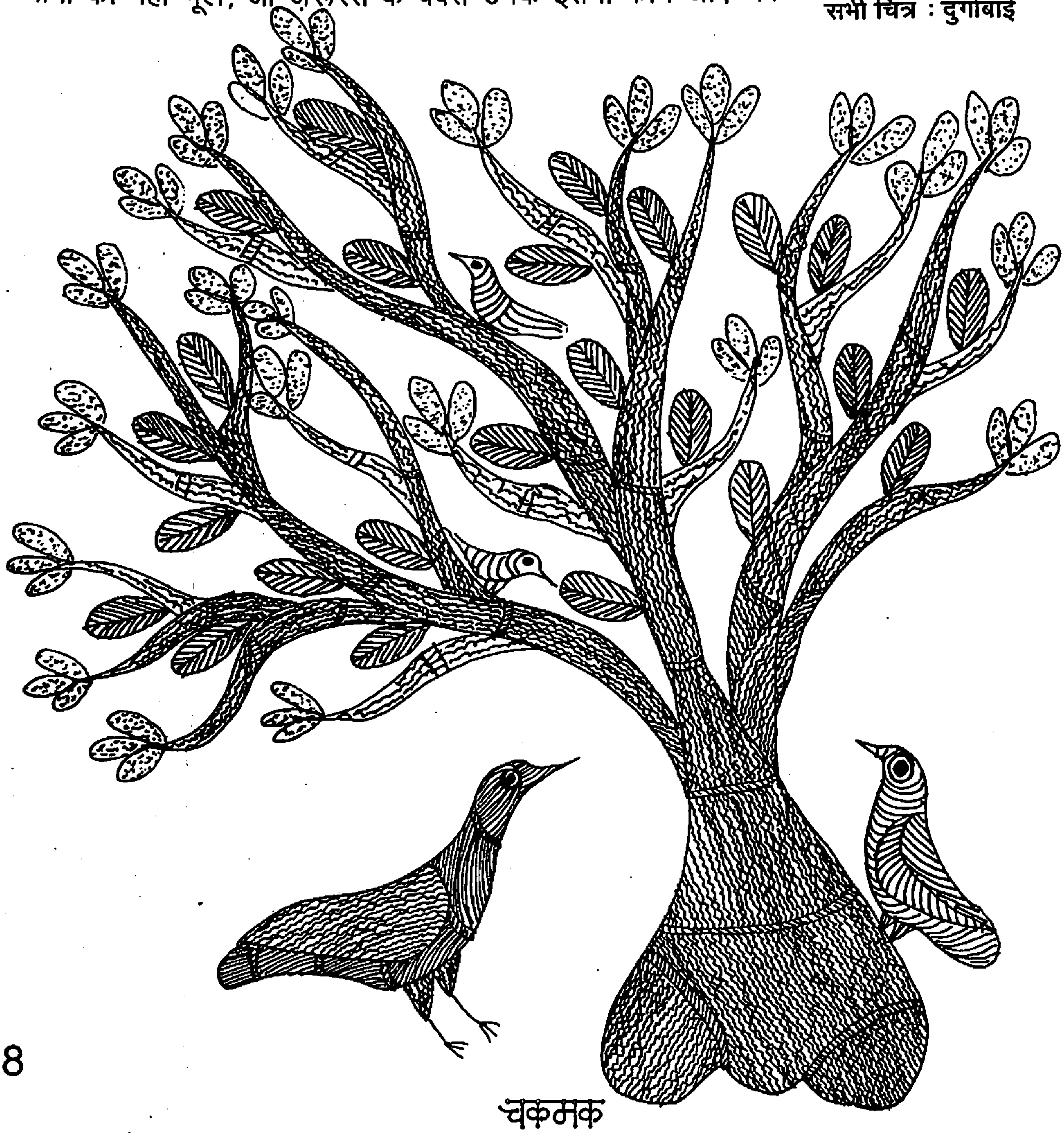
साथ साथ हँसते जाते और गाते जाते...

जब हम साहब बन चुके

तो बोलो फिर क्यों काम करें?

जब वे पूरी तरह सज-धज चुके तो कूदने-फाँदने लगे। कुर्सियों पर चढ़ते अलमारियों में घुसते, मेज़ों पर नाचते। उनकी मस्ती का कोई ठिकाना नहीं रहा। आखिर में हाथ पकड़कर वे चकरी की तरह गोल-गोल घूमने लगे। और घूमते-घूमते दरवाज़े से निकल गए। वे बौने फिर कभी नहीं लौटे। पर मोची और उसकी बीबी की किस्मत कभी नहीं फिरी। वे हमेशा खुश रहे। और कभी उन दो नन्हें बौनों को नहीं भूले, जो ज़रूरत के वक्त उनके इतना काम आए थे।

सभी चित्र : दुर्गाबाई





बाल की ख्याल

बालों को लेकर आज भी कई सारी गुत्थियाँ अनसुलझी हैं। जैसे - बड़े होने पर शरीर के बाल क्यों ज़्यादा होने लगते हैं। जबकि सिर के बल कम होने लगते हैं। या क्यों सिर के सामने के बाल तो कम होने लगते हैं लेकिन पीछे के बालों की छटा बदस्तूर रहती है। होंठ, हथेली, तलुवों पर बाल न होने की वज़ह भी समझ आती है। पर अगर पुरुषों के चेहरे पर बाल उनकी रक्षा के लिए हैं तो फिर क्या महिलाओं को इस रक्षा की ज़रूरत नहीं? इन सवालों का क्या करें? पर जो पता है उसपर तो बात की ही जा सकती है।

बालों के मामले में हम और हमारे पूर्वजों में एक बड़ा अन्तर दिखेगा। कहाँ तो उनका इतना भारी भरकम फर का कोट और कहाँ हम गँगू तेली। उनको ठण्ड से बचाने में और शरीर की रक्षा में वे घने काले-भूरे बाल बहुत काम के थे। बाल तो हमारे भी हैं। पर ठण्ड से बचाने में इनका कोई खास हाथ नहीं। हाँ, शरीर की रक्षा करने वाला मामला तो अब भी नज़र आता है। पलकों के बाल पसीने, धूल आदि को हमारी आँखों में जाने से रोकते हैं। तो नाक और कान के बाल बाहरी चीज़ों का प्रवेश रोकते हैं।

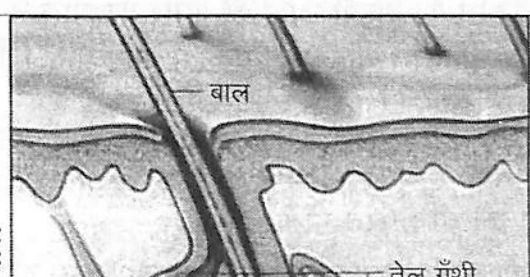
क्या बला है बाल? (त्वचा के अन्दर)

चमड़ी पर उग आने से पहले बाल अंदर ही अंदर काफी सफर तय कर चुके होते हैं। चमड़ी के नीचे जुराब सरीखी एक संरचना होती है। यही है बालों का घर यानी फॉलिकल। इसी के अन्दर बालों की जड़ होती है जिससे वे निकलते हैं। जड़ में बालों को खून की सप्लाई होती है। यहाँ तेज़ी से कोशिकाएँ बनती हैं। जैसे-जैसे नई कोशिकाएँ बनती जाती हैं, पुरानी वाली ऊपर की ओर सरकती जाती हैं। वैसे ही जैसे टूथपेस्ट की ट्यूब को पिचकाने पर होता है। कुछ ऊपर पहुँचने पर इन्हें पोषण मिलना कम हो जाता है। ऐसे में कोशिकाएँ एक कड़ा प्रोटीन - कैराटिन - बनाने लगती हैं। नाखून, पशुओं के खुर, साँप के शल्क और पक्षियों के पँख कैराटिन से ही बनते हैं। कैराटिन बनने पर कोशिकाएँ मर जाती हैं। ये मृत कोशिकाएँ ही बाल हैं। जीव विज्ञान के हिसाब से बाल, नाखून भले ही मृत हों, भले ही इनके कटने-फटने पर हमें दर्द नहीं होता हो, पर ये हमारे जीवित शरीर के हिस्से हैं। बेहद अहम हिस्से। फिर इन्हें मृत कहना कुछ ठीक-सा नहीं लगता। है न।

सुन्दर, चमकदार, मुलायम बालों की चाह शायद सभी को रहती है। हम यानी हमारे शरीर को भी इसका ख्याल है। तभी तो तेल ग्रँथियाँ फॉलिकल में तेल छोड़कर कर इसका पूरा इंतज़ाम कर देती हैं।

काले, भूरे, सूखे या चिपचिपे बाल

जन्म से पहले ही हमारे शरीर के बारे में बहुत कुछ तय हो जाता है। हमारी त्वचा, आँखों के रंग की ही तरह बालों का रंग और रूपरेखा भी तय हो चुकी होती है।



चमड़ी के नीचे का बाल

यहाँ रूपरेखा से हमारा मतलब है बाल सीधे होंगे, घुँघराले होंगे ... आदि। तुमने शायद ध्यान दिया हो कि चीन, जापान, थाईलैण्ड आदि देशों के ज़्यादातर लोगों के बाल एकदम सीधे होते हैं जबकि अफ्रीकी लोगों के बाल बहुत घुँघराले। इसी तरह से हमारी कोशिका में मौजूद एक रंजक से यह तय होता है कि बाल काले होंगे, लाल होंगे या सुनहरे। हम रसायनों से बस थोड़े समय के लिए इनका रंग बदल सकते हैं।

जहाँ तक सूखे और चिपचिपे बालों की बात है तो यह भी कुछ हद तक हमारी तेल ग्रँथियों पर टिका है। हाँ, लेकिन कुछ हद तक ही। बालों की देखभाल के अलावा हमारे खानपान, संतुलित भोजन का भी बालों के दिखने पर काफी असर पड़ता है। बालों की जड़ों पर की गई तेल-मालिश से खून का प्रवाह बढ़ता है। यानी पोषण अधिक मिलता है। वहाँ कुछ गर्मी भी पैदा होती है। खोपड़ी से तेल अन्दर सोखा भी जाता है। मालिश से खोपड़ी पर मौजूद फरास या रुसी निकल जाती है। इस सब से बाल स्वस्थ दिखने लगते हैं। तेल, बालों और खोपड़ी पर एक परत-सी बना देता है। इससे हानिकारक किरणों, धूल-मिट्टी जैसे बाहरी नुकसानों से बचाव होता है।

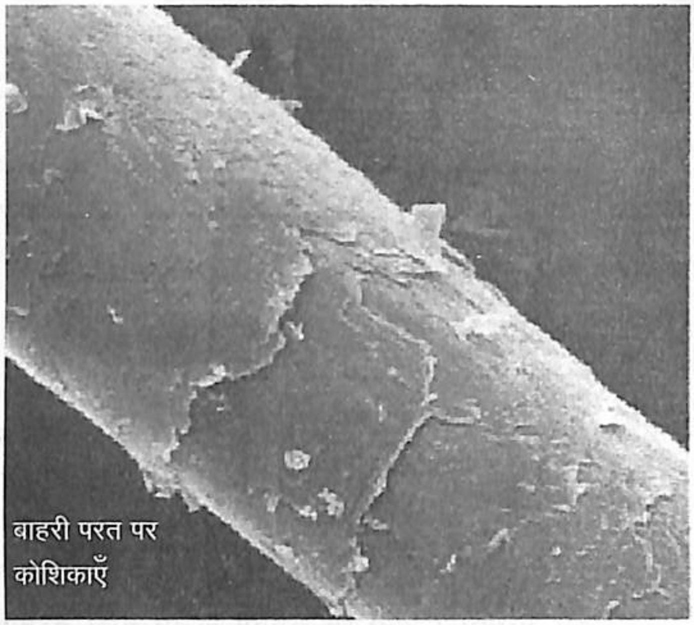
यह सही है कि शैम्पू, तेल का ज़्यादा असर बालों की बाहरी परत और खोपड़ी तक ही ज़्यादा सीमित रहता है। लेकिन यह भी कुछ कम नहीं। बाल एक पेड़ की तरह होते हैं। बाहरी छाल की अगर देखभाल न हो तो अन्दरूनी परतें बाहरी सम्पर्क में आ जाती हैं। और बाल टूट-फूट जाते हैं।

क्या बला है बाल? (त्वचा के बाहर)

बाल की तीन परतें होती हैं।

बाहरी रंगहीन परत : इसमें कई कोशिकाएँ होती हैं। एक दूसरे पर पसरी कोशिकाएँ। वैसे ही जैसे छत पर कवेलू रखे रहते हैं, बाल के सिरों की ओर रुख किए हुए। इसलिए बाल की जड़ों से नीचे की ओर उँगली फेरने पर तो मुलायम लगता है लेकिन निचले सिरों से ऊपर जड़ों की ओर खुरदरा लगता है।

बीच की मोटी परत : इसी में केराटीन और बालों को रंग देने वाला रंजक होता है। बालों को रंगने वाले कुछ पदार्थ यहीं परत में रसायन पहुँचाते हैं। बालों को

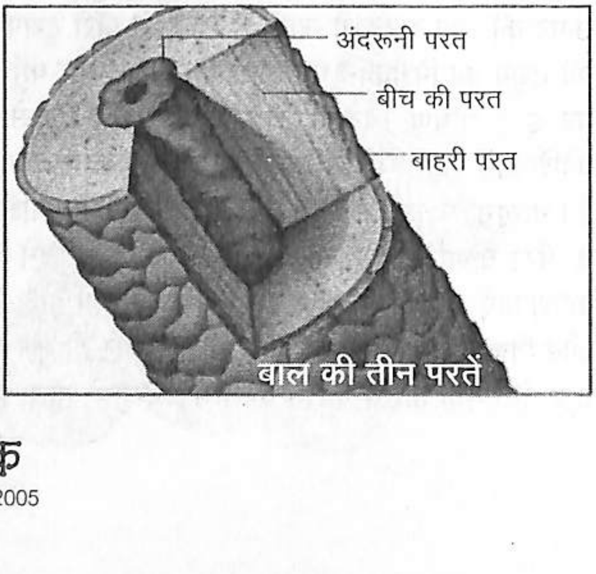

बाहरी परत पर कोशिकाएँ

उनकी लचक भी इसी परत से मिलती है।

सबसे अन्दर वाली परत : यह परत खोखली होती है। इसमें हवा के बुलबुले आ जाने पर और बीच की परत में रंजक कम हो जाने पर बाल सफेद होने लगते हैं। हवा जड़ से बाल में घुसती है। इसे धीरे-धीरे ऊपर की ओर खिसक आने में काफी समय लगता है। इसलिए यह कहते हैं कि फलाँ को इतना धक्का पहुँचा कि रातों-रात उसके बाल सफेद हो गए। ठीक नहीं लगता। लेकिन इतना ज़रूर है कि तनाव जैसी स्थिति का बालों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। और उनके सफेद होने की प्रक्रिया बहुत तेज़ हो जाती है।

बालों का बढ़ना

जंगल की तरह बाल भी दूर से घने दिखाई देते हैं। बीच से गुज़रो तो पुराने मरते, नए फूटते पौधे, छोटे-बड़े पेड़ नज़र आ जाएँगे। बालों को भी ध्यान से देखने



बाल की तीन परतें

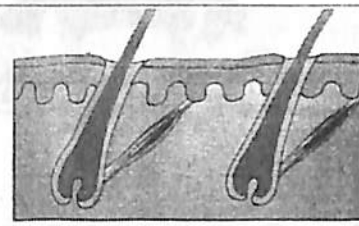
रोंगटे खड़े होना

बाल वाले जानवरों में चमड़ी के नीचे बाल से एक माँसपेशी आकर जुड़ती है। यह बाल की जड़ को खींचकर उसे खड़ा कर देती है। डरे होने पर या ठण्ड लगने पर ऐसा होता है। इसे रोंगटे खड़े होना कहते हैं। बाल खड़े हो जाने पर चमड़ी पर हवा की एक परत सी बन जाती है। और हम जानते हैं कि हवा शरीर की गर्मी को बाहर जाने से और बाहर की ठण्ड को अन्दर आने से रोकती है।

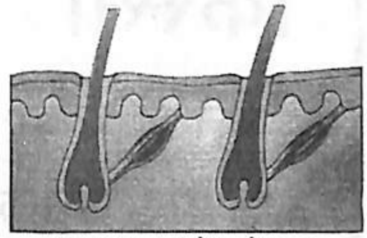
ऐसा हम इंसानों के साथ भी होता है।



डरी हुई बिल्ली के खड़े बालों से उसका आकार बड़ा लगने लगता है।



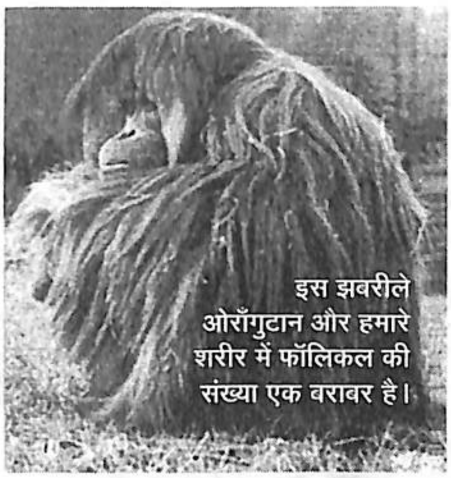
सामान्य बाल



डर या ठण्ड से खड़े बाल

पर हमें हर तरह के बाल दिख जाएँगे।

माँ के गर्भ में दो से पाँच महीने के बीच शरीर में फॉलिकल बनते हैं। हमारे सिर में लगभग 1 लाख फॉलिकल होते हैं। और ये जीवन भर इतने ही बने रहते हैं। अगर किसी बीमारी या किसी और वजह से फॉलिकल खत्म हुआ तो समझो वहाँ का बाल तो गया। हमेशा हमेशा के लिए। यानी गंजापन।



इस झबरीले ओराँगुटान और हमारे शरीर में फॉलिकल की संख्या एक बराबर है।

अलग-अलग फॉलिकल का समय चक्र अलग-अलग होता है। आँख व पलकों के बाल लगभग 10 हफ्ते तक बढ़ते हैं फिर 9 महीने तक आराम करते हैं। पलकों के बाल लगभग 150 दिनों तक जीवित रहते हैं।

बालों की लम्बाई उनके बढ़ने की अवधि की लम्बाई पर निर्भर करती है। हर महीने ये लगभग आधा इंच तक बढ़ते हैं। इन्हें अपनी पूरी लम्बाई तक बढ़ने दिया जाए तो कम ही 3 फीट से ज़्यादा होंगे। लेकिन पढ़ने में आया था कि किसी व्यक्ति के बाल 8 फीट से भी ज़्यादा लम्बे थे। किसी बीमारी से भी बाल असामान्य रूप से बढ़ सकते हैं। कहा जाता है कि 1949 में तंजौर ज़िले के एक स्वामी जी के बाल 26 फीट लम्बे थे। वे एक बीमारी से पीड़ित थे। रोग, मानसिक आधात आदि से बाल कम भी होने लगते हैं।

कंधी करते वक्त बालों का टूटना हमें अक्सर परेशान कर जाता है। लेकिन इसमें घबराने की कोई बात नहीं। रोज़ 70-80 बालों का गिरना सामान्य बात है। ऐसा इसलिए क्योंकि फॉलिकल में बाल विभिन्न चरणों से गुज़रते हैं। शुरू में बाल तेज़ी से बढ़ते हैं। लगभग 2 से 6 साल तक ये बढ़ते हैं। इसके बाद आता है आराम का चरण। लगभग 3 महीने तक ये आराम फरमाते हैं। अंत में इसकी बढ़त एकदम रुक जाती है और बाल गिर जाता है। बाल के टूटने या गिरने का असर फॉलिकल पर नहीं पड़ता। बल्कि वह नए बाल की तैयारी में जुट जाता है। एक समय में लगभग 90 प्रतिशत बाल बढ़ने के चरण में होते हैं। तभी लगातार टूटने के बावजूद बालों का घनापन कम नहीं दिखता।

कहा जाता है कि मरने के बाद बाल लगातार बढ़ते रहते हैं। अब बताओ यह कैसे सम्भव है। फॉलिकल के जीवित आधार से बाल तभी उगते हैं जब वहाँ खून की सप्लाई हो। एक बार सप्लाई बन्द हुई तो मृत कोशिकाएँ कैसे बढ़ेंगी। हाँ, कुछ समय तक, जब तक कोशिका में पोषण रहे बस तब तक ही ऐसा हो सकता है।



पुस्तक चर्चा में इस बार ...

किस्सा

नील बाबा और उनके समरहिल



नील बाबा फिर कोई किस्सा सुना रहे थे।
"तो उस क्रूर शैतान मगिंस ने समरहिल पर कब्जा कर लिया। और वहाँ पढ़ाई को ज़रूरी बना दिया। अगर किसी के मुँह से गाली निकलती तो उसे बेतों की मार पड़ती। ज़रा सोचो तो समरहिल के बच्चे कैसे मगिंस का हुक्म बजाते होंगे। और हाँ, उसने समरहिल के बड़े गुरुजी नील को भी मार दिया था।"

बच्चे नील बाबा की कहानी सुनकर गुस्सा हो गए। वे तैश में आकर बोले, "यह झूठ है। हमने कोई हुक्म नहीं माना था। हम तो भाग गए थे। फिर हमने मगिंस को हथौड़े से पीटकर मार डाला। क्या सोच रखा है तुमने? हम भला ऐसे आदमी को झेल सकते हैं?"

बच्चों का गुस्सा शांत करने के लिए नील बाबा को कहानी में सुधार करना पड़ा। समरहिल के बड़े गुरुजी को ज़िन्दा किया गया और मगिंस को समरहिल से भगा दिया गया।

ये सब समरहिल स्कूल के छोटे बच्चे थे जिन्हें नील हर इतवार को किस्सा-कहानी सुनाते थे। ये इन बच्चों के ही साहसिक कारनामे होते। उनके किस्सों के साथ बच्चे कभी अफ्रीका के दुर्गम इलाकों की सैर करते तो कभी समुद्र की गहराइयों में मोती बीनते नज़र आते। समरहिल के कुछ नियम भी हैं जिन्हें तोड़ने पर जुर्माना देना पड़ता था। ये नियम अकेले नील बाबा ने नहीं बनाए थे। सारे नियम स्कूल की सरकार बनाती। बच्चों की आमसभा में नियमों के पक्ष-विपक्ष में मतदान होता है। और फिर बहुमत के आधार पर फैसला होता है। कभी किसी मुश्किल मामले में नील बाबा भी जज को सज़ा सुझा देते थे। उसे मानना, न मानना जज पर निर्भर था। जैसे :

1

एक बार तीन लड़कियों ने गुपचुप रसोईघर पर धावा बोला और पकड़ी गईं। आमसभा में उनके जेब खर्च को जब्त करने की सज़ा दी गई। उन लड़कियों ने उसी रात दूसरी बार खाना चुराया। उन्हें एक फिल्म न देखने की सज़ा मिली। गज़ब तब हुआ जब वे लड़कियाँ एक बार फिर रसोई में खाना चुराते पकड़ी गईं। आमसभा में सोच-विचार होने लगा, इन्हें क्या सज़ा दी जाए कि ये खाना चुराना छोड़ दें। नील बाबा से सलाह ली गई। तो वे बोले, "हर एक को दो-दो पैसे (पेंस) इनाम दो।"



जज चकरा गया, "क्या? पता है ऐसा किया तो पूरा स्कूल ही रात को रसोईघर में घुसने लगेगा।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा, आज़माकर देखो।" नील बाबा मुस्कुराते हुए बोले और लड़कियों को यह सज़ा सुना दी गई। मगर फिर गज़ब हो गया। उन लड़कियों ने इनाम लेने से इनकार कर दिया और फिर कभी रसोईघर से खाना न चुराने की घोषणा की।

2

छह साल का एक लड़का विविएन सीधे नील बाबा के पास पहुँचा और बोला, "नील मैंने व्यायामशाला की एक खिड़की तोड़ दी है।"

"ऐसी छोटी-छोटी बातें लेकर मेरे पास न आया करो।" नील बाबा ने झिड़क दिया।

थोड़ी देर बाद वह लौटा और बताया कि उसने दो खिड़कियाँ और तोड़ी हैं। अब नील का माथा ठनका। उन्होंने पूछा कि ये खिड़कियाँ क्यों तोड़ी जा रही हैं?

विविएन ने कहा, ''मुझे तानाशाह पसंद नहीं है और मुझे भूखे रहना भी पसंद नहीं है। बाद में पता चला कि नील बाबा की तानाशाही के विरोध में बच्चे रसोई में हंगामा कर रहे थे। इसलिए खाना बनाने वाली रसोई बन्द करके घर भाग गई थी।

नील बाबा ने विविएन से पूछा, ''तो तुम इस बारे में क्या करने वाले हो?''

''और खिड़कियाँ तोड़ूँगा।''

''ठीक है, फिर लगे रहो।'' नील बाबा ने कहा और विविएन ने खिड़कियाँ तोड़ना जारी रखा।

एक बार वह फिर लौटा और उसने बताया कि वह सत्रह खिडकियाँ तोड़ चुका है।

''पर जान लो, मैं हरेक की मरम्मत के पैसे चुकाऊँगा।''

''कैसे?''

''अपने जेब खर्च से। चुकाने में कितना समय लगेगा?''

नील बाबा ने फटाफट हिसाब लगाकर कहा, ''लगभग दस साल।''

पल भर के लिए वह उदास हुआ, फिर अचानक उसका चेहरा चमक उठा। वह बोला, ''पर, मुझे पैसे नहीं चुकाने होंगे।''

''और मेरी निजी सम्पत्ति के नियम का क्या होगा? वे खिड़कियाँ मेरी निजी सम्पत्ति हैं।''

''वह मैं जानता हूँ, पर अब यह नियम कहाँ है? सरकार ही नहीं है। सरकार ही तो नियम बनाती है।''

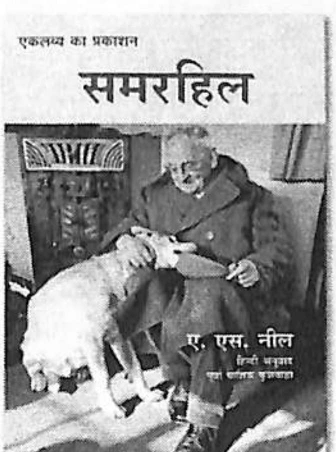
फिर नील बाबा के मुरझाये चेहरे को देखकर उसने कहा, ''फिर भी मैं सबके पैसे चुकाऊँगा।''

लेकिन विविएन को पैसे नहीं देने पड़े।

इस घटना के बाद वे लंदन में भाषण दे रहे थे। उन्होंने इस घटना का ज़िक्र किया। भाषण खत्म होने पर एक नौजवान नील बाबा के पास आया और उन्हें एक पाउंड का नोट थमाते हुए बोला, ''ये पैसे उस नन्हें शैतान की खिड़कियों के लिए हैं।'' घटना के दो साल बाद तक विविएन लोगों को खिड़कियाँ तोड़ने और उसके पैसे चुकाने वाले व्यक्ति के बारे में बताता रहा, ''वह आदमी बड़ा बेवकूफ ही होगा क्योंकि उसने मुझे देखा तक नहीं था।''

प्रस्तुति : नरेंद्र कुमार

नील बाबा का पूरा नाम ए एस नील है। इंग्लैंड के एक गाँव में नील बाबा ने समरहिल स्कूल शुरू किया था। उन्होंने समरहिल स्कूल के अपने अनुभव पर यह किताब लिखी।

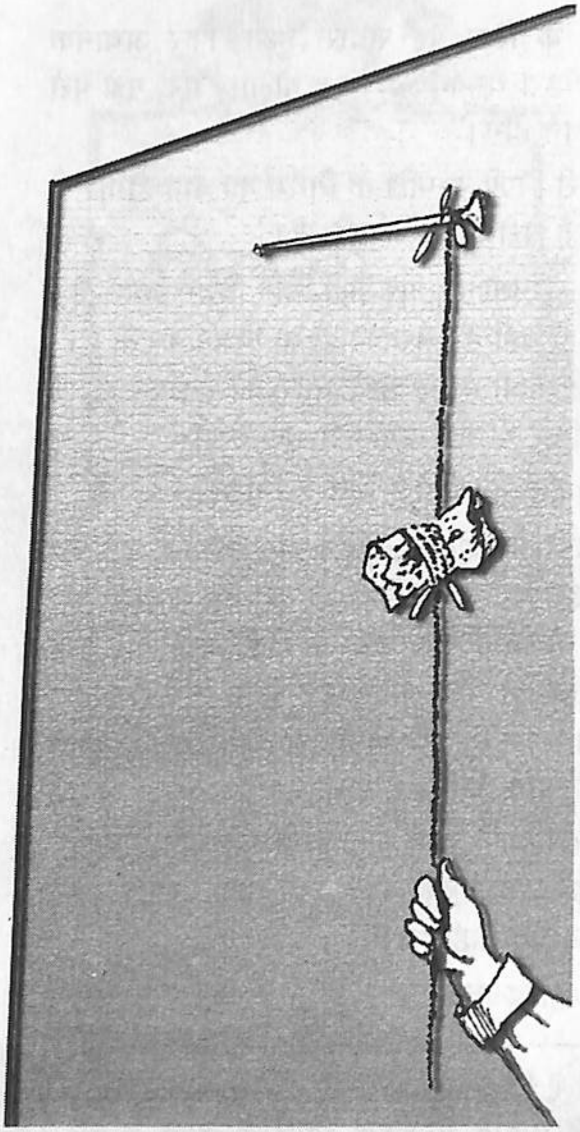


समरहिल बच्चों के मन का स्कूल है। यहाँ की हर बात निराली है। बच्चे का मन होगा तो कक्षा में जाएगा, नहीं तो बस मौज करेगा। बच्चे यहीं रहते हैं। सुबह चाय-नाश्ते के बाद कक्षा में पहुँचते हैं। दोपहर को लंच के बाद सब अपनी मर्ज़ी के काम करते हैं। छोटे बच्चे डाकू-डाकू खेलते हैं। कुछ बच्चे वर्कशॉप में खटपट करते हैं तो कुछ अपनी साइकिल सुधारते हैं। नील बाबा के लिए यह समय बागवानी करने का होता है। मज़ेदार बात यह है कि यहाँ कोई किसी के काम में दखल नहीं देता।

शाम को कई दूसरी गतिविधियाँ शुरू होती हैं। कहानियाँ सुनना, चित्रकारी, चमड़े और टोकरियाँ आदि बनाने का काम। बुधवार की रात नृत्य-संध्या होती है। लड़के-लड़कियाँ नाटक लिखते और खुद उन्हें निर्देशित भी करते हैं।

1973 में नील बाबा की मृत्यु हो गई। उनके बाद पहले उनकी पत्नी ने फिर उनकी बेटी ने इस स्कूल का संचालन किया। आज भी यह स्कूल चल रहा है। क्या तुम अपने सपनों के स्कूल के बारे में कुछ लिखकर हमें भेज सकते हो?

प्रयोग



ज़ोर लगा के...

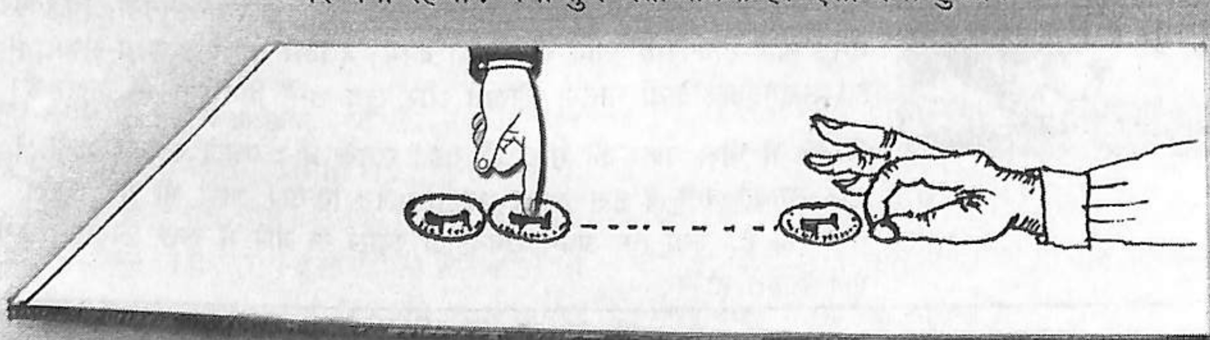
एक ज़रा मजबूत-सा धागा लो। इसका एक सिरा किसी ऐसी चीज़ से बाँध दो जहाँ धागा बिना अटके लटक सके। इस धागे के बीच में एक पत्थर बाँध दो। ध्यान रखना कि पत्थर के ऊपर और नीचे वाली रस्सी की लम्बाई बराबर रहे।

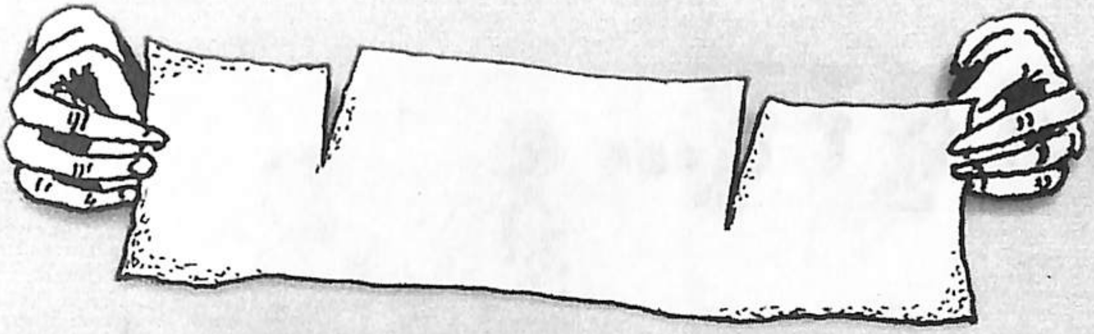
अब निचले छोर को बल बढ़ाते हुए खींचना है। कौन-से हिस्से से धागा टूटेगा? पत्थर के ऊपर वाले हिस्से से या नीचे वाले?

अब इसी प्रयोग को दोहराओ। इस बार निचले छोर को झटके से खींचना। अबकी बार धागे का कौन-सा हिस्सा टूटा? क्यों?

सिक्के की करामात

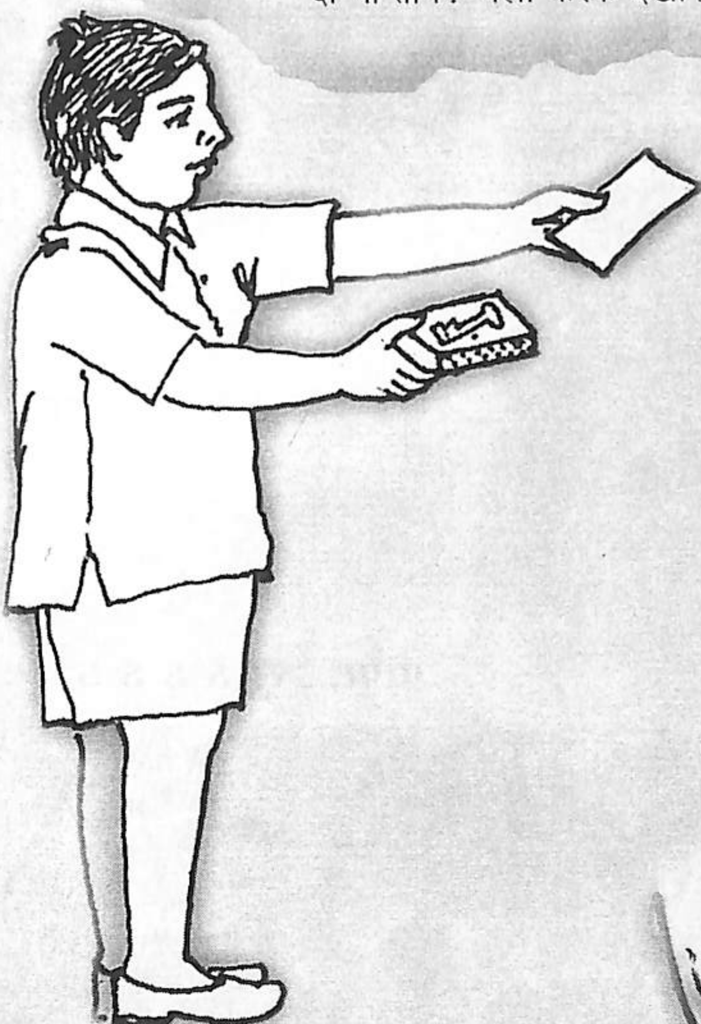
तीन सिक्के लो। एक सिक्के को दूसरे सिक्के से सटाकर रखो। चित्र के अनुसार एक सिक्के को उँगली से दबाकर रखो। दोस्त से कहो कि वह एक सिक्के को सरकाकर (जैसे तुम कैरम खेलते वक्त चकती या स्ट्राइकर को सरकाते होगे) इस दबे सिक्के से टकराए। ज़रा अंदाज़ा लगाओ। क्या दबे सिक्के से सटा सिक्का अपनी जगह पर बना रहेगा? क्या तुम बता सकते हो ऐसा क्यों हुआ?





फटा क्या ?

कागज़ की एक थोड़ी बड़ी चिन्दी लो। अंदाज़न बीस सेण्टीमीटर लम्बी और सात-आठ सेण्टीमीटर चौड़ी। चित्र के हिसाब से इसमें दो चीरे लगा लो। अब दोनों सिरों को पकड़कर खींचना है। तुम्हें क्या लगता है चिन्दी के कितने टुकड़े हो जाएँगे? दो या तीन? चलो करके देखो।

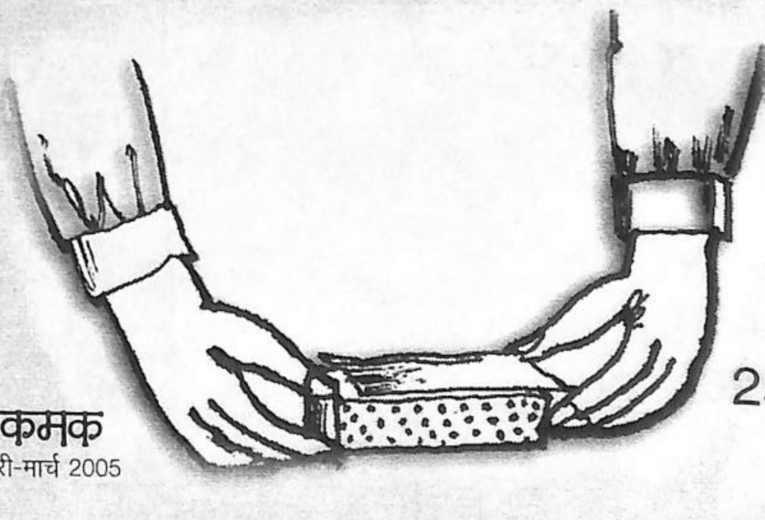


कौन कब गिरा ?

एक माचिस और कागज़ की एक पट्टी लो। एक हाथ में कागज़ की पट्टी और दूसरे में माचिस पकड़ो। खड़े होकर एक ही ऊँचाई से तुम्हें दोनों चीज़ें एक ही समय पर छोड़ना है। ज़रा अंदाजा लगाओ कौन-सी चीज़ पहले ज़मीन पर पहुँचेगी।

अब कागज़ की इसी पट्टी को माचिस के ऊपर रखो और एक ऊँचाई से छोड़ो। क्या हुआ?

खड़े होकर माचिस से ज़रा बड़ी पट्टी लेकर यही प्रयोग दोहराओ। क्या हुआ? और क्यों?



सभी चित्र- अशोक चंचल

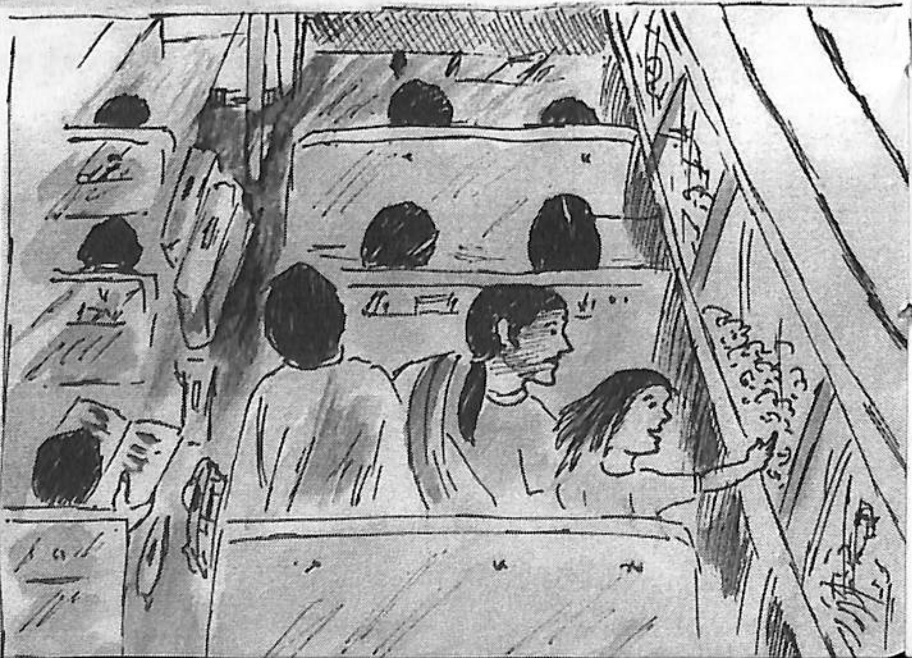
पापा सु ऽ सू...





पापा... सू ऽ ऽ ऽ ऽ

सू ऽ ऽ ऽ ऽ



अब नहीं रुकती...

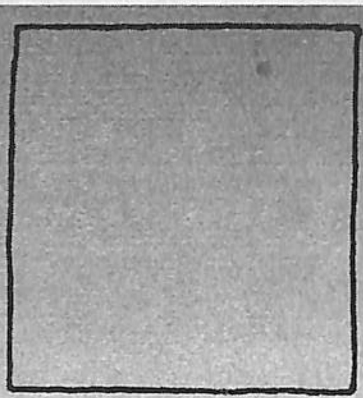


पापा... सू ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

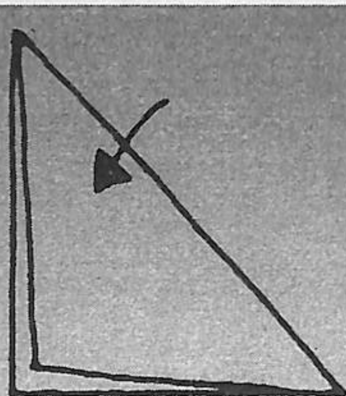


कथा - सतीनाथ षडंगी
चित्र - संतोष श्रीवास्तव

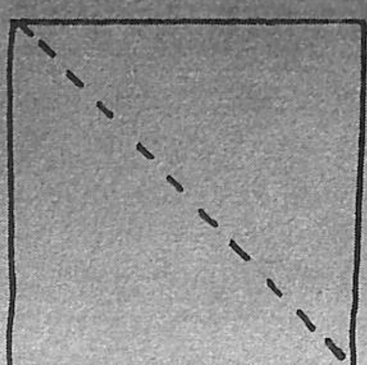
उड़ती तितली



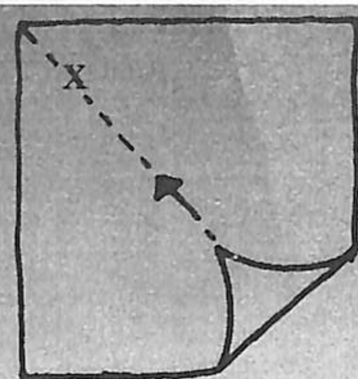
1. एक चौकोर (वर्गाकार) कागज़ लो जिसकी भुजाएँ 15 से.मी. लम्बी हों।



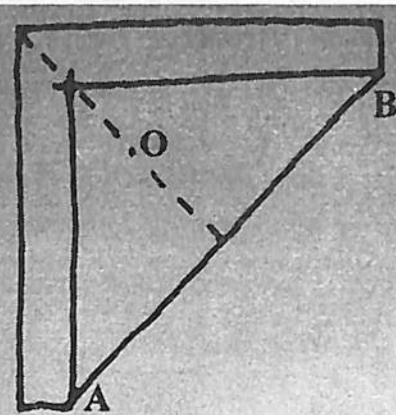
2. उसे कर्ण रेखा से तिकोना मोड़ लो।



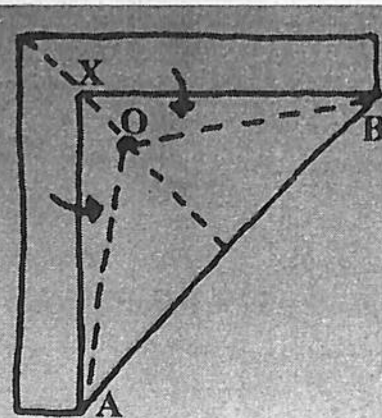
3. और खोल दो।



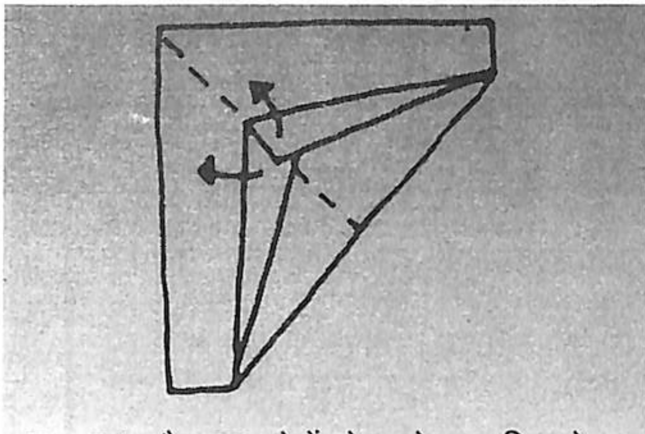
4. अब इस कर्ण रेखा पर किसी एक कोने से लगभग 2 से.मी. अन्दर एक निशान बना लो X. कर्ण रेखा के निचले कोने की नोंक को X पर रखते हुए मोड़ लो।



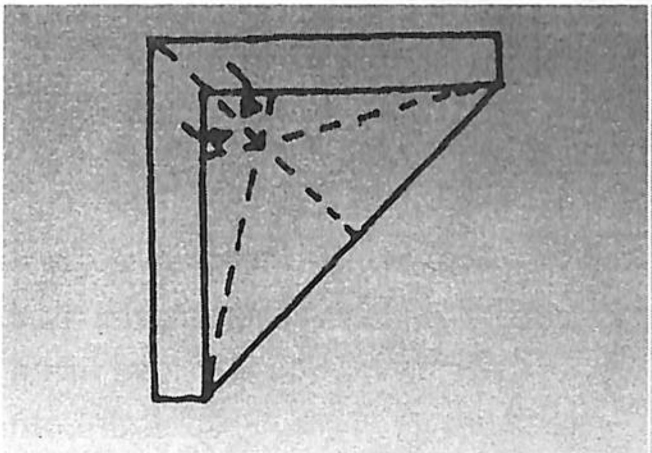
5. ऐसा बना? अब कर्ण रेखा पर ही X से लगभग 1.5 से.मी. दूरी पर एक और निशान O बना लो।



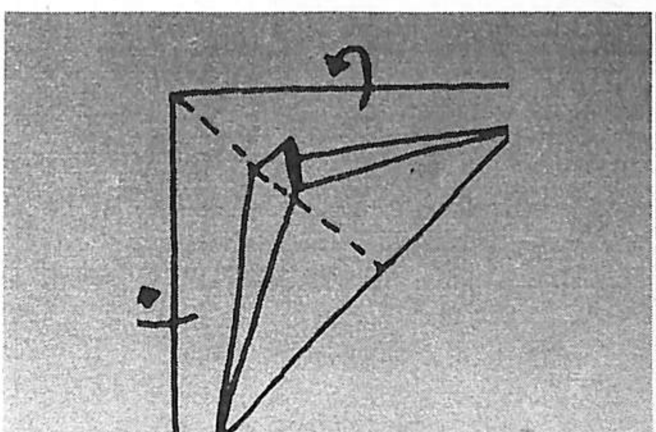
6. चित्र में दिखाए अनुसार OA और OB टूटी रेखाओं पर से मोड़ बना लो।



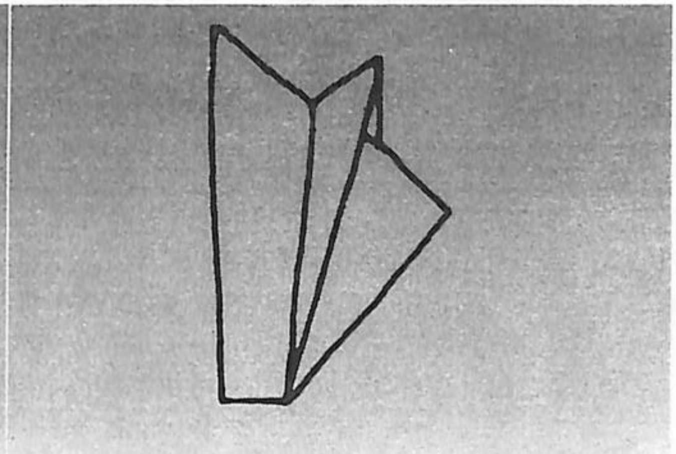
7. OA और OB दोनों मोड़ खोलकर फिर से एक साथ दोनों मोड़ बनाओ।



8. यहाँ जो दो छोटे तिकोन बने हैं उन्हें यूँ मोड़ो कि एक नाक जैसी आकृति खड़ी हो जाए।

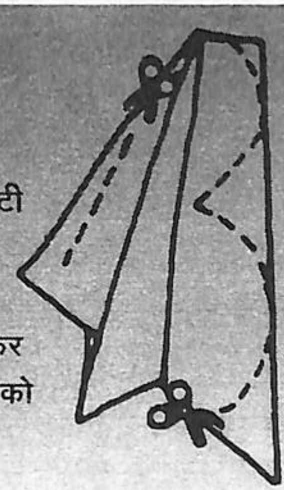


9. अब पूरी आकृति को चित्र में दिखाई टूटी रेखा पर से पीछे की ओर मोड़ दो।

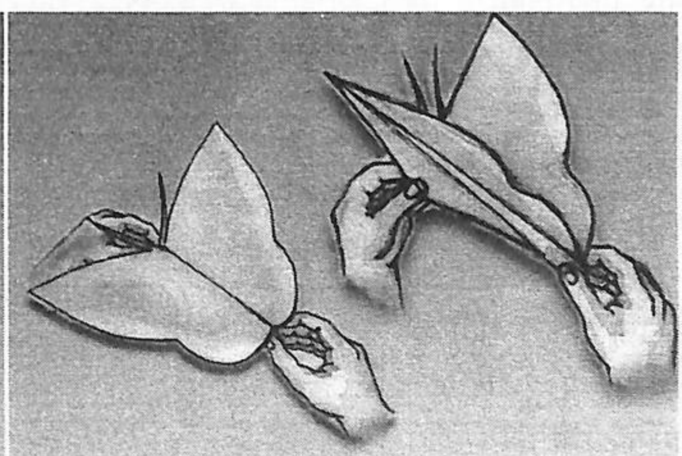


10. ठीक बीच से...।

11. चित्र में बताए टूटी रेखाओं पर से अपने मनपसन्द आकार में काटकर तितली के पंखों को आकार दे दो।



आगे की ओर बनी रेखा पर काटने से तितली के दो सूँड भी बन जाएँगे।



12. अब सूँड के नीचे के कोने को एक हाथ में पकड़ो और पूँछ वाली जगह को दूसरे हाथ से खींचो। लगी न तितली पंख फड़फड़ाने।



जब मम्मी-पापा बच्चे थे

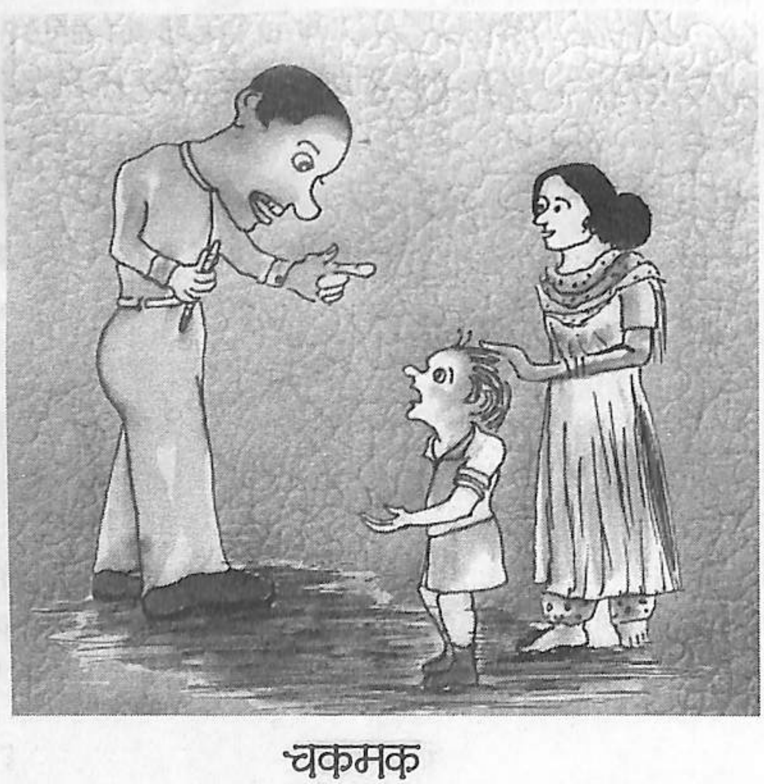
ऐसे भी दिन हुए हैं जब मम्मी-पापा बच्चे हुआ करते थे तुम्हारी तरह! तुम्हारी तरह उन्हें भी डाँट पड़ती होगी। धमाचौकड़ी वे भी मचाते होंगे। वे भी तुम्हारी तरह उदास और खुश हुआ करते होंगे। क्या मम्मी-पापा को वे दिन आज भी याद होंगे?

इस कॉलम में तुम सबके मम्मी-पापा के लिए एक मौका है उनके बचपन को याद करने का। उनसे कहना वे ज़रूर लिखें। अगर वे न लिखें तो उनसे सुनकर तुम्हीं लिख भेजना। हाँ, दादा-दादी, नाना-नानी के किस्से भी हो सकते हैं।

इस बार ईशान निगम के मम्मी-पापा अपने बचपन की शरारत लिख रहे हैं...

थर्मामीटर से छेड़खानी ...

तब मैं छोटा था। करीब दस साल का। हम इटारसी में रहते थे। जब भी घर में कोई चीज़ आती, उसके आसपास ही घूमते रहते। घर पर भैया मना करते, पर अपन तो मौका पाते ही उसे छूकर देखना चाहते थे। जब तक चीज़ हाथ में न आए तब तक मज़ा ही क्या? एक शाम भैय्या एक छोटी ट्यूब लेकर आए और ऐलान किया कि इस थर्मामीटर को कोई हाथ नहीं लगाएगा। उस समय तो बहुत गुस्सा आया। पर मन ही मन सोचा चलो कभी तो मिलेगा मौका। दीदी को उस समय बुखार था। थर्मामीटर से समय-समय पर बुखार देखा जाता। फिर उसे सँभालकर ऊपर रखे रेडियो के पास रखा जाता।



बहुत दिनों बाद, क्रिसमस की छुट्टियाँ लगीं। मुझे मौका मिल गया। घर में कोई नहीं था। स्टूल पर चढ़कर अजूबा निकाल लिया। पहले तो मुँह में डालकर देखा। पर कुछ नहीं दिखा। फिर बाजू में लगाकर देखा। तब भी कुछ नहीं हुआ। सोचा,चलो अब कुछ और करते हैं। नहाने के लिए गर्म पानी रखा हुआ था। फिर क्या था। थर्मामीटर लिया और उसमें डाल दिया।

लोग कहते थे पारा बढ़ता है। हमने सोचा देखते हैं कैसे बढ़ता है। थर्मामीटर डाला ही था कि पुट्ट की आवाज़ हुई। पारा पानी के अन्दर था और ट्यूब हाथ में।



अब क्या करें? खैर! अपन कर भी क्या सकते थे। जो भी करना था भैया को ही करना था।

शाम को पेशी हुई। हम भैय्या के सामने तलब हुए। क्यों? ये कैसे हुआ? भैया बस इतना बोले ही थे कि हमने रोना शुरू कर दिया। यह हथियार तब बड़ा काम करता था। थोड़ी देर बाद उन्होंने पूछा, बताओ तो इसे पानी में क्यों डाला? मैं बोला पानी का ताप देखने के लिए। पानी तो 100 डिग्री पर उबलता है। मैंने सोचा ज़रा देखूँ कि उबलने के लिए कितना ताप और चाहिए। जैसे ही मैंने थर्मामीटर पानी में डाला वो तो टूट गया।

पिटाई नहीं हुई। समझाइश के बाद रिहाई हो गई। मेरी क्लास ली गई। उसी क्लास में मैंने जाना कि पानी 100 डिग्री सेंटीग्रेड पर उबलता है। और थर्मामीटर में तो 42 डिग्री सेंटीग्रेड तक ही रहता है। जिसे लोग सौ डिग्री ताप कहते हैं वो जनाब असल में सौ फेरैनहाइट हुआ करते हैं। थर्मामीटर तो टूटना ही था।

- मनोज निगम



विलोम यानी ...

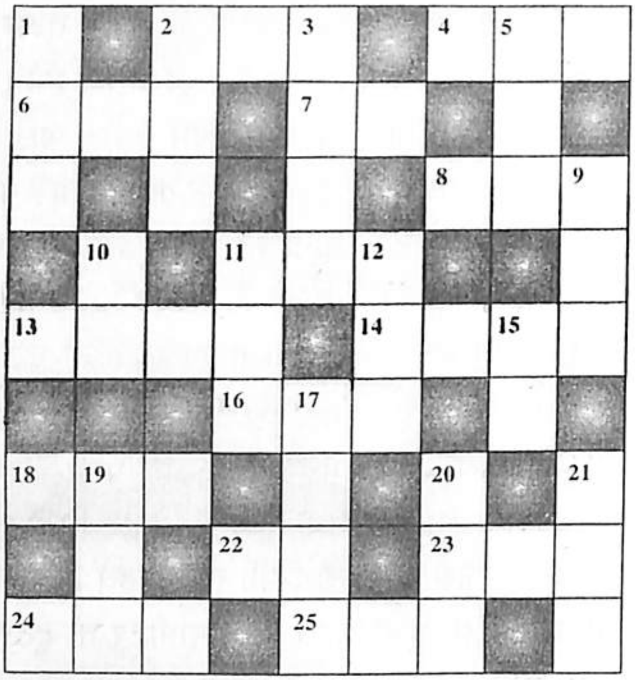
तब मैं तीसरी में पढ़ती थी। हमारे घर पर बहुत से बच्चे ट्यूशन पढ़ने आते थे। पापा उन्हें पढ़ाते थे। एक बार मैं भी क्लास में बैठ गई। पापा विलोम (उल्टा) शब्द सिखा रहे थे। मैंने कहा - मैं भी विलोम शब्द लिखूँगी। पापा ने मुझे कुछ शब्द दिए। मुझे लगा विलोम यानी किसी शब्द का उल्टा। पापा ने शब्द दिया था - दुःख। मैंने उसका उल्टा लिख दिया। जब पापा को दिखाया तो वे ज़ोर से हँसने लगे। मैंने सोचा, मैंने ठीक तो लिखा है। पापा को हँसते देख भैय्या बोले - सर आप हँस रहे हैं। इसने ऐसा क्या लिखा? उन्होंने भी कॉपी देखी और हँसने लगे। मैंने पूछा, इसमें हँसने वाली क्या बात है। तब पापा ने बताया दुख का उल्टा तो सुख होता है। तब भी मुझे अपने आप पर हँसी आई। और आज जब भी सोचती हूँ, हँसी आती है। दरअसल दुख के उल्टे को मैंने लिखा था - खदुः।



- रश्मि निगम

चित्र-पहेली

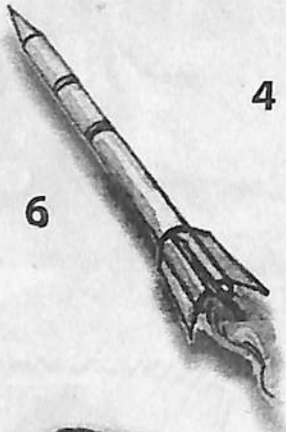
संकेत - दाएँ से बाएँ



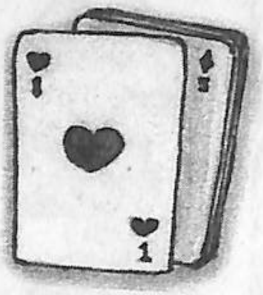
2 'सोफा कुरसी' में एक भाषा



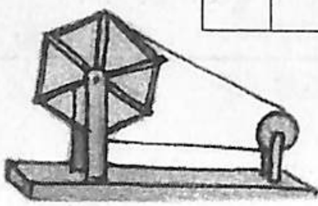
4



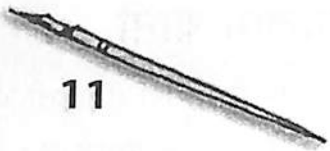
6



7



8



11



13

(चकमक का एक कॉलम जब.... बच्चे थे)

14

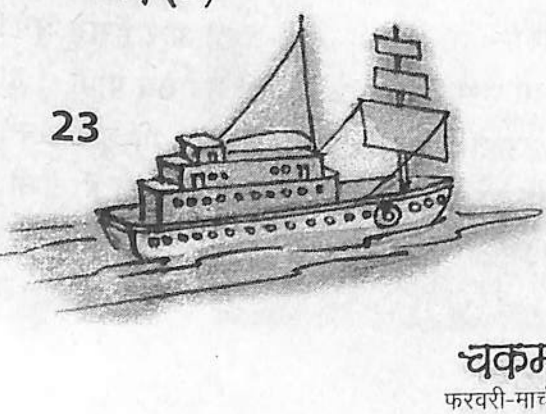


16 सखी, दोस्त

18



22 ज़रा....चलिए (2)



23

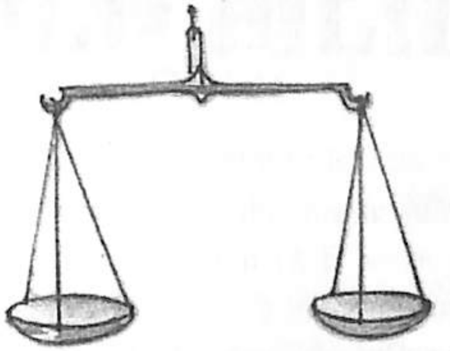


24

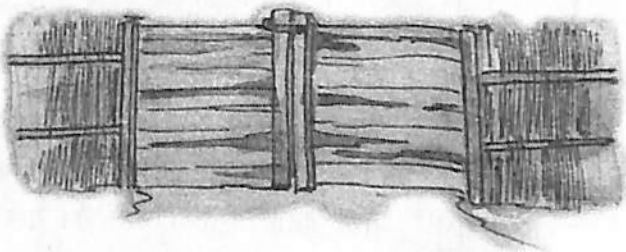
25 चक्करकाट में भिड़ंत

संकेत - ऊपर से नीचे

1

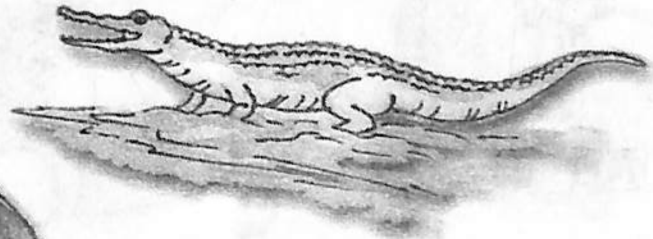


2



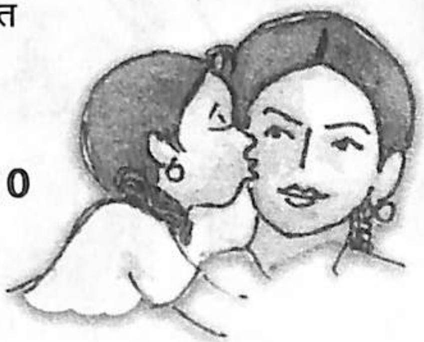
3 छोटे-छोटे काले बीजों वाला फल

5



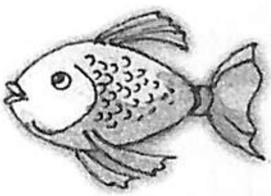
9 ‘तिल रखा में’ आवभगत

10



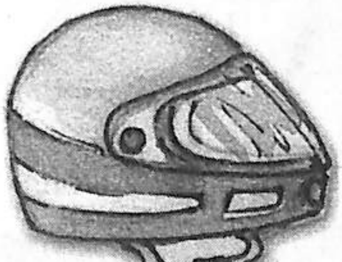
11 रूई

12

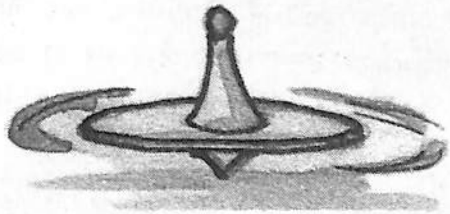


15 दूध से बना खट्टा पदार्थ

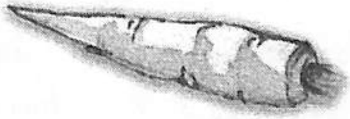
17



19



20



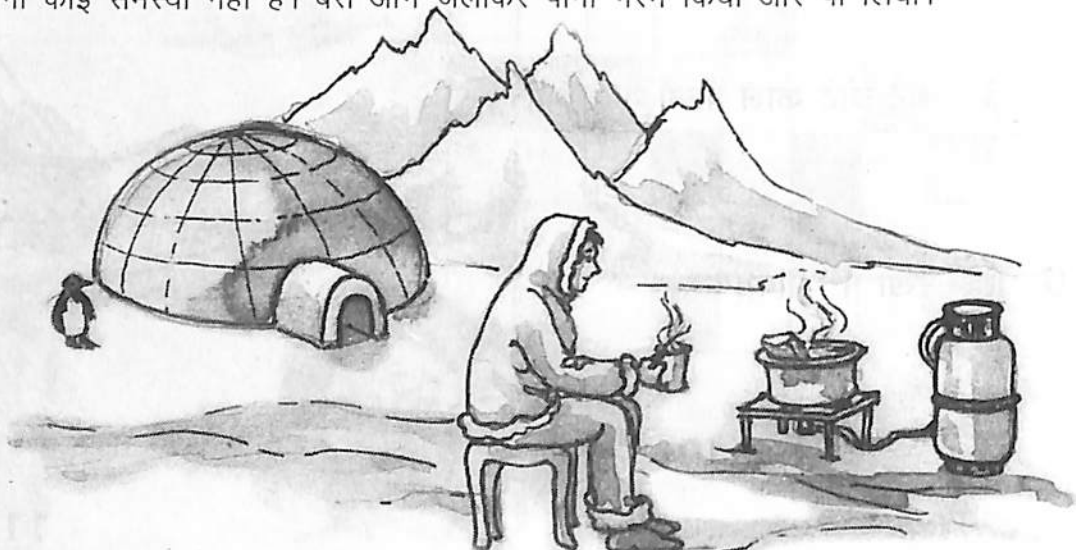
21



कित्ता पानी...

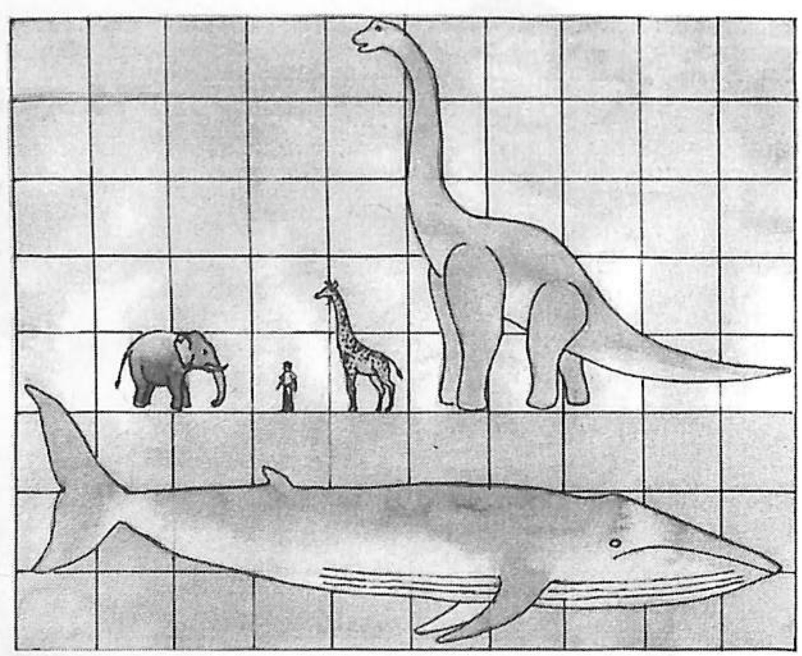


संसार का रंगीन नक्शा देखो। कितना सारा नीला रंग दिखेगा। इतना सारा पानी फिर भी पीने के पानी की इतनी कमी! वो इसलिए कि पृथ्वी का 97 प्रतिशत पानी खारा है। केवल 3 प्रतिशत ही पीने लायक है। इसमें से भी 2 प्रतिशत बर्फ के रूप में है। यानी केवल 1 प्रतिशत पानी झीलों, नदियों और ज़मीन के नीचे है, जिसे पिया जा सकता है। एक मज़ेदार बात यह कि खारे पानी से बनी बर्फ में खारापन नहीं होता। इसलिए चारों तरफ बर्फ से ढँके महाद्वीपों में पानी कोई समस्या नहीं है। बस आग जलाकर पानी गरम किया और पी लिया।



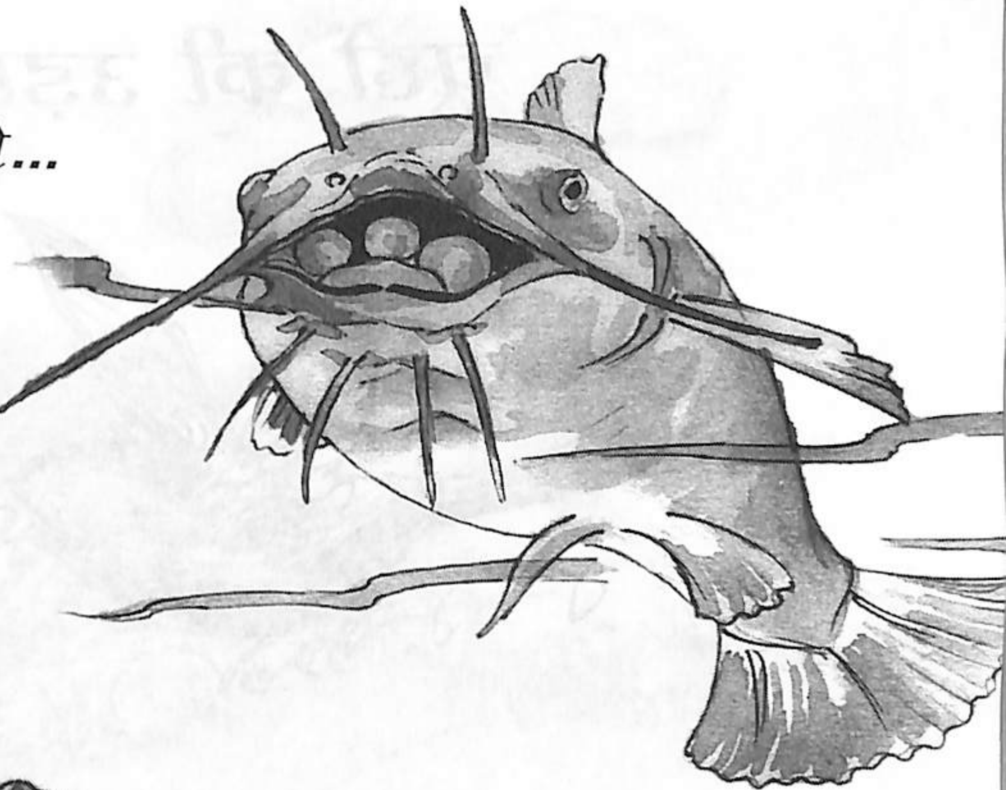
विशाल व्हेल

पृथ्वी का सबसे बड़ा जीव है ब्लू व्हेल। यह पानी में ज़रूर रहती है, लेकिन मछली नहीं है। इसका हृदय एक कार बराबर है और जीभ एक हाथी जितनी बड़ी। इसके हृदय का वज़न लगभग 450 किलो होता है और जीभ का लगभग 4 टन। मादा व्हेल नर से बड़ी होती है। सबसे भारी मादा 150 टन तक होती है।

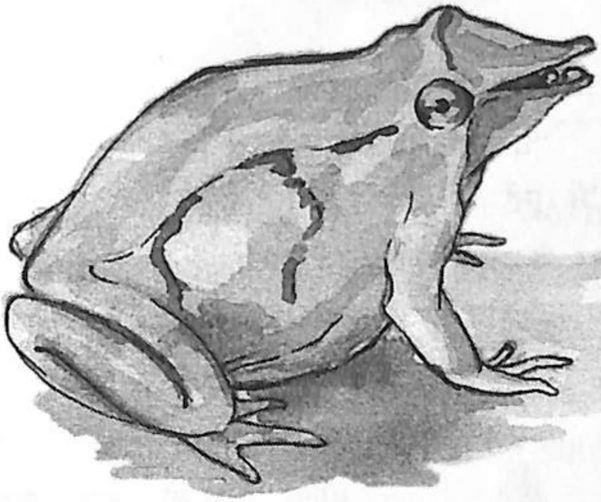


इसकी आवाज़ इतनी तेज़ होती है कि एक जेट विमान की भी कुछ न चले। ये बहुत तेज़ तैरती हैं। इनके बच्चे साढ़े सात मीटर तक लम्बे हो सकते हैं। और भार होता है करीबन 23 टन। ये जनाब पैदा होने के आधे घंटे बाद ही तैरने लगते हैं। और एक दिन में अपनी अम्मा का 380 लीटर तक दूध पी जाते हैं। दूसरे जानवरों से इनकी तुलना करके देखो। हमसे इतने विशाल होने के बावजूद उनका औसत जीवन 35 से 40 साल ही होता है।

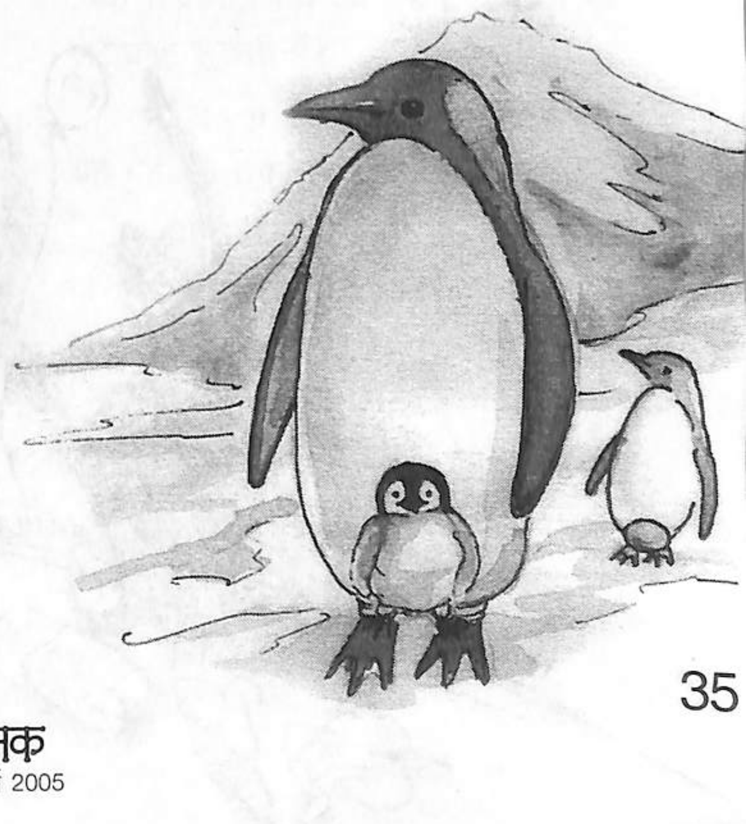
मिलो कुछ अच्छे पापाओं से...



अण्डों को सुरक्षित रखने का पापा कैटफिश का अपना अनोखा अंदाज़ है। वह उन्हें तब तक मुँह में सम्भाले रखते हैं जब तक इनसे बच्चे नहीं निकल जाते। इस दौरान वे कुछ नहीं खाते हैं। चाहे इस प्रक्रिया में कितने ही हफ्ते क्यों न लग जाएँ।



डार्विन मेंढक को भी अण्डे रखने की यही जगह पसंद आई - मुँह। पर कैटफिश की तरह इनका खाना-पीना बन्द नहीं हो जाता। एक थैली इसका ख्याल रखती है। जैसे ही अण्डे से निकले टैडपोल की पूँछ गायब होती है, नन्हे मेंढक उछलकर बाहर कूद जाते हैं।



अंटार्कटिका की भीषण ठण्ड में अण्डों की रक्षा का ज़िम्मा पापा एम्परर पेंग्विन का है। यह पेंग्विन अपने पैरों पर अण्डों को रखता है। पँखों की गर्माहट में 60 से ज़्यादा दिनों तक अण्डे रखे जाते हैं। इस दौरान वह कुछ नहीं खाता। ज़ाहिर है इससे उसका वज़न भी कम हो जाता है। बच्चे होने के बाद पापा पेंग्विन उन्हें एक खास तरह का द्रव पिलाते हैं। पापा जी को खाना और आराम तभी मिलता है जब मम्मी यह ज़िम्मा सम्भालती हैं।

चूहों की उड़ान

- हरदर्शन सहगल



सर्दियों के दिन थे। सुबह का वक्त। झाड़ी के किनारे, एक मैंना बैठी थी। वह ताज़ा निकली धूप का आनंद ले रही थी।

इतने में वहाँ,चूहे के दो छोटे-छोटे बच्चे आए, "नमस्तेजी" कहा, और बैठ गए मैंना के पास ।

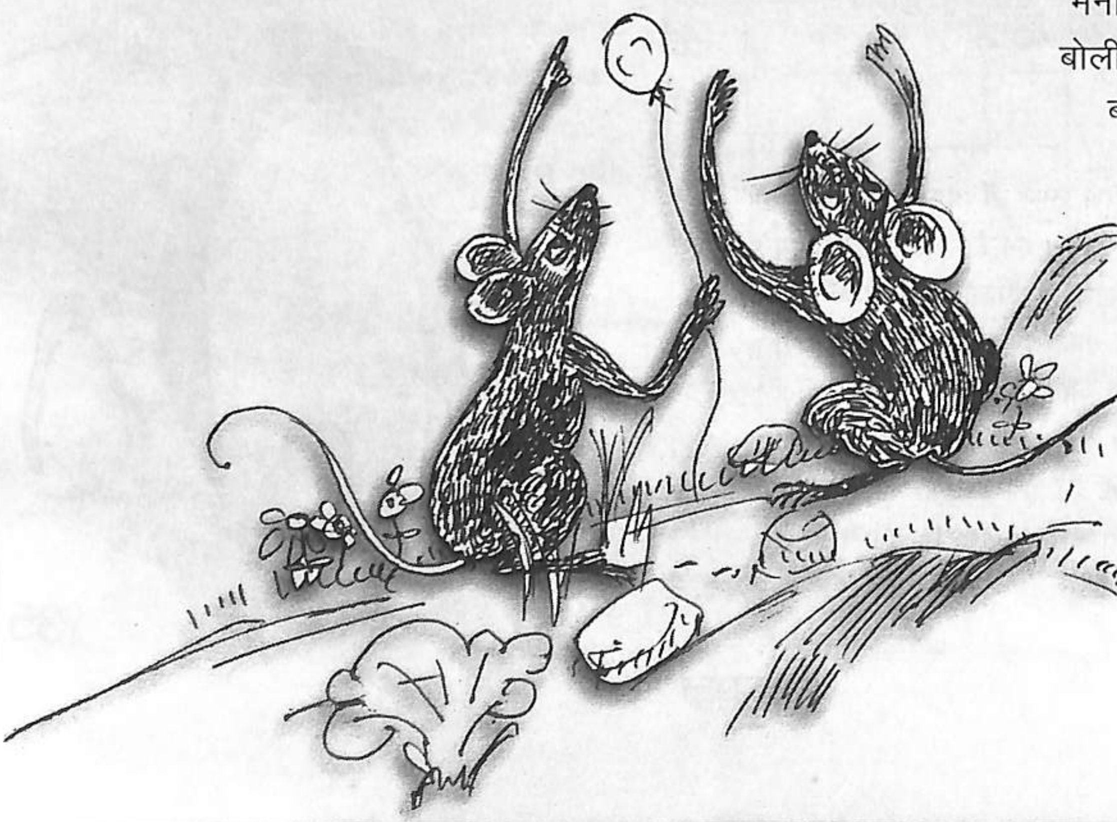
"कैसे हो?" मैंना ने पूछा।

"आप हमें बहुत अच्छी लगती हैं।"

"धन्यवाद!" मैना ने उत्तर दिया। फिर पूछा, "मैं तुम्हें क्यों अच्छी लगती हूँ?"

वे दोनों बताने लगे, 'हम दोनों सगे भाई हैं। आपको रोज़ ऊँचा-ऊँचा उड़ते देखते हैं। हमें बहुत अच्छा लगता है।'

मैंना मंद-मंद मुस्कुराते हुए बोली, "तुम दोनों बहुत प्यारे बच्चे हो।"





"दीदी आपको तो हवाई जहाज़ की भी ज़रूरत नहीं।" एक ने कहा।

मैंना बोली, "अरे हमें उड़ता देखकर ही तो वैज्ञानिकों ने हवाई जहाज़ बनाया था।"

"पर हमारे पास इतना पैसा कहाँ जो हवाई जहाज़ में बैठ सकें।" दूसरा बोला।



"तो क्या हुआ। सभी मनुष्य भी तो महँगी हवाई यात्रा नहीं कर सकते।" मैंना ने दिलासा दी।

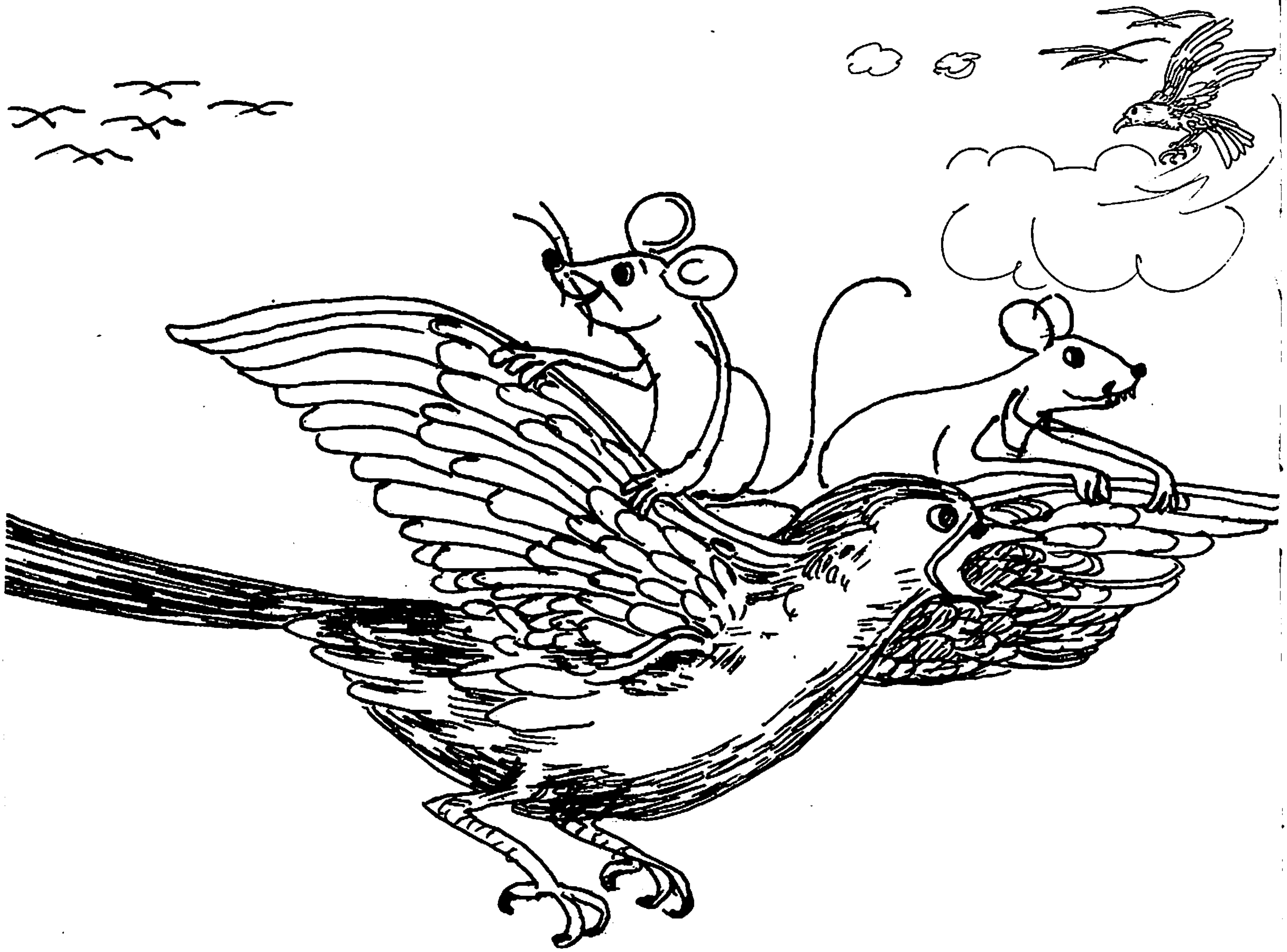
एक चूहा ज़रा आगे बढ़कर बोला, "प्यारी दीदी, क्या आप हमें आकाश की सैर करा सकती हैं?"

"न..न.. न... मैंना ने गर्दन हिला दी, यह नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता दीदी। आप तो परियों की रानी हैं। हम आपकी पीठ पर बैठ जाएँगे।"

"वो तो ठीक है! पर इसमें है बहुत खतरा।"

"हम आपको बहुत कसकर पकड़े रहेंगे। अभी तो हम छोटे हैं। बड़े होने पर आप हमें नहीं उठा पाएँगी। अभी ले चलो न दीदी।"



मैंना को उनकी ज़िद के सामने झुकना पड़ा। उसने दोनों को पीठ पर बिठा लिया। वे दोनों मैंना को ज़ोर से पकड़कर बैठ गए।

मैंना उड़ने लगी।

"अहा! मज़ा आ गया। ऊपर कितनी बढ़िया हवा होती है।

"ज़्यादा बातें न बनाओ। गिर जाओगे।" मैंना ने चेतावनी दी। बस।

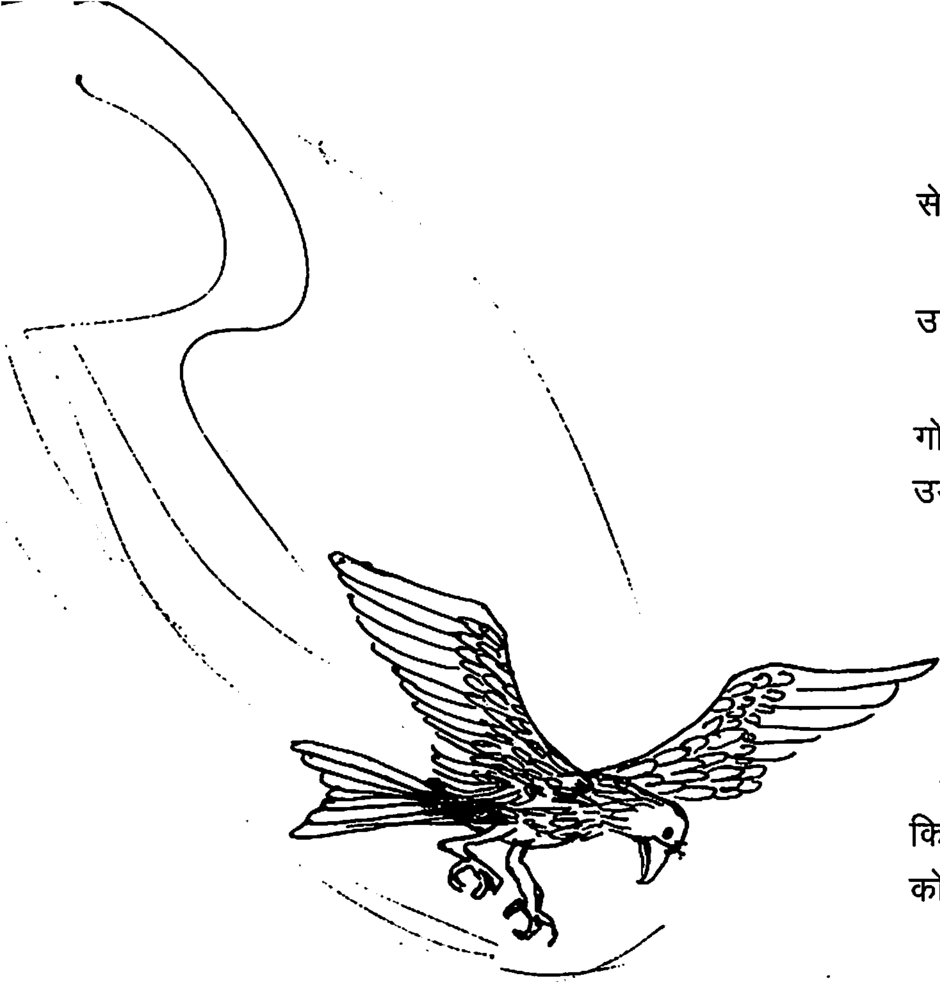
"नहीं, ज़रा और उड़ो।"

"हम बहुत ऊँचे आ गए हैं। अब धरती पर चलते हैं।"

"नहीं, नहीं। थोड़ी और सैर कराओ।"

मैंना और ऊपर उड़ने लगी। तभी एक चील ने उन्हें देख लिया, 'अहा! मैंना के साथ दो-दो चूहे! यानी भरपूर भोजन।'





मैंना ने चील का इरादा समझ लिया। वह डर गई। चूहों का तो दम निकलने लगा। अब क्या होगा?

मैंना बोली "घबराओ नहीं। बस मुझे ज़ोर से पकड़े रहो।"

तभी चील ने एक ज़ोरदार झपट्टा मारा।

मैंना तो तैयार थी ही। उसने बड़ी फुर्ती से पैंतरा बदला। चील का वार बेकार गया।

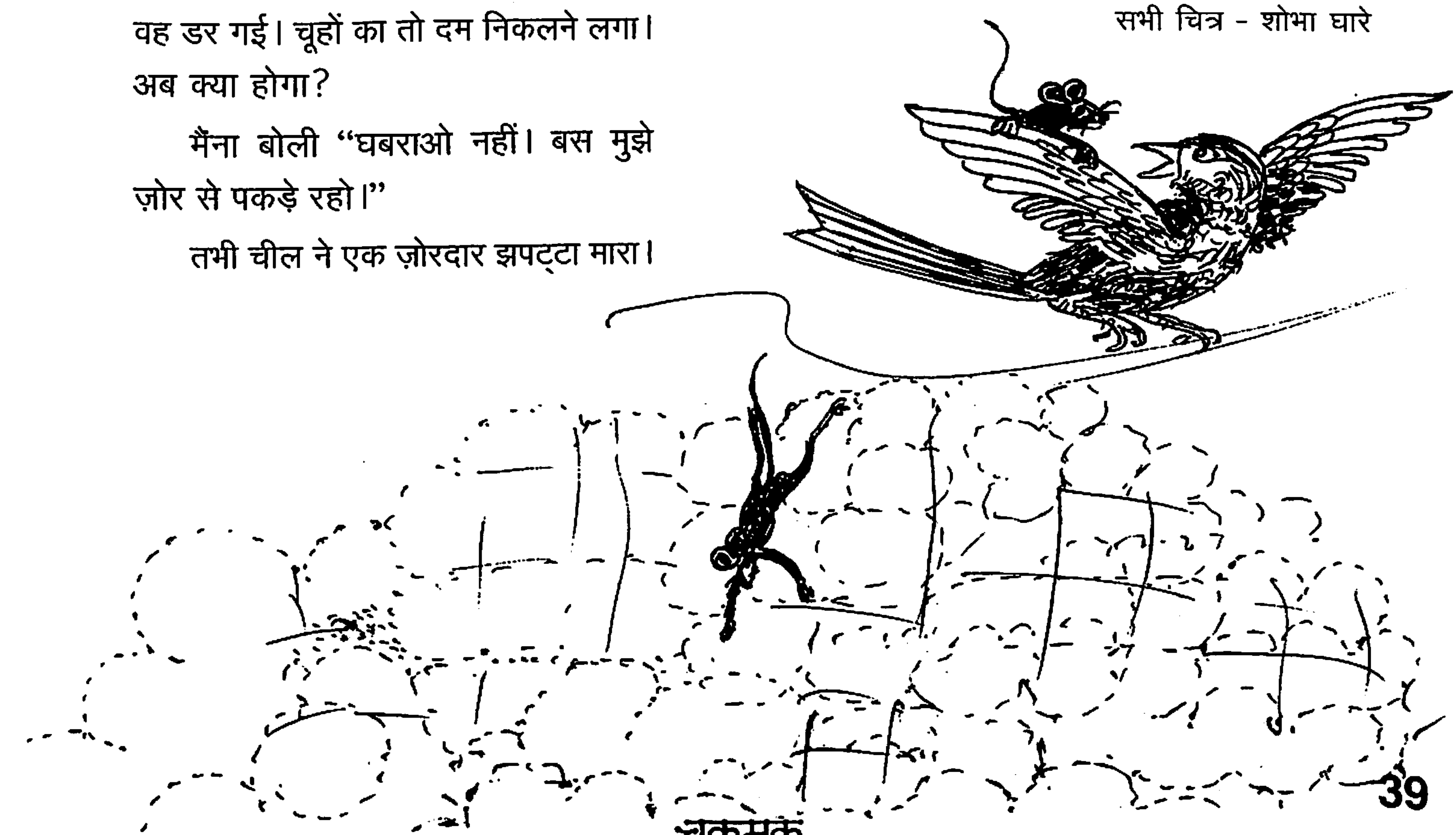
चील ने ऐसे कई वार किए। मैंना ने उसे हर बार चकमा दिया।

आखिर में मैंना ने चूहों को रूई के गोदाम में जा गिराया। और खुद लम्बी उड़ान भरती हुई अपने घोंसले में जा बैठी।

उधर चील चूहों को ढूँढती रह गई। दोनों चूहे रूई के बोरों में गुम हो गए।

दूसरी सुबह जब मैंना उठी तो उसने देखा वही दोनों चूहे उससे मिलने आए हैं। चूहों ने मैंना का शुक्रिया अदा किया। और एक और उड़ान के लिए मैंना को मनाने लगे।

सभी चित्र - शोभा घारे





चकमक समाचार

व्यासजी मिश्रा ने बनाया पानी का स्टोव



व्यासजी मिश्रा इस साल *नेशनल इनोवेशन फाउण्डेशन* द्वारा पुरस्कृत लोगों में शामिल हैं। यह पुरस्कार देश के खोजी व्यक्तियों को दिया जाता है। संस्था पुरस्कार के लिए देशभर से लोगों का चयन करती है। खोज किसी भी क्षेत्र की हो सकती है। पुरस्कार के लिए उम्र की भी कोई सीमा नहीं है। इस साल करीब 80 लोगों को पुरस्कृत किया गया है। इस सूची में मध्यप्रदेश का भी एक नाम शामिल है – व्यासजी मिश्रा। व्यासजी दसवीं कक्षा के छात्र हैं। पुरस्कृत लोगों में वे सबसे कम उम्र के हैं।

व्यासजी ने एक ऐसे स्टोव का आविष्कार किया है जिसमें तेल की खपत बहुत कम होती है। यह स्टोव पानी की भाप की मदद से जलता है। इस नवाचारी स्टोव में पानी और लोहे की रासायनिक क्रिया से तैयार हाइड्रोजन गैस का इस्तेमाल होता है। इसमें दो टंकी लगाई जाती हैं। एक में केरोसिन भरा जाता है। और दूसरी टंकी में पानी। दोनों टंकी स्टोव के बर्नर से जुड़ी होती हैं। स्टोव को केरोसिन वाली टंकी से चालू किया जाता है। जब बर्नर अच्छी तरह गर्म हो जाता है तब इसमें पानी वाली टंकी का इस्तेमाल होता है। पानी और लोहे की रासायनिक क्रिया से हाइड्रोजन गैस बनती है। बाद में तेल की जगह हाइड्रोजन जलने लगती है। इस स्टोव से साठ प्रतिशत तेल की बचत होगी।

व्यासजी मिश्रा ने यह नवाचारी स्टोव रीवा में आयोजित एक विज्ञान प्रदर्शनी के लिए तैयार किया था। उन्हें यहाँ प्रथम पुरस्कार मिला। बाद में उनके इस शोध को नेशनल इनोवेशन फाउण्डेशन के लिए नामांकित किया गया। यह संस्था भारत सरकार के विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी विभाग द्वारा स्थापित की गई है। इसका एक उद्देश्य सामान्य लोगों द्वारा किए जा रहे नवाचारी प्रयोगों को प्रोत्साहित करना तथा उन्हें तकनीकी सहायता प्रदान करना है।

⊙ रपट : शिवनारायण गौर

तितलियों का एक पार्क



हमारे आसपास फूल-पौधों पर मँडराने वाली तितली अब मुसीबत में है। उसके रहने और घूमने की जगह कम हो गई है। इसलिए बैंगलोर में तितलियों के लिए एक पार्क बनाया जा रहा है।

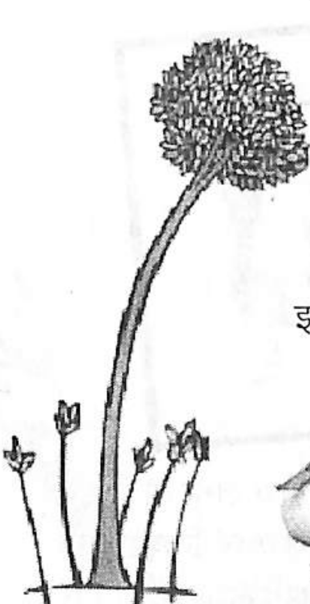
इस पार्क में 1500 किस्म की तितलियों को रखा जाएगा। तकरीबन पचास हज़ार वर्ग फीट क्षेत्र में बनने वाला यह पार्क अगस्त 2005 तक तैयार हो जाएगा।

इस तरह के तीन पार्क और बनाए जाएँगे।

यह सोचने वाली बात है कि इस तरह हम कितने जीवों की जगह कम करते जाएँगे और फिर उनके लिए पार्क बनाते जाएँगे।

दूर देश के पाखी

ठण्ड बढ़ने के साथ ही मेहमान पँछियों के जत्थे हमारे यहाँ आने लगते हैं। ये देश के कई इलाकों में रहना पसन्द करते हैं। दिल्ली का चिड़ियाघर भी इनमें से एक है। इन दिनों यह इन मेहमानों की चहचहाहटों से गूँज उठता है। चार-पाँच हज़ार किलोमीटर की उड़ान भरकर ये यहाँ पहुँचते हैं। दक्षिण पश्चिम एशिया, साइबेरिया और रूस से पिनटेल, शोवलर, कोमल टील और डेबचिक अपने जत्थों के साथ यहाँ पहुँच गए हैं। इनके अलावा कई और भी हैं। विदेशों में पड़ने वाली ठण्ड से बचने के लिए ये पक्षी हर साल यहाँ आते हैं। नवम्बर-दिसम्बर से लेकर मार्च-अप्रैल तक इनका बसेरा यहीं होता है और गर्मी शुरू होते ही ये अपने देश लौट जाते हैं।





बड़ा पुराना डायनासोर

ब्राजील के सांता मारिया शहर के एक बूढ़े आदमी टोलेंटिनो माराफिगा की नज़र एक दिन किसी जानवर के अवशेषों पर पड़ी। करीब से देखने पर वह कुछ अलग-सा लगा। उन्होंने सम्बंधित अधिकारियों को खबर दी। इस तरह डायनासोर की एक नई प्रजाति का पता चला। इसका नाम उनासाउरस टोलेंटिनोय रखा गया है। यह डायनासोर की सबसे पुरानी प्रजाति मानी जा रही है। रियो डि जेनेरियो विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं का कहना है कि यूरोप में मिले डायनासोर के अवशेष और इन अवशेषों में काफी समानता है। इस डायनासोर का वज़न करीब 70 किलो, लम्बाई ढाई मीटर और ऊँचाई 70 सेंटीमीटर होगी। ये घास-पत्ती खाने वाले डायनासोर के अवशेष हैं।



पिनटेल



टील



काश! मुझे किसी ने बताया होता

बहुत छुटपन से ही ऐसी बहुत-सी बातें होती हैं जो हमारे मन में घुमड़ती रहती हैं। बहुत-से सवाल, कई सारी उलझनें, कितने ही राज़। इन्हें हम कि...स्सी से नहीं बाँटते। किसी से बात करना चाहें तो भी कर नहीं पाते। वे बातें ही कुछ ऐसी होती हैं - कुछ खुशी की, कुछ झेंप की, कुछ शर्म की, कुछ डरावनी।

ऐसा ही एक विषय है अपने आसपास के बड़ों का गलत व्यवहार। चाहे हम लड़की हों या लड़का, हमारे आसपास कई ऐसे बड़े मौजूद रहते हैं जिनका व्यवहार हमें नहीं सुहाता। बात चाहे पुचकारने की हो, आँख मारने की, छूने-सहलाने की, शारीरिक छेड़छाड़ की, बदतमीजी की या फिर यौन हिंसा की।

खास बात तो यह है कि यह हमारे पसन्द या नापसन्द का मामला ही नहीं है। यह तो ऐसा करने वाले लोगों की बुरी आदतों या बुरी नीयत का मामला है। और सबसे अजीब बात यह कि जब हम बड़े हो रहे हों, तो कोई बड़ा हमें इसके बारे में बताता ही नहीं। हमें ऐसे बड़ों से सम्भलकर रहने या जूझने के लिए तैयार ही नहीं करता।



ऊपर से हमारे समाज में बड़ों को इस कदर इज़्ज़त देने का रिवाज़ है कि पसन्द न आने पर भी हम इसके बारे में कुछ कर नहीं पाते। किसी से कह तक नहीं सकते। और ऐसी चुप्पी में न जाने कितना कुछ सहते चले जाते हैं। पर अगर हमें खुद को और अपने दोस्तों को इस तरह के कड़वे अनुभवों से बचाना है, तो कहीं पर तो चुप्पी तोड़नी ही होगी। और बच्चों के साथ होने वाली इसी ज़्यादती और हिंसा के बारे में चुप्पी तोड़ने का काम करती है यह किताब -



जब पिछले महीने यह किताब हाथ लगी तो मैं इसे एक साँस में पढ़ गई। फिर अपने कुछ किशोर उम्र के दोस्तों के साथ इसे बाँटा। ऐसा लगा जैसे हमारे

बीच बातचीत का एक और दायरा अचानक खुल गया जो अब तक बन्द पड़ा था। हमने खूब बातें कीं। एक ने कहा, ''जिस तरह इस लड़की ने अपनी बात ज़ाहिर की है, ऐसे ही असल ज़िन्दगी में भी होता है। मेरी एक सहेली के साथ उसके ट्यूशन वाले टीचर ने ऐसा किया था। ...जहाँ लड़कियाँ हों वहाँ खास तौर पर माँ को बेझिझक सारी बातें बतानी चाहिए। फिर वे खुद भी बिना डरे जवाब दे सकते हैं, बेझिझक अपनी माँ को बता सकते हैं।''

एक और ने कहा, ''ऐसी घटना तो हर महिला, लड़की और बच्चे के साथ घटी होती है। इसीलिए परिवार में माँ, मौसी आदि को बच्चों को पहले से ये बातें बताना ज़रूरी है।'' एक और ने जोड़ा, ''मुझे तो लगता है कि हमें स्कूलों में प्यार और सेक्स के विषय में भी समझाना चाहिए। ठीक तरह से, ठीक लफ्ज़ों में समझाया जाए तो बच्चे भी इन बातों को खूबसूरती से समझ सकते हैं।''

तब पहली ने जोड़ा, ''खास बात यह है कि ऐसी जानकारी से हमें मज़बूती मिलती है। पहचान का कोई हो या फिर रास्ते में, बस में चलते हुए कोई अनजान हमसे छेड़खानी करता है तो अक्सर हम चुप हो जाते हैं। इसलिए कि हमें किसी ने यह बताया ही नहीं कि इसमें हमारी कोई गलती नहीं। गलती ऐसी हरकत करने वाले की है और हमें उसके खिलाफ आवाज़ उठाना चाहिए। हम क्यों चुप रहें? हमें तो इतना मज़बूत होना होगा कि फिर कभी





यह न कहें कि – काश मुझे.....''

इतनी सारी बातें उभारने वाली इस चौकोर किताब को कमला भसीन ने लिखा है और इसके चित्र बनाए हैं बिन्दिया थापर ने। गज़ब की जोड़ी है कमला और बिन्दिया की! एक के लिखने का अन्दाज़ कुछ ऐसा है कि बच्चों के यौन शोषण जैसा कठिन विषय भी बहुत सहज अन्दाज़ में बहुत सारी आपबीतियों के ज़रिए हमारे सामने खुलता जाता है। लगता है जैसे किताब नहीं कोई हमारे सामने बैठ हमसे बातें कर रही हैं। और दूसरे के बनाए बेहद जीवन्त चित्र – जैसे चित्र भी आपसे बोलते हों। आपके अपने अनुभवों की खुशी और दर्द को समझ रहे हों। इस किताब की कीमत सिर्फ 15.00 रुपए है। और किताब मँगाने के लिए तुम चकमक के पते पर या फिर नीचे दिए पतों पर चिट्ठी लिख सकते हो।

जैसे भी हो, इसे पढ़ना ज़रूर।

● **समीक्षा : चिन्रा, अनीता और टुलटुल**

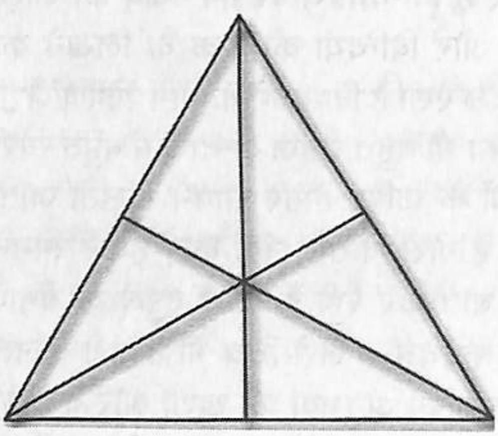
किताब	**काश! मुझे किसी ने बताया होता**
लेखक	**कमला भसीन**
चित्रकार	**बिन्दिया थापर**
कीमत	**15.00 रुपए**
प्रकाशक	**जागोरी**
	सी – 54 (ऊपरी मंज़िल)
	साउथ एक्सटेंशन – II
	नई दिल्ली 110 049
और	**बुक्स फॉर चेंज**
	सी – 75 (ऊपरी मंज़िल)
	साउथ एक्सटेंशन – II
	नई दिल्ली 110 049



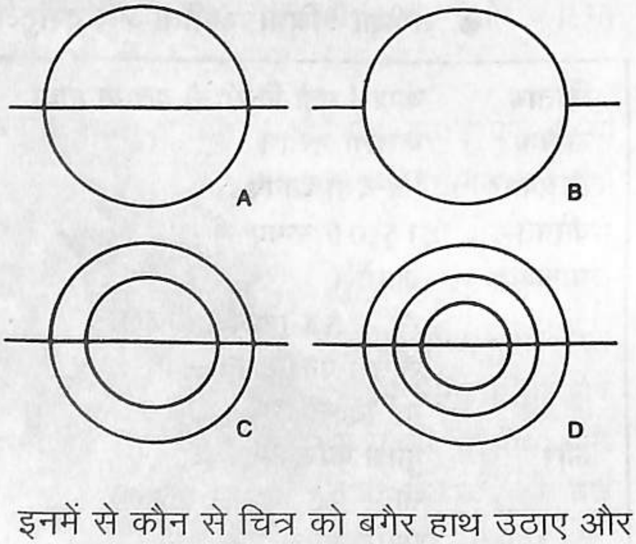
माथा पच्ची

1

इस आकृति में कितने त्रिभुज हैं?

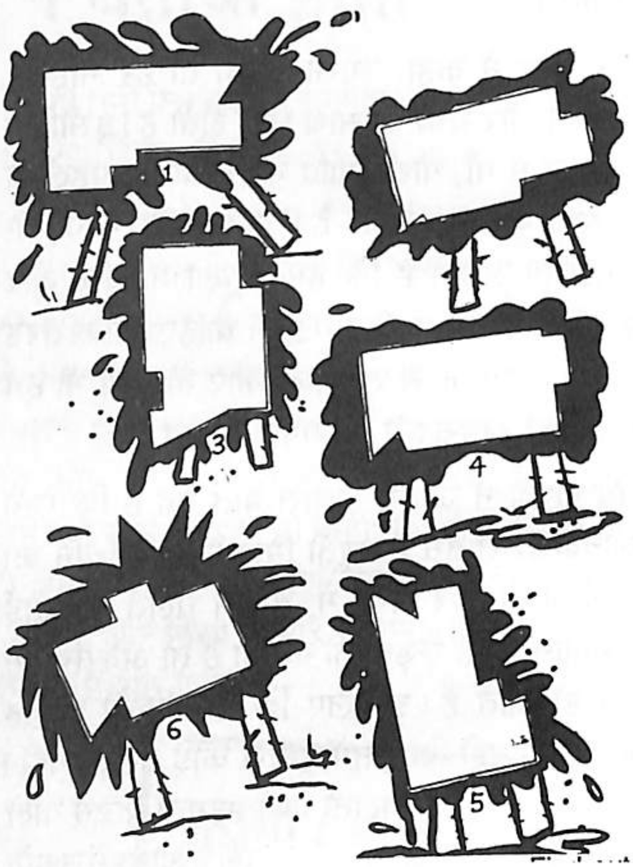


2



इनमें से कौन से चित्र को बगैर हाथ उठाए और एक लाइन पर दुबारा जाए बिना बनाया जा सकता है?

3

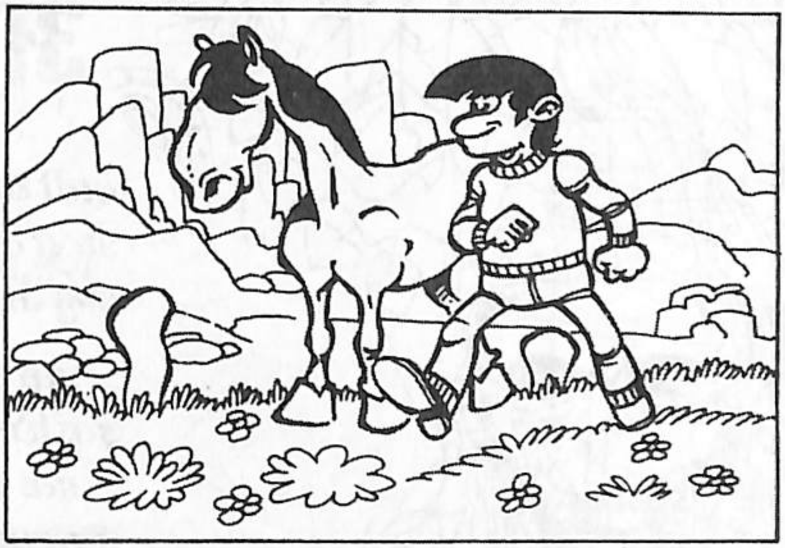


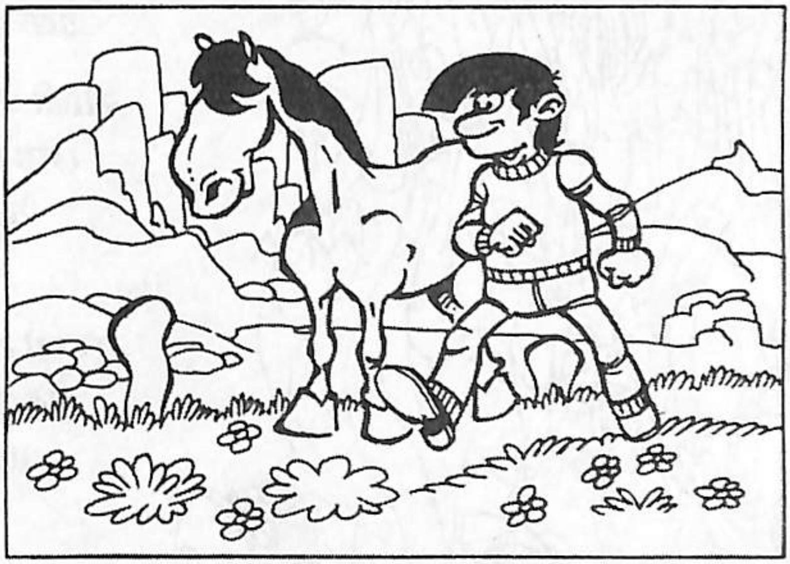
इन छह तस्वीरों में दो बिल्कुल एक-सी हैं। क्या तुम बता सकते हो? कौन सी?

4

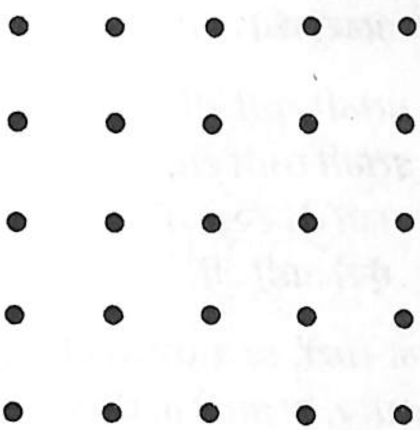
ये दो चित्र दिखते भले ही एक से हों पर इनमें कई अंतर हैं।

क्या तुम इनमें कम से कम 10 अंतर ढूँढ सकते हो?





5



इन पच्चीस बिन्दुओं को लाइन खींचकर जोड़ना है। पर दो शर्तों के साथ। एक तो लाइन बिल्कुल सीधी हो। दूसरे एक बिन्दु से लाइन एक बार ही गुज़रे। तुम कम से कम कितनी सीधी लाइनें खींचकर इन सब बिन्दुओं को जोड़ सकते हो?

जनवरी 2005 अंक के हल

1 अ	2 ज	ग	3 र		4 बं	5 द	र	
	ल		6 बी	7 स		श		8 प
9 सि	या	10 र		ज़ा		11 ह	ज़ा	र
	12 न	ह	13 ला		14 ख	रा		का
15 ख			16 चा	ली	स			र
लि		17 का	र		18 रा	19 य	20 ता	
21 हा	लि	या		22 पं		23 म	न	का
न		वा		24 जा	25 म		पू	
	26 ऐ	न	क		27 ग	ज	रा	ज



अब्बू की दाढ़ी

दाढ़ी बढ़ी,
अब्बू की दाढ़ी बढ़ी।
अनु के अब्बू की दाढ़ी बढ़ी।

इक चूहा, इक चुहिया,
इक बिल्ला, इक बिलैया,
इक भैंस, इक गैया,
इक बापू, इक मैया,
इक तोता, इक चिरैया,

सीढ़ी पे चढ़ के, फिर नीचे उतर के,
छोड़ के छप्पर, मोड़ के मढ़ैया,
रेत के ऊपर चला के नैया,
तेज़ी से भागे छूने को छैया।

पर वो दाढ़ी,
अब्बू की दाढ़ी,
अनु के अब्बू की दाढ़ी,

इतनी बड़ी थी,
इतनी कड़ी थी,
सबों के रस्ते में
ऐसे अड़ी थी,

कि न दायें न बायें, न ऊपर न नीचे,
न अंदर न बाहर, न आगे न पीछे,
न जल्दी न धीरे, न आज न कल,
निकलना सरल था न सरकना सरल।

तब पुकारा उन्होंने
अनु को तब पुकारा उन्होंने,
अनु को तब पुचकारा उन्होंने,
अनु से माँगा सहारा उन्होंने।

सोचा-विचारा

अनु ने सोचा-विचारा,
कुछ पल अनु ने सोचा-विचारा,
फिर ढूँढ़ा, सँवारा,
इक कतरनी को ढूँढ़ा सँवारा,
लिया कतरनी का पूरा सहारा -

कच-कच

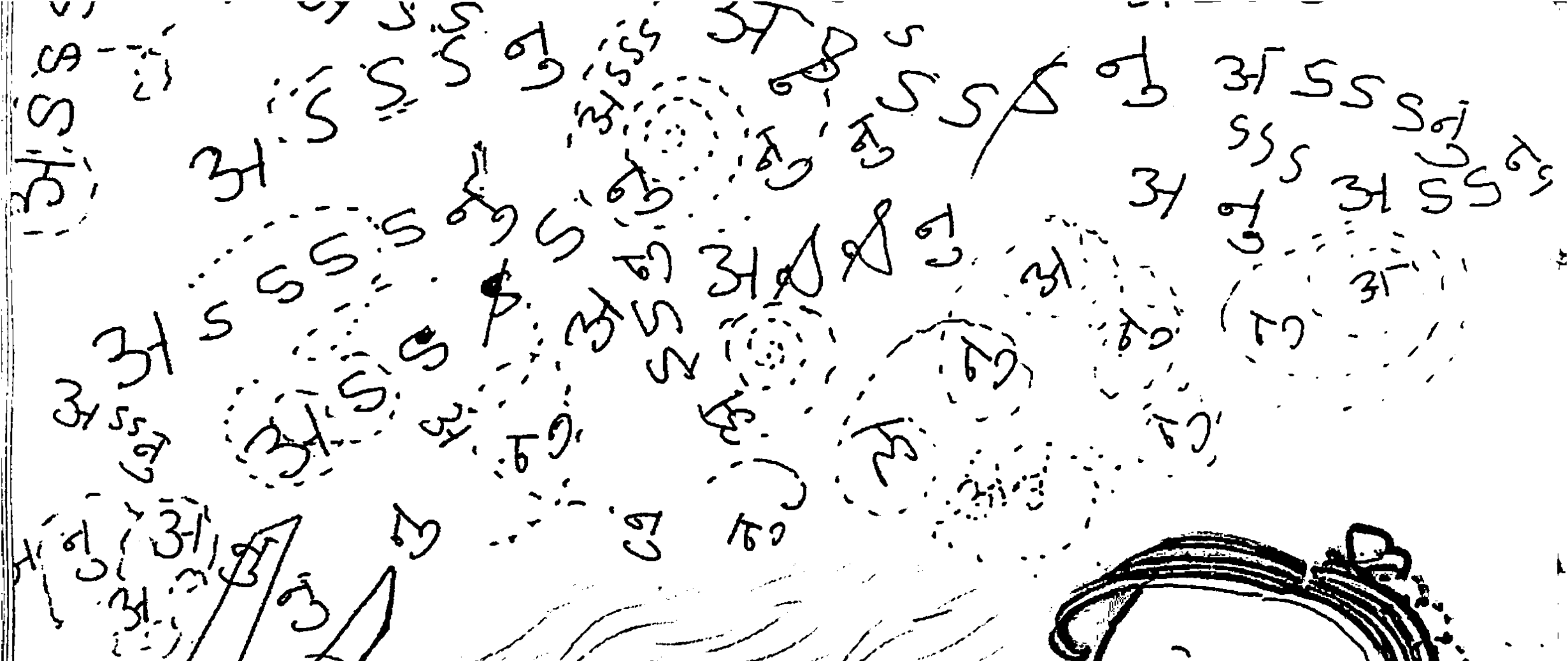
कच, कचाकच,
कच-कच, कचाकच,

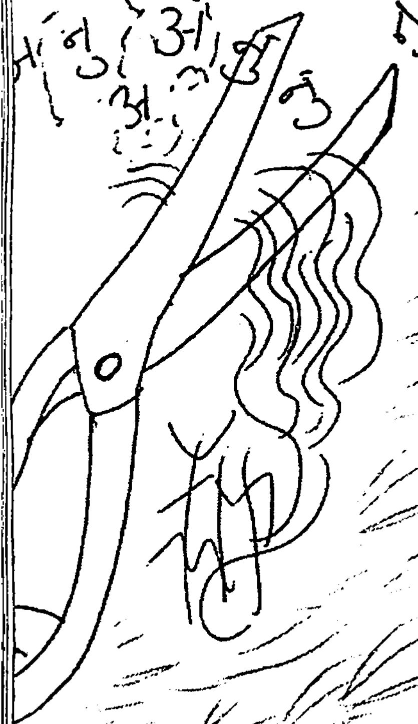
अब्बू की दाढ़ी का किया किनारा।
जब गई कतर,
सारी की सारी,
सफेद व कारी,
लम्बी व भारी,
अब्बू की दाढ़ी,
अनु के अब्बू की दाढ़ी,

तो, चूहा व चुहिया,
बिल्ला व बिलैया,
भैंस व गैया,
तोता व चिरैया,
बहन व भैया,
बापू व मैया,
मोटर में बैठ के,
चढ़-चढ़ के गाड़ी,
सजधज के आये
पहन कोट व साड़ी,

देख के अब्बू की दाढ़ी का हाल,
सालों से जिसको रखा था पाल,
पड़े थे पैरों में उस दाढ़ी के बाल,
रोये भी वो और हँसे भी वो,
निकले भी वो और फँसे भी वो,
बालों के फर्श में धँसे भी वो।









किया सलाम,
अब्बू ने किया सलाम,
अनु के अब्बू ने किया सलाम,
मुँह पे फेरा फिर हाथ तमाम।

शीशा दिया,
अनु ने शीशा दिया,
अनु ने अब्बू को शीशा दिया,
अब्बू ने शीशे में देख लिया,
न दाढ़ी यहाँ थी,
न दाढ़ी वहाँ,
अब्बू की दाढ़ी गई कहाँ?
दाढ़ी गई,
अब्बू की दाढ़ी गई,
अनु के अब्बू की दाढ़ी गई।

● प्रीतवन्ती मेहरोत्रा





● सभी चित्र- शोभा घारे

परी कथा

मैंने देखा एक सपना,
सपना था वह अपना।
मेरे घर पर एक परी,
परी लोक से आई थी।

परी देश से वह संग अपने,
उड़न खटोला लाई थी।
पूछा मुझसे, देश हमारा,
तुम देखना चाहोगी।

उड़ पहुँचा उड़न खटोला,
पलक झपकते परी देश।
कितनी सुन्दर परियाँ सारी,
देखती रहती थी मैं।

हाथ में जादुई छड़ी लिए,
सुन्दर गीत वे गाती थीं।
उनकी रानी, बड़ी सयानी,
सिंहासन पर बैठी थी।

हाथ में छड़ी पकड़ी थी,
ज्यों ही उसने छड़ी घुमाई।
राजकुमारी में बदल गई मैं,
कपड़े रेशमी गहने प्यारे।

रूप सलोना मेरा निखर गया।
राज परी ने मुझे भेंट दी।
उड़ने वाला वायुयान,
ले जाएगा तुम्हें कहीं भी, कभी भी।

जादू का एक पिटारा
देगी सब मनचाही चीज़ें।
बस करना पड़ेगा इशारा,
पाकर सब मनचाही चीज़ें।

मैं तो फूली न समाई,
बैठ यान सरपट भागी।
रानी से जा टकराई,
रानी सारी भौंचक्की-सी।

सकते में वे सब आई,
गुस्से में थी रानी ही।
छड़ी हाथ की हिलाई,
कपड़े गायब गहने गायब।

यान से गिरी मैं भागी,
आँख खुली तब पड़ी थी नीचे
ओ! स्वप्न से जागी।

- प्रिया, सातवीं, फैज़ाबाद, उ.प्र.



✍ भावना मालवीय, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

तीन सहेलियाँ

जब हमारे स्कूल शुरू हुए थे तो हम तीन सहेलियाँ थीं। हम तीनों में गहरी मित्रता थी। हम तीनों एक-दूसरे को अपनी सारी बातें बताते थे। हर कार्य जो हमें मैडम करने को देती थी उसे मिलजुलकर पूरा करते थे।

हमारा पूरा दिन खुशी-खुशी, हँसते-मुस्कुराते गुज़रता था। हम लोगों के जीवन में कोई टेंशन न थी। जब हम तीनों में से कोई शाला नहीं आता था, तो हमें अच्छी नहीं लगता था। हमारी एक सहेली की बातों का हम बहुत मज़ाक उड़ाते थे। वह बुरा नहीं मानती थी। लेकिन एक दिन मज़ाक के कारण ही हमारी एक सहेली हमसे बिछड़ गई। सिर्फ हम दो फ्रेंड ही बचीं। हम तीनों एक ही क्लास में थे लेकिन एक-दूसरे से बातें ही नहीं करते थे। लेकिन एक दिन हमारी क्लास कॉम्पीटिशन के लिए गए और वहीं से हमारी मित्रता थोड़ी-थोड़ी शुरू होने लगी और हम फिर से बातें करने लगे। और हमारे मन में कोई गुस्सा या क्रोध न था। हम तीनों फिर से एक साथ हो गए।

- हेमलता साहू, ग्यारहवीं, भोपाल



✍ पिंकी गजपाल, 5वीं, दुर्ग, छत्तीसगढ़

भूखा शेर

एक दिन एक शेर बहुत भूखा था। रास्ते में उसको एक हिरन मिला। उसने हिरन को एक झपटे में खा लिया। और बहुत सारे हिरनों ने देखा कि एक हिरन मर गया है तो वे सब उस शेर को पकड़कर खा लिए थे। अब शेर भी मर गया।

- नाम पता नहीं लिखा

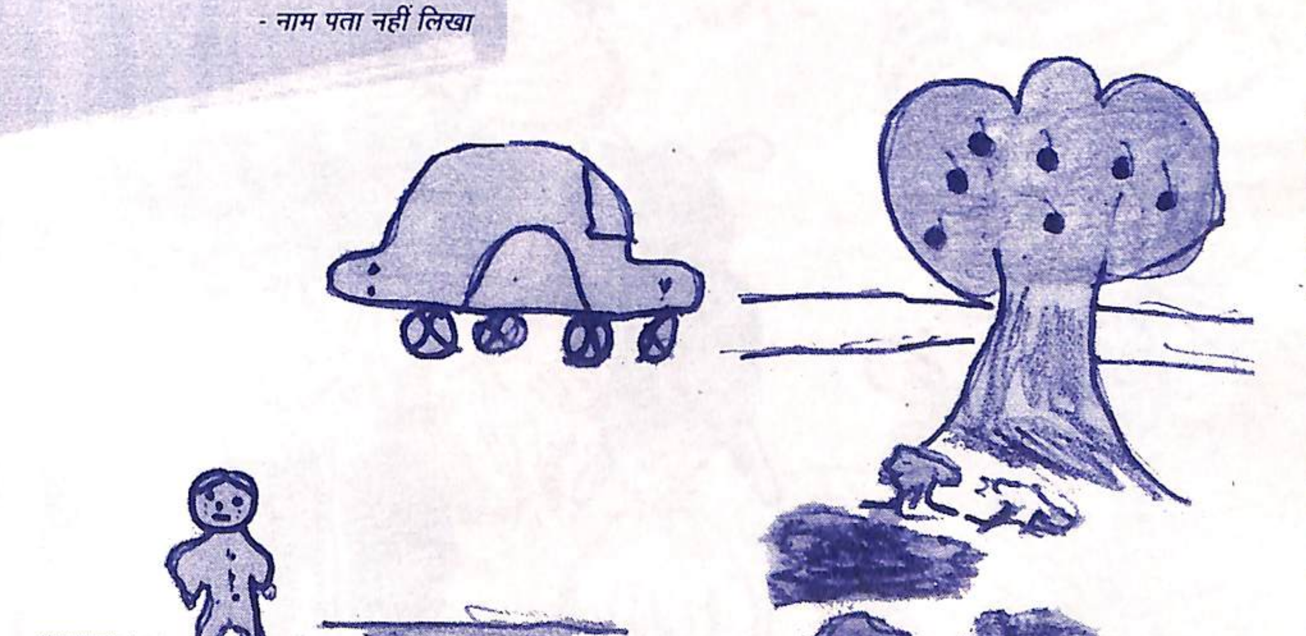
जैसा को तैसा

एक नग था और एक ठग था। नग को तलवार लाना था तो नग ने सोचा की पीपा के नीचे आधा गोबर भर लूँ और ऊपर घी भर लूँ। और ठग ने सोचा मुझे घी लाना है तो क्या करूँ। ठग ने एक लकड़ी की तलवार बनाई और ऊपर से सोने का पालिश कर दिया।

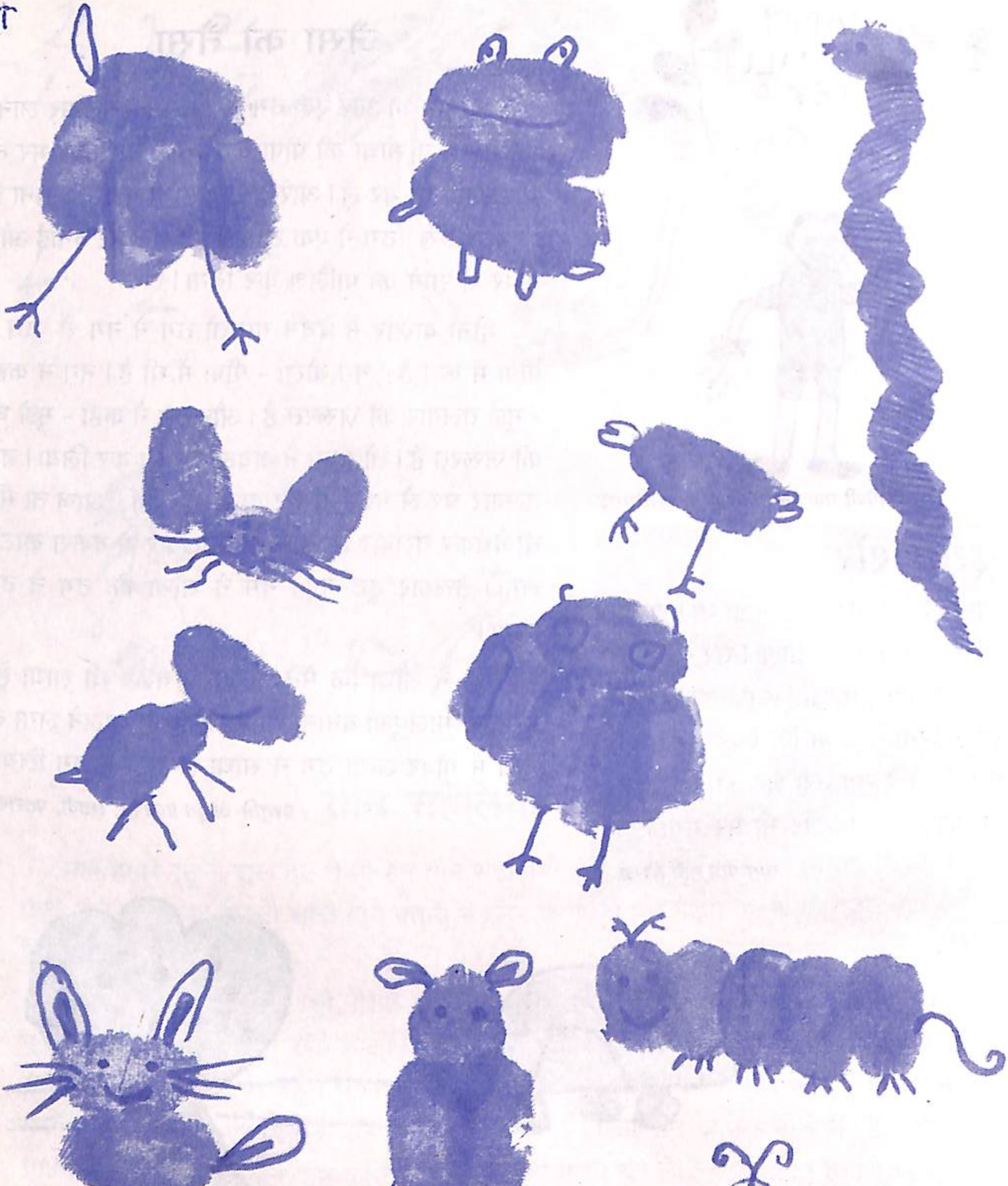
दोनों बाज़ार में बेचने गए तो ठग ने नग से पूछा - पीपा में क्या है? नग बोला - पीपा में घी है। नग ने कहा - मुझे तलवार की ज़रूरत है। और ठग ने कहा - मुझे घी की ज़रूरत है। तो दोनों ने अदला-बदला कर लिया। नग तलवार घर ले गए। तो घर वालों से कहा - आज तो मैंने घी बेचकर तलवार लाया हूँ। तो तलवार से बकरा काटने लगा। तलवार टूट गई। नग ने सोचा कि ठग ने ठग लिया।

ठग ने सोचा कि मैंने तलवार बेचकर घी लाया हूँ। इसलिए मालपुआ बनाना चाहिए। तो घी डालने लगा तो हाथ में गोबर आया ठग ने सोचा कि नग ने ठग लिया।

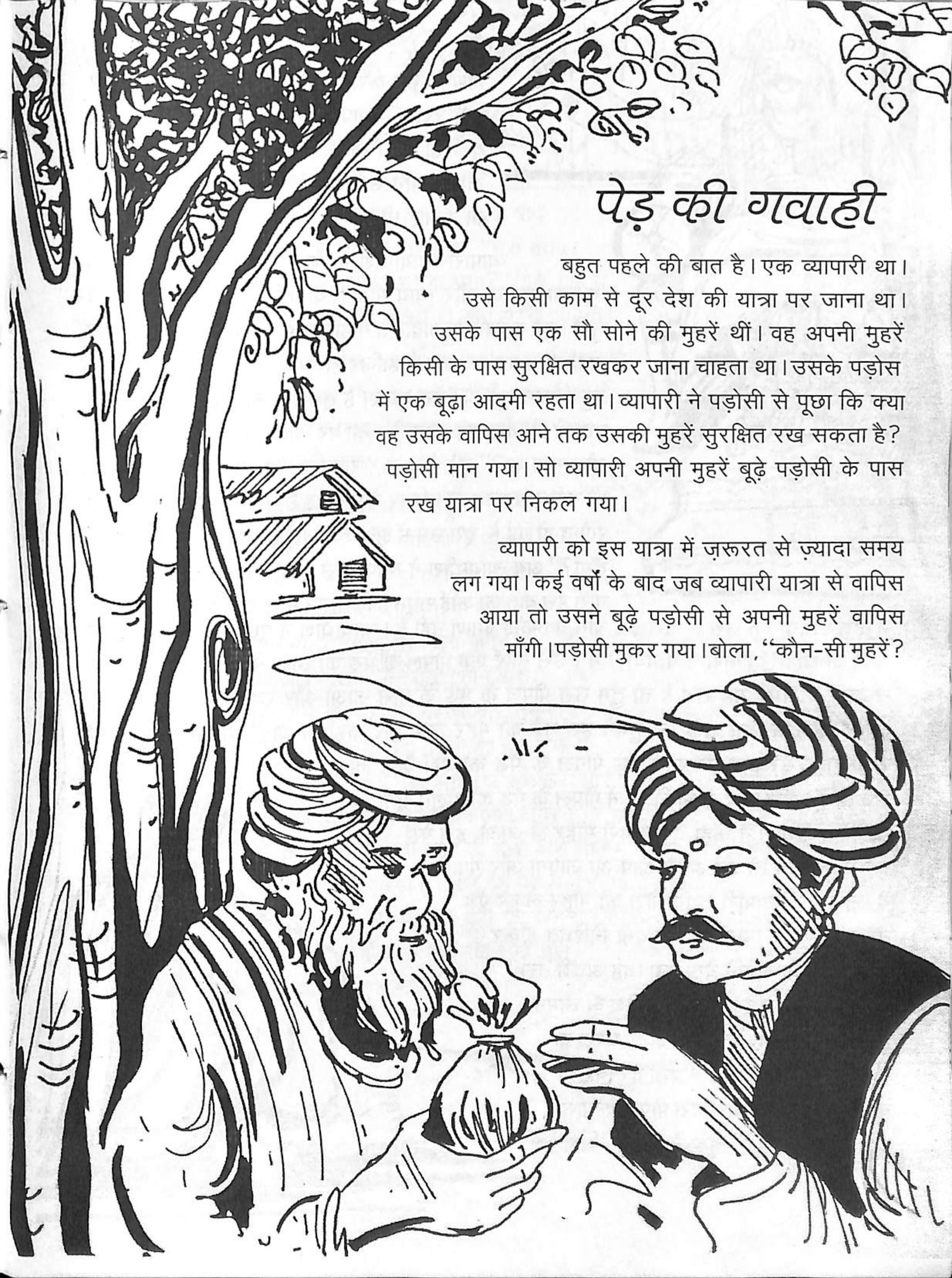
- प्रस्तुति- अर्जुन प्रजापत, छठवीं, पटरानी,



✍ रंजना दर्वे, सातवीं, भोपाल, म.प्र.



रुचिका मालवीय, आकांक्षा जैन, सातवीं, भोपाल, म.प्र.



पेड़ की गवाही

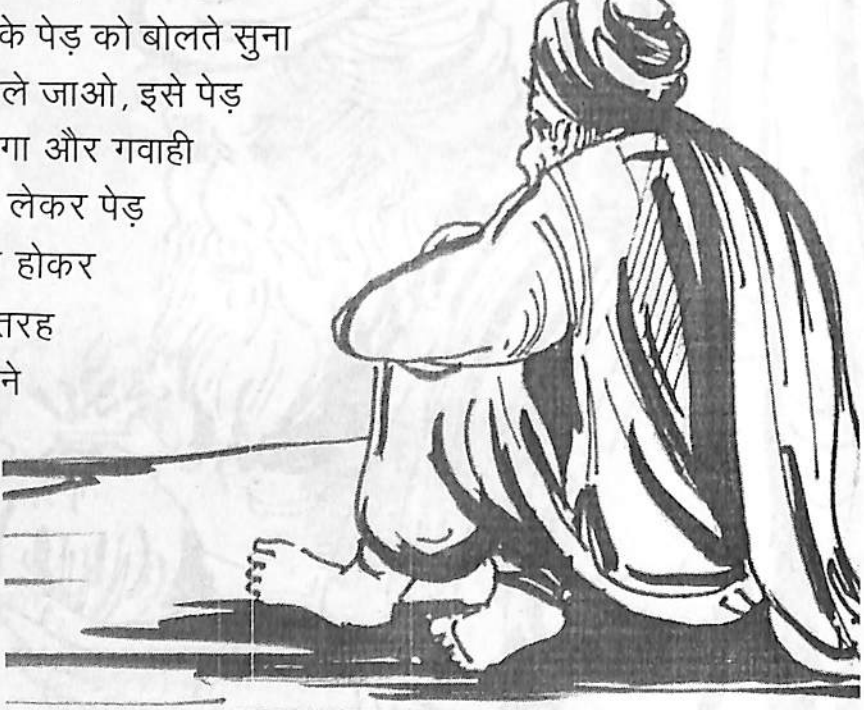
बहुत पहले की बात है। एक व्यापारी था। उसे किसी काम से दूर देश की यात्रा पर जाना था। उसके पास एक सौ सोने की मुहरें थीं। वह अपनी मुहरें किसी के पास सुरक्षित रखकर जाना चाहता था। उसके पड़ोस में एक बूढ़ा आदमी रहता था। व्यापारी ने पड़ोसी से पूछा कि क्या वह उसके वापिस आने तक उसकी मुहरें सुरक्षित रख सकता है? पड़ोसी मान गया। सो व्यापारी अपनी मुहरें बूढ़े पड़ोसी के पास रख यात्रा पर निकल गया।

व्यापारी को इस यात्रा में ज़रूरत से ज़्यादा समय लग गया। कई वर्षों के बाद जब व्यापारी यात्रा से वापिस आया तो उसने बूढ़े पड़ोसी से अपनी मुहरें वापिस माँगी। पड़ोसी मुकर गया। बोला, "कौन-सी मुहरें?



होश में बात करो! तुमने मेरे पास कोई मुहर-वुहर नहीं रखी।'' व्यापारी बूढ़े की बात सुनकर बहुत दुखी हो गया। व्यापारी ने अपने मित्रों से इसकी चर्चा की। उन्होंने उसे वहाँ के न्यायाधीश के पास जाने की सलाह दी।

व्यापारी न्यायाधीश के पास गया। उन्हें अपना सारा दुखड़ा सुनाया और न्याय माँगा। न्यायाधीश ने व्यापारी की बातें सुनीं। बूढ़े पड़ोसी को अदालत में हाज़िर होने का आदेश दिया। बूढ़ा ठीक वक्त पर अदालत में हाज़िर हो गया। तब न्यायाधीश ने कहा, ''तुम इतने बूढ़े हो। मेरा ख्याल है तुम झूठ नहीं बोल सकते। अब बताओ कि क्या यह व्यापारी यात्रा पर जाते वक्त तुम्हारे पास मुहरें छोड़ गया था?'' बूढ़े ने कहा, ''सरकार यह आदमी मेरे पास कुछ भी नहीं रखकर गया। ईश्वर मेरा गवाह है। मैं बूढ़ा हो गया हूँ, दाढ़ी सफेद हो गई है, इस उम्र में झूठ क्यों बोलूँगा। किसी को धोखा क्यों दूँगा?'' अब न्यायाधीश ने व्यापारी से पूछा, ''क्यों भाई अब तुम्हारे पास इस बात का कोई सबूत है कि तुमने मुहरें इसे दी थीं?'' व्यापारी ने उत्तर दिया कि उसके पास इस बात का कोई प्रमाण नहीं है। न्यायाधीश ने पूछा, ''तुमने उसे मुहरें कहाँ दी थीं।'' व्यापारी ने बताया, ''मैंने उसे मुहरें एक पीपल के पेड़ की छाया में दी थीं।'' न्यायाधीश ने कहा, ''अगर यह सच है तो तुम उस पीपल के पेड़ के पास जाओ और उसे मेरे पास ले आओ ताकि वह मुझे बता सके कि तुमने इस बूढ़े को मुहरें कब और कहाँ दी थीं।'' व्यापारी ने आश्चर्य से कहा, ''सरकार, मैं इतने बड़े पीपल के पेड़ को यहाँ कैसे ला सकता हूँ। और फिर कभी किसी ने पीपल के पेड़ को बोलते सुना है?'' न्यायाधीश ने कहा, ''तुम मेरी मोहर ले जाओ, इसे पेड़ को दिखाओगे तो वह अपने आप आ जाएगा और गवाही दे जाएगा।'' व्यापारी न्यायाधीश की मोहर लेकर पेड़ को लाने चला गया। बूढ़ा आदमी निश्चिंत होकर न्यायाधीश के सामने बैठा रहा। वह अच्छी तरह जानता था कि पेड़ कभी न्यायाधीश के सामने नहीं आ सकता। लगभग आधे घण्टे के बाद न्यायाधीश ने पूछा, ''बड़ी देर हो गई! क्या ख्याल है, व्यापारी उस पीपल के पास पहुँच गया होगा?'' बूढ़े ने कहा, ''नहीं



अभी नहीं।" थोड़ी देर बाद न्यायाधीश ने फिर पूछा, "क्या अब वह वहाँ पहुँच गया होगा?" बूढ़े ने विश्वास के साथ कहा, "हाँ अब तक तो उसे वहाँ पहुँच जाना चाहिए।" लगभग एक घण्टे के बाद न्यायाधीश ने बूढ़े आदमी से तीसरी बार पूछा, "मेरा ख्याल है, इस वक्त व्यापारी वहाँ से वापिस आ रहा होगा?" बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया, "जी हाँ, अब वह जल्दी ही यहाँ पहुँच जाएगा।"

थोड़ी देर बाद व्यापारी अकेला वापिस आ गया। न्यायाधीश को मोहर लौटाते हुए उसने कहा, "मैंने पेड़ को आपकी मोहर दिखाई पर वह तो हिला तक नहीं। उसको उखाड़ कर यहाँ तक लाने के लिए मुझे कई बैलों की जरूरत पड़ेगी।"

"पेड़ तो यहाँ आया था और गवाही देकर बहुत पहले चला भी गया।" न्यायाघीश बोला। बूढ़ा आदमी चिल्लाया, "क्या गज़ब करते हैं सरकार? पेड़ यहाँ पर कब आया? और पेड़ यहाँ आया होता तो मैंने भी उसे देखा होता। मैं तो जब से यहीं पर बैठा हूँ।" न्यायाधीश मुस्कराया और बोला, "मैंने तुमसे तीन बार पूछा था कि व्यापारी अब कहाँ होगा। पहली बार तुमने जवाब दिया कि व्यापारी अभी तक नहीं पहुँचा है। दूसरी बार कहा कि अब वह पेड़ के पास पहुँच गया होगा। और तीसरी बार तुमने उत्तर दिया कि अब वह वापस आ रहा होगा। अगर तुम्हें उस पेड़ के नीचे व्यापारी से धन नहीं मिला होता तो तुम्हें कैसे मालूम होता कि मैं कौन से पीपल की बात कर रहा हूँ। और वह पेड़ यहाँ से कितनी दूर है। लेकिन तुमने हर बार यहाँ से पेड़ की दूरी का अनुमान ठीक लगाया। इसलिए इसमें अब कोई शक नहीं कि तुम्हें इस व्यापारी से सोने की मुहरें प्राप्त हुई थीं।"



सभी चित्र : अशोक चंचल

गली-गली के खेल



मूर्ति

सारे खिलाड़ी एक बड़ा-सा गोला बना लेते हैं। इस गोले में बच्चे घूमते रहते हैं। और गोले के बीच में एक खिलाड़ी खड़ा रहता है। गोले के बीच में कौन रहेगा यह तय करने के कई तरीके तुम जानते ही हो। गोले के बीच खड़ा यह खिलाड़ी ताली बजाएगा। कभी वह ताली धीरे-धीरे बजाएगा तो कभी अचानक तेज बजा देगा। तो कभी ताली की आवाज़ धीरे-धीरे बढ़ती जाएगी। उसकी ताली की आवाज़ के उतार-चढ़ावों के हिसाब से गोले के लोग चलेंगे। जैसे अगर ताली धीमे बज रही है तो गोले के खिलाड़ी गोले में धीरे-धीरे चल रहे होंगे। पर जैसे ही ताली तेज़ बजेगी गोले के खिलाड़ियों की रफ़्तार बढ़ जाएगी। इसी बीच गोले में खड़ा खिलाड़ी 'मूर्ति' बोल देगा।

अब सभी खिलाड़ी बिना हिले- डुले जैसे हैं वैसे ही खड़े हो जाएँगे। जो मूर्ति बनने के बावजूद हिल जाएगा। वो आऊट हो जाएगा। अगर कोई भी आऊट नहीं हुआ तो गोले के बीच वाला खिलाड़ी विभिन्न मुद्राएँ बनाकर गोले के खिलाड़ियों को हँसाने की कोशिश करेगा। ताकि कोई हिले और आऊट हो जाए। इस तरह खेल तब तक चलता रहेगाा, जब तक सभी खिलाड़ी आऊट नहीं हो जाते। और हाँ जो खिलाड़ी आखिर तक आऊट नहीं होगा उसे अगली बार गोले के बीच में खड़ा होने को मिलेगा।



पोशम पा भई पोशम पा



पहले पूरी टोली में से दो बच्चे चुने जाएँगे। इन बच्चों को चुनने के लिए तुम किसी भी तरीके का इस्तेमाल कर सकते हो। चाहो तो अक्कड़-बक्कड़ से या फिर पीठ के पीछे नम्बर वाला खेल करके। चुने हुए ये दो बच्चे हाथ पकड़कर एक द्वार बनाएँगे। बाकी के सभी बच्चे एक लाइन बनाकर एक के बाद एक इस द्वार से गुज़रते जाएँगे। हाँ जिन दो बच्चों ने द्वार बनाया है वो ये गाना गाते जाएँगे -

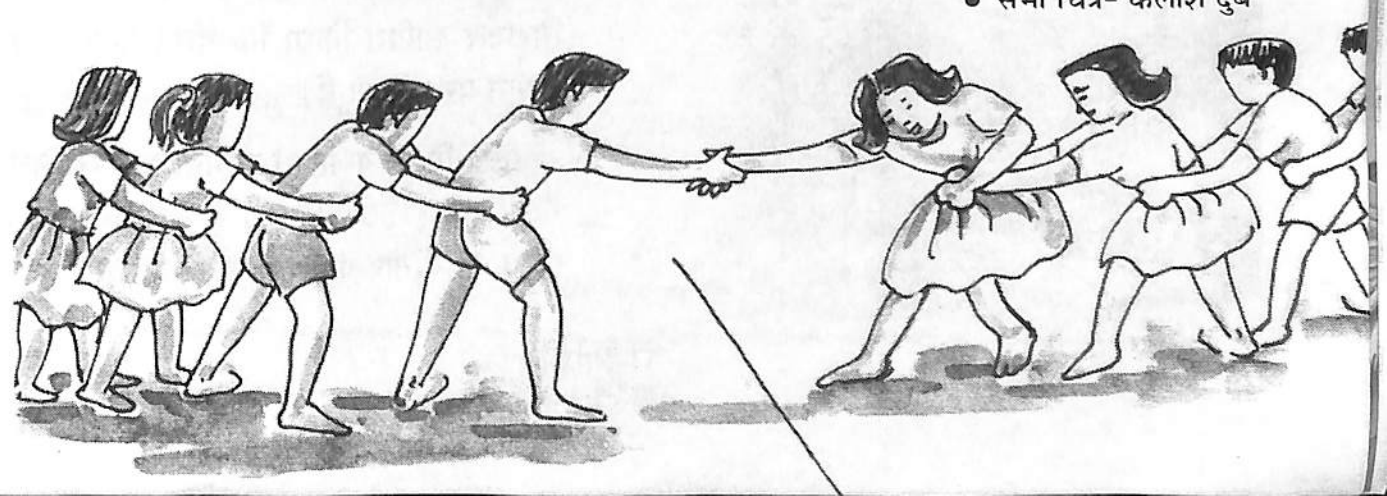
पोशम पा भई पोशम पा
डाकियों ने क्या किया
सौ रुपए की घड़ी चुराई
तब तो जेल में जाना पड़ेगा
जेल की रोटी खाना पड़ेगा

डाक डाक डाक करते हुए जो बच्चों के हाथों से बने द्वार से निकल रहा होता है उसे हाथ नीचा कर फँसा लेते हैं। फिर इसी बच्चे को अलग ले जाकर उसे कोई दो नम्बर बताएँगे। ये दो नम्बर द्वार बनाकर खड़े उन दो बच्चे के नम्बर होते हैं। यह खिलाड़ी जो नम्बर चुनेगा। उसी नम्बर वाले बच्चे के पीछे उसकी कमर पकड़ कर खड़ा हो जाएगा। अब यह खिलाड़ी भी बाकी दो खिलाड़ियों के साथ पोशम पा भाई पोशम पा गाएगा। खेल यूँ ही आगे बढ़ता रहेगा। जब सब बच्चे दो पालों में बँट जाएँगे, तब इन दो टीमों में खींचातानी होगी। होगा यह कि इन दोनों टीमों के खिलाड़ी एक-दूसरे की कमर पकड़कर एक लाइन के आरपार खड़े होंगे। एक टीम का लीडर दूसरी टीम के लीडर का हाथ पकड़कर खींचेगा। और लीडर को पकड़े बाकी खिलाड़ी उसे लाइन के पार न जाने देने की कोशिश करेंगे।



हाँ, वही रस्साकसी की तरह। तुम इस खेल को कैसे खेलते हो? क्या यही गाना गाते हो या कोई और? क्या नियमों में भी कुछ फर्क हैं? हमें लिखना हम चकमक के मार्फत तुम्हारे और दोस्तों को बताएँगे।

- प्रस्तुति - वीणा भाटिया
- सभी चित्र- कैलाश दुबे

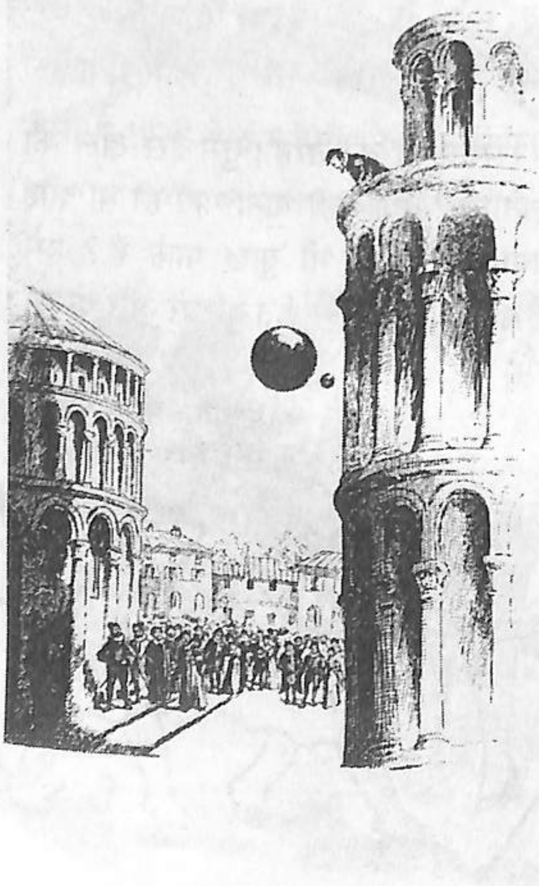


पीसा की मीनार से पत्थर किसने गिराए?



एक बेहद प्रचलित कहानी है। एक बार गैलीलियो पीसा की मीनार पर चढ़े। और दो अलग-अलग वज़न के पत्थर वहाँ से नीचे गिरा दिए। शायद तुम्हें मालूम हो कि पीसा की यह प्रसिद्ध मीनार बनने के थोड़े दिनों बाद ही एक ओर से कुछ झुक गई थी। खैर, यह तो कहानी है। क्या पता गैलीलियो ने ऐसा किया भी था या नहीं। पर इतना तो है कि इस वैज्ञानिक ने कई चीज़ों की खोज की। कई प्रयोग किए। इन प्रयोगों के आधार पर बहुत से नियम बने। इस बार हम उनके एक प्रयोग के बारे में बता रहे हैं।

बात सैकड़ों साल पुरानी है। तब दार्शनिक अरस्तू के विचारों का यूरोप के समाज पर बहुत प्रभाव था। अरस्तू का कहना था कि वस्तु जितनी भारी होगी, उतनी ही तेज़ी से गिरेगी। सरसरी तौर पर यह सही भी लगता था। चीज़ें गिरती हैं क्योंकि पृथ्वी उन्हें खींचती है। अरस्तु का मत था कि पृथ्वी भारी चीज़ को ज़्यादा ज़ोर से खींचती होगी, इसीलिए तो वह ज़्यादा भारी है।



लोगों को भी यही लगता था। उनके अनुभव भी अरस्तू की बातों से मेल खाते थे। पँख या पत्ती तो धीरे-धीरे ही गिरते हैं जबकि पत्थर सपाटे से गिर जाते हैं। तुम्हें क्या लगता है?

कहते हैं असल में एक वैज्ञानिक साइमन स्टीवन ने 1586 में एक प्रयोग किया। उसने काफी अलग-अलग वज़न के पत्थरों को एक ही ऊँचाई से गिराकर साबित किया कि दोनों पत्थर एक साथ ज़मीन पर पहुँचते हैं।

मगर किसी वजह से कहानी यह प्रचलित है कि गैलीलियो (1564-1642) ने यह प्रयोग 1589 में पीसा की मीनार पर चढ़कर किया था।

हो सकता है कि दोनों कहानियाँ सच हों या दोनों ही गलत हों। या इनमें से कोई एक सच हो। मगर एक बात तय है - इस नाटकीय प्रयोग ने अरस्तू के गति सम्बंधी विचारों पर सवाल उठाए।

अलबत्ता, गैलीलियो ने गिरती हुई चीज़ों को लेकर कई व्यवस्थित प्रयोग किए। उन्होंने पाया कि चीज़ें इतनी तेज़ी से गिरती हैं कि उनका अवलोकन कर पाना मुश्किल होता है। और तेज़ी के कारण उनकी गति आदि का मापन कर पाना भी असम्भव होता है। इसीलिए उन्होंने अलग-अलग तरह की ढलानों पर से गेंदों को लुढ़काकर प्रयोग किए। ढलान जितनी कम होती थी, गेंद उतनी ही धीमी गति से लुढ़कती। इन प्रयोगों की मदद से उन्होंने यह पता किया कि लुढ़कती हुई गेंदों की गति एक निश्चित दर से बढ़ती है। यानी उनकी गति लुढ़कते हुए कम या ज़्यादा नहीं होती।

इन प्रयोगों के आधार पर एक और महत्वपूर्ण बात का फैसला हुआ। अरस्तू का यह भी विचार था कि किसी वस्तु को गतिशील रखने के लिए उस पर लगातार बल लगाना पड़ता है। गैलीलियो ने अपने प्रयोगों से दिखाया कि किसी गिरती या लुढ़कती चीज़ पर कुछ रगड़ या घर्षण न हो, तो वह लगातार लुढ़कती जाएगी। जैसे अगर तुम एक गेंद ऊबड़-खाबड़ मैदान पर लुढ़काओ और दूसरी चिकनी जगह पर तो कौन-सी गेंद ज़्यादा दूर जाएगी? चिकनी जगह पर गेंद को ज़मीन से कम रगड़ मिलेगी। और वह दूर जाकर रुकेगी। यही बात गैलीलियो ने अपने प्रयोगों से साबित की थी। यानी अगर गेंद को किसी ऐसी ज़मीन पर लुढ़काएँ जहाँ ज़मीन से बिलकुल रगड़ न मिले तो गेंद चलती ही जाएगी। यानी किसी गतिशील वस्तु को चलाए रखने के लिए कोई बल नहीं लगाना पड़ेगा। क्योंकि यदि बल लगाएँगे तो उसकी गति बढ़ती जाएगी। जैसा लुढ़कती गेंदों के मामले में होता है।

ये प्रयोग गैलीलियो ने उस समय किए थे जब समय नापने का कोई आसान तरीका न था। अपनी नाड़ी गिनकर या किसी छोटे सुराख में से टपकती बूँदों को गिनकर ही समय नापना पड़ता था। गैलीलियो के इन प्रयोगों ने विज्ञान का आगे का रास्ता आसान किया। विज्ञान के इतिहास में इन प्रयोगों का बड़ा महत्व है।

इन प्रयोगों से गैलीलियो ने यह भी स्पष्ट किया कि वैज्ञानिक निष्कर्षों का आधार प्रयोग, अवलोकन व मापन ही हो सकता है। इसलिए गैलीलियो को प्रायोगिक विज्ञान का संस्थापक माना जाता है हालाँकि प्रयोग तो लोग पहले भी हुआ करते थे।


नताशा
— देवांशु वत्स
बेटी, भूखा हूँ
कुछ खिलाओ..
तुम्हारे पड़ोसी अंकल ने भर पेट भोजन कराया...
फिर तुम्हारे बाजू वाली आंटी ने कई तरह की मिठाइयाँ खिलाईं....
...तुम क्या खिलाओगी ?
एक मिनट
ये लो हाजमे की गोलियाँ !

रंग बदलती पत्तियाँ

जानवरों को देखो तो कितने ही रंग दिख जाएँगे। सफेद बालों वाला भालू, नारंगी-भूरे बालों वाला जिराफ, रंग-बिरंगे पक्षी...। पर पत्तियों को देखो तो ज़्यादातर एक ही रंग दिखेगा - हरा। देखें कौन है जो इन्हें यह सब्ज़ रंग दे जाता है।



पत्तियों के अन्दर सैकड़ों छोटी-छोटी थैलियाँ (कोशिकाएँ) होती हैं। इनमें हरे रंग की एक ज़बरदस्त चीज़ होती है - क्लोरोफिल।

पत्ती से होकर सूरज की रोशनी अन्दर पहुँचती है। हवा छोटे-छोटे छेदों से आती है। पानी जड़ से आता है। क्लोरोफिल यहाँ सूरज से ऊर्जा लेकर भोजन बनाता है। गर्मियों भर पत्ती की फैक्टरी में यही काम चलता रहता है।





पत्तियों में क्लोरोफिल के अलावा पीले और नारंगी रंग के पदार्थ भी होते हैं। लेकिन गर्मियों भर क्लोरोफिल की बहुतायत के कारण हरा रंग ही छाया रहता है।

पत्तियों में पानी छोटी-छोटी नलिकाओं से आता है। गर्मियों के खत्म होने पर ये नलियाँ बन्द हो जाती हैं। पानी की सप्लाई बन्द होने से पहले पेड़ क्लोरोफिल को पचा जाता है। इसलिए पीला और नारंगी रंग दिखने लगता है। गर्मियों में पत्तियों द्वारा बनाया गया खाना नलियों से पौधों के दूसरे हिस्सों तक जाता है। पर कभी-कभी यह नलियों में फँस जाता है। और उनका रंग लाल-जामुनी हो जाता है।

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05



स्तुति वर्मा, आठवीं, जबलपुर, म.प्र.

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना